3:2

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

दुग्धं वहति। पुष्पाणि शोभन्ते। जलं वर्त्तते। स्वर्णं राजते। गृहं ज्वलति। पत्राणि पतन्ति। सुखानि जायन्ते। दुःखं भवति। कमलानि स्फुटन्ति। रजतं द्योतते। द्रव्याणि भान्ति।

३. शुद्ध करो—

पुष्पानि स्फुटन्ति। फलाणि पचन्ति। पत्राः पतन्ति। जला वहन्ति। दुःखः भवति। स्वर्णः द्योतति।

४. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति करो—

पत्रं.........। पत्रे......। पत्राणि.........। जलं......। सुखानि.........। पुस्तके.........। ....जायन्ते। ....स्फुटतः। ....द्योतते। ....भान्ति।

——

चौथा पाठ

सर्वनाम

हिन्दी में तीन पुरुष होते हैं, १--उत्तम पुरुष, २--मध्यम पुरुष और ३--अन्य पुरुष। कर्त्ता जिस पुरुष में होता है, क्रिया भी उसी पुरुष के अनुसार होती है। जैसे,

मैं जाता हूँ। तुम जाते हो। वह जाता है।

संस्कृत में भी ठीक यही बात है। तीनों पुरुषों के लिये क्रिया के अलग-अलग रूप होते हैं। कर्त्ता जिस पुरुष में होता है, क्रिया भी उसी पुरुष की लगा दी जाती है।

अभी तक क्रिया के जो रूप दिखाये गये हैं, वे अन्य पुरुष (प्रथम पुरुष) के हैं, क्योंकि संज्ञाएँ जितनी हैं वे सभी अन्य पुरुष होती हैं और उनके साथ क्रिया भी अन्य पुरुष की लगती है।

पुरुष का विचार सर्वनाम में ही होता है। सर्वनामों में भी सिर्फ 'मैं और हम' उत्तम पुरुष हैं, और 'तू और तुम' मध्यम पुरुष; बाकी सब अन्य पुरुष।

इस पाठ में भिन्न-भिन्न सर्वनामों के साथ वाक्य बनाना सिखलाया जायगा।

प्रथम पुरुष

हिन्दी में प्रथम पुरुष के लिये दो मुख्य शब्द हैं—
१ वह (एक वचन में) २ वे (बहुवचन)।
जैसे, वह जाता है। वे जाते हैं।

संस्कृत में तीन वचन हैं। इसलिये तीनों वचनों के लिये तीन शब्द आते हैं—

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)

जैसे—

सः गच्छति = वह जाता है।

तौ गच्छतः = वे दोनों जाते हैं।

ते गच्छन्ति = वे सब जाते हैं।

एक बात और। हिन्दी में यह नियम है कि दोनों लिङ्गों में सर्वनाम का रूप एकसा ही रहता है।

'वह' पढ़ता है। 'वह' पढ़ती है।
'वे' पढ़ते हैं। 'वे' पढ़ती हैं।

परन्तु संस्कृत में यह बात लागू नहीं होती। उसमें प्रत्येक लिंग के अनुसार सर्वनाम के अलग-अलग रूप होते हैं। निम्नलिखित कोष्ठक से यह बात मालूम हो जायगी—

सर्वनाम के प्रथम पुरुष

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुं.	सः = वह (पुरुष) He	तौ = वे दोनों (पुरुष)	ते = वे सब
स्त्री.	सा = वह (स्त्री) She	ते = वे दोनों स्त्रियाँ	ताः = वे सब (स्त्रियाँ)
न	तत् = वह वस्तु It	ते = वे दोनों वस्तुएं	तानि = वे सब (वस्तुएँ)

मध्यम पुरुष

मध्यम पुरुष के लिये संस्कृत में ये तीनों शब्द आते हैं—

एकवचन	द्विबचन	बहुबचन
त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)

मध्यम पुरुष में सब लिंगों के लिये अलग-अलग रूप नहीं होते हैं। हिन्दी की तरह, स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों में एक ही रूप प्रयुक्त होता है। जैसे—

'तुम' जाते हो }
'तुम' जाती हो } 'त्वं' गच्छसि

हिन्दी में तो क्रिया के लिंग से जाना जा सकता है कि मध्यम पुरुष का कर्त्ता स्त्रीलिंग है या पुल्लिंग; परन्तु संस्कृत की क्रिया तो स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों में एक सी ही रहती है। अतएव यह नहीं समझा जा सकता कि 'त्वम्' (तुम) स्त्री के लिये आया है अथवा पुरुष के लिये। हाँ, प्रसङ्ग के अनुसार यह बात मालूम हो जाती है कि 'तुम' स्त्रीलिंग है या पुल्लिङ्ग। जहाँ यह बात मालूम न हो सके वहाँ पुल्लिङ्ग का अर्थ लेना ही उचित है।

'मध्यम पुरुष के साथ क्रिया कैसे लगाई जायगी,' यह बात नीचे बतलाई जाती है। नियमों को भली भांति समझकर स्मरण रखना चाहिये।

(१) यदि कर्ता 'त्वम्' रहे तो,

पूर्वोक्त परस्मैपदी धातुओं में 'सि' लगाकर, और आत्मनेपदी धातुओं में 'से' लगाकर क्रिया बनाई जाती है।

(२) यदि कर्त्ता 'युवाम्' रहे तो,

पूर्वोक्त परस्मैपदी धातुओं में 'थः' लगाकर और आत्मनेपदी धातुओं में 'एथे,' लगाकर क्रिया बनाई जाती है।

(३) यदि कर्त्ता 'यूयम्' रहे तो,

पूर्वोक्त परस्मैपदी धातुओं में 'थ' लगाकर और आत्मनेपदी धातुओं में 'ध्वे' लगाकर क्रिया बनाई जाती है।

उदाहरण—

१ त्वं वदसि = तुम बोलते हो।
२ युवां वदथः = तुम दोनों बोलते हो।
३ यूयं वदथ = तुम सब बोलते हो।
४ त्वं भाषसे = तुम बोलते हो।
५ युवां भाषेथे = तुम दोनों बोलते हो।
६ यूयं भाषध्वे = तुम सब बोलते हो।

नोट—हिन्दी में 'आप' के साथ जैसे अन्य पुरुष को क्रिया आती है, संस्कृत में उसी तरह 'भवान' के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया आती है। बहुवचन में 'भवन्तः' रूप हो जाता है. और द्विवचन में 'भवन्तौ'।

उदाहरण—

भवान् गच्छति = आप जाते हैं।
भवन्तौ गच्छतः = आप दोनों जाते हैं।
भवन्तः गच्छन्ति = आप सब लोग जाते हैं।

उत्तम पुरुष

उत्तम पुरुष में भी हिन्दी की तरह, स्त्रीलिंग और पुल्लिङ्ग दोनों में एक ही समान रूप रहता है।

तीनों वचनों के लिये ये तीनों शब्द प्रयुक्त होते हैं—

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

स्त्री भी अपने लिये 'अहम्' का प्रयोग कर सकती है और पुरुष भी अपने लिये 'अहम्' का प्रयोग कर सकता है। प्रसङ्ग के अनुसार यह समझा जा सकता है कि बोलनेवाला पुरुष है या स्त्री। जहाँ नहीं मालूम हो सके वहाँ पुल्लिंग में ही अनुवाद करना चाहिये।

'उत्तम पुरुष के साथ क्रिया कैसे लगाई जायगी,' यह समझने के लिये नीचे लिखी हुई बातों पर ध्यान देना चाहिये—

(१) यदि कर्त्ता 'अहम्' रहे तो,

पूर्वोक्त परस्मैपदी धातुओं के अन्त में 'आमि' और आत्मनेपदी धातुओं के अन्त में 'ए' लगाकर क्रिया बनाई जाती हैं। जैसे,

गच्छ+आमि=गच्छामि। शोभ+ए=शोभे

(२) यदि कर्त्ता 'आवाम्' रहे. तो,

पूर्वोक्त परस्मैपदी धातुओं के अन्त में 'आवः' और आत्मनेपदी धातुओं के अन्त में 'आवहे' लगाकर क्रिया बनाई जाती है। जैसे,

गच्छ+आवः=गच्छावः। शोभ+आवहे=शोभावहे।

यदि कर्त्ता 'वयम्' रहे, तो,

पूर्वोक्त परस्मैपदी धातुओं के अन्त में 'आमः' और आत्मनेपदी धातुओं के अन्त में 'आमहे' लगाकर क्रिया बनाई जाती है। जैसे, गच्छ+आमः=गच्छामः। शोभ+आमहे=शोभामहे।

उदाहरण—

अहं वदामि=मैं बोलता हूँ।

अहं भाषे=मैं बोलता हूँ।

आवां वदावः=हम दोनों बोलते हैं।

आवां भाषावहे=हम दोनों बोलते हैं।

वयंव दामः=हम सब बोलते हैं।

वयं भाषामहे=हम सब बोलते हैं।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

मैं जाता हूँ। मैं जाती हूँ। तुम पढ़ते हो। तुम लिखते हो। वह बोलता है। वह बोलती है। हम दोनों घूमते हैं। वे लोग दौड़ते हैं। तुम दोनों ठहरते हो। वह हँसती है। वह दोनों चलते हैं। मैं पीता हूँ। तुम लोग काँपते हो। वे सब खेलते हैं। वे सब रोती हैं। तुम लोग हँसती हो।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

अहं पठामि। ते वदन्ति। यूयं गच्छथ। ताः पश्यन्ति। वयं लिखामः। युवां धावथः। तौ हसतः। ते क्रीडतः। ते क्रीडन्ति।

३. इन दोनों के अर्थों में क्या भेद है?

(क) ते गच्छतः।

(ख) ते गच्छन्ति।

४. शुद्ध करो—

अहं गच्छति। ते पश्यति। वयं पठन्ति। त्वं पश्यथ। युवां गच्छामः। वयं गच्छावः। युवां धावध्वे।

५. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति करो—

......पठामि।......लिखसि।......पश्यन्ति।

......गच्छथः।......धावथ।......भाषे।

......शोभेथे।......कम्पन्ते।......भाषध्वे।

पाँचवाँ पाठ

कर्मपद

"राम 'किताब' पढ़ता है। मोहन 'मिठाई' खाता है" उपर्युक्त दोनों वाक्यों में 'किताब' और 'मिठाई' क्या हैं ?" कर्म। हिन्दी व्याकरण में विद्यार्थी पढ़ चुके हैं कि सकर्मक क्रिया के साथ कर्म (Object) रहता है, और अकर्मक क्रिया के साथ नहीं। जैसे—

अकर्मक	सकर्मक
वह हंसता है	वह किताब पढ़ता है।
वह रोती है	वह मिठाई खाती है।

संस्कृत में भी ठीक यही बात है।

अकर्मक	सकर्मक
सः हसति=वह हंसता है।	सः पुस्तकं पठति=वह किताब पढ़ता है।
सा क्रन्दति=वह रोती है।	सा मिष्टान्नं खादति=वह मिठाई खाती है।
त्वं धावसि=तुम दौड़ते हो।	त्वं गोपालं पश्यसि=तुम गोपालको देखते हो।
अहं तिष्ठामि=मैं ठहरता हूं।	अहं जलं पिवामि=मैं पानी पीता हूं।

कर्म बनाने के लिये यहाँ कुछ बहुत ही सुगम उपाय बतला दिये जाते हैं। इन्हें अच्छी तरह समझ लेने से 'कर्म' बनाना बात-की-बात में आ जायगा।

कर्म बनाने की रीति

अभी तक जितनी संज्ञाएँ बतलाई गई हैं, उनमें—(१) सभी संज्ञाओं के पीछे 'म्' लगा देने से एकवच्चन कर्म बन जाता है। जैसे—

	पु०	स्त्री०	न०
शब्द	बालक	बालिका	पुस्तक
कर्म	बालकम् (लड़के को)	बालिकाम् (लड़की को)	पुस्तकम् (किताब को)

(२) द्विवचन कर्म का वही रूप होता है, जो द्विवचन कर्त्ता का जैसे—

	पुं०	स्त्री०	न०
द्वि० कर्त्ता	बालकौ (दो लड़के)	बालिके (दो लड़कियाँ)	पुस्तके (दो किताबें)
द्वि० कर्म	बालकौ (दो लड़कों को)	बालिके (दोलड़कियों को)	पुस्तकें (दो किताबों को)

(३) बहुवचन कर्म बनाने के लिये—

(क) स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग में जो रूप बहुवचन कर्त्ता का होता है, वही रूप बहुवचन कर्म का भी।

(ख) पुल्लिंग में बहुवचन कर्त्ता के रूप में से विसर्गउड़ाकर उसकी जगह 'न्' जोड़ देना चाहिये।

	पुं०	स्त्री०	न०
बहुवचन कर्त्ता	बालकाः (लड़के)	बालिकाः (लड़कियाँ)	पुस्तकानि (किताबें)
बहुवचन कर्म	बालकान् (लड़कों को)	बालिकाः (लड़कियों को)	पुस्तकानि (किताबों को)

सर्वनामों से कर्म बनाना

सर्वनामों से कर्म बनाने में उपर्युक्त नियम लागू नहीं होते। अतएव इस विषय को अलग ही समझ लेना उचित है।

प्रथम पुरुष

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्त्ता	सः, सा, तत् (वह)	तौ, ते, ते (वे दोनों)	ते, ताः, तानि (वे)
कर्म	तम्, ताम्, तत् (उसको)	तौ, ते, ते (उन दोनों को)	तान्, ताः, तानि (उनको)

मध्यम पुरुष

	ए. व.	द्वि. व.	ब०. व०.
कर्त्ता	त्वम्=तुम भवान्=आप	युवाम्=तुम दोनों भवन्तौ=आप दोनों	यूयम्=तुम सब भवन्तः=आप लोग
कर्म	त्वाम्=तुमको भवन्तम्=आपको	युवाम्=तुम दोनों को भवन्तौ=आप दोनों को	युष्मान=तुम सबों को भवतः=आप सबों को

उत्तम पुरुष

	प. व.	द्वि व.	ब. व.
कर्त्ता	अहम्=मैं	आवाम्=हम दोनों	वयम्=हम सब
कर्म	माम्=मुझको	आवाम्=हम दोनों को	अस्मान्=हम सबों को

कुछ अकारान्त पुल्लिंग शब्द

कूप—कुआँ, a well.
तड़ाग—पोखर, a tank.
घट् कुम्भ—घड़ा, a pitcher.
ग्राम—गाँव, a village.
दास भृत्य—नौकर, a servant.
शिष्य—चेला, a pupil.
तण्डुल—चावल, rice.
सूद—रसोइया, a cook.

कुछ आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

सिता—चीनी, sugar.
सभा—सभा, meeting.
दूर्वा—दूब, grass.
मुद्रा—रुपया, rupee.
कविता—कविता, poetry.

कुछ अकारान्त नपुंसक लिंग शब्द

भक्त—भात, boiled. rice
द्विदल—दाल, pulse.
व्यञ्जन—तरकारी, vegetable.
लवण—नमक, salt.
घृत—घी, ghee.
काष्ठ—लकड़ी, wood.
पात्र—बर्त्तन, pot.
भूषण—गहना ornament.
अनृत—झूठ, a lie.
पत्र—चिट्ठी, a letter.

कुछ धातु

वन्द् (आ०)—प्रणाम करना, to salute.
रच् (प०) [रचय] बनाना, to make.
नी (उ०) [नय] ले जाना, to carry.
दण्ड् (प०) [दण्डय] सजा देना, to punish.
घ्रा (प०) [जिघ्र] सूँघना, to smell.
ताड् (प०) [ताडय] मारना, to beat.
धृ (प०) [धारय] धारण करना, to hold, to put on.
दा (प०) [यच्छ] देना, to give.

वाक्य-रचना

वह सत्य बोलता है=सः सत्यं वदति।
मैं चीनी खाता हूँ=अहं सितां खादामि।
तुम दूध पीते हो=त्वं दुग्धं पिबसि।
मोहन किताब पढ़ता है=मोहन पुस्तकं पठति।
घोड़ा घास खाता है=अश्वः दूर्वां चरति।
रसोइया भात पकाता है=सूदः भक्तं पचति।
वह नौकर को मारता है=सः भृत्यं ताडयति।
चेला घर जाता है=शिष्यः गृहं गच्छति।
लड़की गहना पहनती है=बालिका भूषणं धारयति।
वे दोनों तुम्हें प्रणाम करते हैं= तौ त्वां वन्देते।
हम लोग आम खाते हैं=वयं आम्राणि खादामः।
वे लोग कुआँ खोदते हैं=ते कूपं खनन्ति।
तुम लोग रुपया देते हो=यूयं मुद्रां यच्छथ।
आप को प्रणाम करता हूँ=भवन्तं वन्दे।
आप लोग गाँव जाते हैं=भवन्तः ग्रामं गच्छन्ति।
वे घड़े ले जाती हैं=ताः घटान् नयन्ति।

वे दोनों मालाएँ बनाती हैं=ते माले रचयतः।
वह तुम दोनों को मारती है=सा युवां ताडयति।
हम दोनों चिट्ठी लिखते हैं=आवां पत्रं लिखावः।
तुम हम लोगों को देखते हो=त्वं अस्मान् पश्यसि।
हमलोग दो किताबें पढ़ते हैं=वयं (द्वे) पुस्तके पठामः।
मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ=अहं त्वां वन्दे।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

नौकर चावल ले जाता है। वह तुम्हें प्रणाम करता है। वह आपको प्रणाम करता है। आप मुझे देखते हैं। तुम हम दोनों को देखते हो। वे लोग तालाब खोदते हैं। वे गहने पहनती हैं। तुम दोनों झूठ बोलते हो। मैं सच कहता हूँ। वह फूल सूंघती है। गोपाल किताब पढ़ता है। तुम चिट्ठी लिखते हो। वह भात खाता है। तुम लड़कों को मारते हो। वह बर्तन बनाती है। आप चिट्ठी लिखते हैं। हम दोनों आपको प्रणाम करते हैं।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

बालकः गृहं गच्छन्ति। अहं गोपालं पश्यामि। त्वम् अनृतं भाषसे। आवां सत्यं वदावः। यूयं लवणं खादथ। सः अस्मान् वन्दते। अहं युष्मान् ताडयामि। ते भवन्तं पश्यन्ति। ते आवां पश्यतः। वयं युवां पश्यामः। भवान् मां दण्डयति।

३. शुद्ध करो—

ते फलान् खादन्ति। अहं पुष्पान् जिघ्रामि। त्वं बालकाः पश्यसि। स भृत्यानि ताडयति। अश्वः दूर्वाणि चरन्ति। भवान् वयं वन्दसि।

४. रिक्त स्थानों को पूर्ति करो—

अहं.........लिखामि। त्वं..........खादसि। महिषः.........चरति। भवन्तः..........गच्छन्ति। युवां..................पश्यथः। आवां..................वदावः। तौ..................रचयतः। यूयं..................वन्दध्वे।

छठा पाठ

इकारान्त शब्द

अब तक संज्ञाओं से कर्त्ता और कर्म बनाने के लिये जो नियम बतलाये गये हैं, वे सिर्फ अकारान्त पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिंग तथा अकारान्त स्त्रीलिंग पर लागू होते हैं।

इस पाठ में इकारान्त संज्ञाओं से कर्त्ता और कर्म बनाने की रीति बतलाई जाती है।

इकारान पुल्लिङ्ग

मुनि—मुनि, a sage.
कवि—कवि, a poet.
अहि—साँप, a serpant.
अलि—भौंरा, a bee.
गिरि—पहाड़, a mountain.
पाणि—हाथ, a hand.
रवि—सूर्य, the sun.
पति—स्वामी, husband.
सखि—सखा, companion.
कपि—बन्दर, a monkey.
कृमि—कीड़ा, a worm.
हरि—विष्णु, god.
रश्मि—किरण, ray.
विधि—ब्रह्मा, creator.
ऋषि—ऋषि, sage.
यति—संन्यासी, a hermit.
फणि—फणि, hood of the serpent.
मणि—मणि, jewel.
असि—तलवार, sword.
मसि—रोशनाई, ink.

उपर्युक्त शब्दों से इस प्रकार कर्त्ता और कर्म बनाये जाते हैं—

(क) कर्त्ता

(१) एकवचन कर्त्ता बनाने के लिये अन्त में सिर्फ एक विसर्ग जोड़ दिया जाता है। जैसे, हरि से हरिः कवि से कविः इत्यादि।

(२) द्विवचन कर्त्ता बनाने के लिये अन्तिम इकार दीर्घ कर दिया जाता है । जैसे, कवि से कवी, मुनि से मुनी ।

(३) वहुवचन कर्त्ता बनाने के लिये अन्तिम इकार हटा कर 'अयः' जोड़ दिया जाता है। जैसे, मुनि से मुनयः, कवि से कवयः ।

(ख) कर्म

(१) एकवचन कर्म बनाने के लिये शब्द के अन्त में सिर्फ एक (म्) जोड़ दिया जाता है। जैसे, हरि से हरिम्, कवि से कविम् ।

(२) द्विवचन कर्म का वही रूप होता है जो द्विवचन कर्त्ता का । जैसे, मुनि-मुनी, पति-पती, कवि कवी ।

(३) वहुवचन कर्म बनाने के लिये द्विवचन वाले रूप के पीछे 'न्' जोड़ देना चाहिये । जैसे पति-पतीन्, कवि-कवीन्, मुनि-मुनीन् ।

अपवाद—'सखि' शब्द में उपर्युक्त नियम नहीं लगते । इस शब्द से कर्त्ता और कर्म यों बनते हैं –

	ए० व०	द्वि व०	ब० व०
कर्त्ता	सखा	सखायौ	सखायः
कर्म	सखायम्	सखायौ	सखीन्

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग

मति—बुद्धि, intellect.
गति—गति, motion.
शक्ति—बल, power.
जाति—जाति, caste.
भूमि—पृथ्वी, earth.
धूलि—धूल, dust.
बुद्धि—बुद्धि, intelligence.
प्रीति—स्नेह, love.
रात्रि—रात, night.
उन्नति—उन्नति, improvement.

अवनति—अवनति degra-dation.	दृष्टि—दृष्टि, sight.
	सृष्टि—सृष्टि, creation.
रुचि—रुचि, tendency	सम्पत्ति—सम्पति. prosperity.
प्रकृति—स्वाभाव, nature.	विपत्ति—विपत्ति, adversity.
नीति—नीति, morality.	आपत्ति—आपत्ति, objection.
स्मृति—याद, memory.	हानि—हानि, loss.
शान्ति—शान्ति, peace.	औषधि—दवा medicine.
वृष्टि—वर्षा, rain	कृषि—खेती, husbandry.

उपर्युक्त शब्दों से कर्त्ता और कर्म बनाने के लिये इन नियमों को याद रखना चाहिये—

(१) इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों से जैसे कर्त्ता बनाये जाते हैं इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों से भी वैसे ही बनाये जाते हैं। जैसे—

	ए० व०	द्वि०	ब० व०
पु०	मुनिः	मुनी	मुनयः
स्त्री०	मतिः	मती	मतयः

(२) इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के जो रूप कर्म कारक में होते हैं, इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के भी वे ही रूप हुआ करते हैं। केवल कर्म के बहुवचन में जहां पुल्लिङ्ग शब्दों में 'न्' लगता है, वहाँ स्त्रीलिङ्ग में विसर्ग कर देना चाहिये। जैसे—

	ए० व०	द्वि०	ब० व०
पु०	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
स्त्री०	मतिम्	मती	मतीः

नपुंसकलिंग इकारान्त

दधि—दही curd. *वारि—जल, water.
अस्थि—हड्डी, bone. *अक्षि—आँख, eye.

इन शब्दों के जो रूप कर्त्ता में होते हैं, वही कर्म में भी। जैसे-

	ए० व०	द्वि व०	ब० व०
कर्त्ता	दधि	दधिनी	दधीनि
कर्म	दधि	दधिनी	दधीनि

नोट—चिह्नाङ्कित शब्दों के रूप में 'न' के स्थान पर 'ण' होता है। जैसे—

वारि	वारिणी	वारीणि
अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि

धातु-कोष

भज् (आ०)—भजन करना, to pray.
क्षल् (प०) क्षालय् धोना, to wash.
मुद् (आ०) (मोद्) खुश होना, to rejoice.
रभ् (आ०) शुरू करना, to begin.
लभ् (आ०) पाना, to get.
त्यज् (प०) छोड़ना, to abandon.

वाक्य-रचना

कवयः कवितां रचयन्ति=कवि लोग कविता बनाते हैं।
मुनयः हरिं भजन्ते=मुनि लोग हरि का भजन करते हैं।
कपयः धावन्ति=बन्दर दौड़ते हैं।
कृमयः चलन्ति=कीड़े चलते हैं।
सः पाणी क्षालयति=वह दोनों हाथ धोता है।

रविः द्योतते = सूर्य चमकता है।
रश्मयः राजन्ते = किरणें चमकती हैं।
विधिः सृष्टिं रचयति = ब्रह्मा सृष्टि को रचना करते हैं।
त्वं दधि खादसि = तुम दही खाते हो।
वृष्टि भवति = वर्षा होती है।
जनाः कृषिम् आरभन्ते = लोग खेती शुरू करते हैं।
सः शान्तिं लभते = वह शान्ति पाता है।
अहयः भ्रमन्ति = साँप घूमते हैं।
ऋषयः नीतिं वदन्ति = ऋषि लोग नीति कहते हैं।
सः सखायं त्यजन्ति = वह साथी को छोड़ता है।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

तपस्वी लोग विपत्ति सहते हैं। वह नीति जानता है। किरणें चमकती हैं। मैं शान्ति पाता हूँ। तुम हानि सहते हो। वे लोग दही खाते हैं। हरि पुस्तक पढ़ता है। मैं आंखें धोता हूँ।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

रात्रिः भवति। बुद्धिः बर्द्धते। ऋषयः मुक्तिं (salvation) लभन्ते। सः गिरि याति। अलयः भ्रमन्ति। मणयः द्योतन्ते।

३. शुद्ध करो—

अहं दधिं खादामि। स मुनीः बन्दते। स सम्पत्तीन् लभते। वारीनी पतन्ति।

४. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति करो—

.... कवितां रचयतः।............संसारं त्यजन्ति। ......द्योतते।......फणां धारयति। वैद्यः............ यच्छति। ते............सहन्ते। यतयः............भजन्ते।

सातवां पाठ

उकारान्त शब्द

इस पाठ में उकारान्त शब्दों से कर्त्ता और कर्म बनाने की रीति बतलाई जाती है।

१. उकारान्त पुल्लिंग

साधु—साधु, a saint.
प्रभु—स्वामी, lord.
तरु—वृक्ष, tree.
जन्तु—जीव, an animal.
पशु—जानवर, a beast.
भानु—सूर्य, the sun.
भिक्षु—भिक्षुक, a beggar.
दस्यु—डाकू, a robber.
वायु—हवा, air.
बाहु—बाँह, arm.
मृत्यु—मौत, death.
शिशु—बच्चा, an infant.
शत्रु—शत्रु, an enmey.
सूनु—बेटा, son.
सेतु—पुल, a bridge.
हेतु—कारण, reason.
बिन्दु—बूंद, drop.
धातु—धातु, metal.
असु—प्राण, life.
ऋतु—ऋतु, season.
विधु—चन्द्रमा, the moon.
गुरु—गुरु, preceptor.

कर्त्ता

उपर्युक्त शब्दों से कर्त्ता बनाने के लिये नीचे नियम दिये जाते हैं—

(१) एक वचन कर्त्ता के लिये शब्द के अन्त में सिर्फ एक विसर्ग जोड़ देना चाहिये। जैसे, साधु-साधुः। प्रभु-प्रभुः। तरु-तरुः।

(२) द्विवचन कर्त्ता के लिये शब्द के अन्तिम 'उकार' को दीर्घ कर देना चाहिये। जैसे साधु-साधू। प्रभु-प्रभू। तरु-तरू।

(३) बहुवचन कर्त्ता बनाने के लिये शब्द के अन्तिम 'उ' कार को हटाकर उसमें 'अंव:' जोड़ देना चाहिये। जैसे साधु-साधवः। प्रभु-प्रभवः। तरु-तरवः।

कर्म

(१) एकवचन कर्म के लिये शब्द के अन्त में सिर्फ एक 'म्' जोड़ देना चाहिये। जैसे साधु-साधुम्। प्रभु-प्रभुम्। तरु-तरुम् इत्यादि।

(२) द्विवचन कर्म का रूप वही होता है जो द्विवचन कर्त्ता का। जैसे, साधु-साधू। प्रभु-प्रभू। तरु-तरू।

(३) बहुवचन कर्म बनाने के लिये द्विवचन वाले रूप में एक 'न्' जोड़ देते हैं। जैसे, साधु-साधून्। प्रभु-प्रभून्। तरु-तरून्।

२. उकारान्त स्त्रीलिंग

धेनु—गाय, a cow.	रेणु—धूल, dust.
रज्जु—रस्सी, a rope.	स्नायु—नस, nerve.
तनु—शरीर, body.	चञ्चु—चोंच, beak.

इन शब्दों से कर्त्ता और कर्म बनाने की वही रीति है, जो पुल्लिंग (उकारान्त) शब्दों से। अन्तर इतना ही है कि बहुवचन कर्म में अन्तिम 'न्' के स्थान में एक विसर्ग होता है। जैसे—

कर्त्ता

	पु०	साधुः	साधू	साधवः
इसी तरह	स्त्री०	धेनुः	धेनू	धेनवः

(कर्म में)

	पु०	साधुम्	साधू	साधून्
इसी तरह	स्त्री०	धेनुम्	धेनू	धेनूः

३ उकारान्त नपुंसकलिंग

मधु—मधु, honey.
वसु,—धन, wealth.
वस्तु—चीज, thing.
दारु—लकड़ी, wood.
अम्बु—जल, water.
तालु—तालु, palate.
*अश्रु—आँसू, tear.
जानु.—घुटना, knee.

इन शब्दों के रूप इस तरह चलते हैं—

	ए०	द्वि०	व०
कर्त्ता	मधु	मधुनी	मधूनि
कर्म	मधु	मधुनी	मधूनि

चिह्नाङ्कित शब्द में 'न' के स्थान पर 'ण' होता है जैसे—

अश्रु	अश्रुणी	अश्रूणि

कुछ धातु

इष् (प०) [इच्छ्] चाहना, to wish.
प्रच्छ् (प०) [पृच्छ्] पूछना, ask.
द्रु (प०) [द्रव्] गलना, to melt.
बुध् (प०) [बोध] जानना, to know.
प्लु (आ०) [प्लव] तैरना, to swim.
याच् (आ०) माँगना, to beg.
उत+अय (प०) [उदय्] उदित होना, to rise.
आ०+गम् (प०) [आगच्छ] आना, to come.
आ+नी (प०) [आनय्] लाना, to bring.
उत्+नी (प०) [उन्नय्] उठाना, to raise.
आ+रुह (प०) [आरोह्] चढ़ना to ascend.
प्र+नम् (प०) (प्रणम्) प्रणाम करना, to salute.

वाक्य-रचना

शिशुः क्रीडति = बच्चा खेलता है।
वायुः चलति = हवा चलती है।
भिक्षुः याचते = भिक्षुक माँगता है।
धातवः द्रवन्ति = धातु गलते हैं।
साधुः विष्णुं भजते = साधु विष्णु को भजता है।
दस्युः वस्तूनि नयति = डाकू चीजों को ले जाता है।
शिशवः मधु खादन्ति = बच्चे मधु खाते हैं।
पशवः अम्बु पिबन्ति = जानवर पानी पीते हैं।
प्रभुः हेतुं पृच्छति = मालिक कारण पूछता है।
दारु प्लवते = लकड़ी तैरती है।
अश्रूणि पतन्ति = आँसू गिरते हैं।
विधुः राजते = चन्द्रमा चमकता है।
धेनवः चरन्ति = गायें चरती हैं।
भानुः उदयति = सूर्य उगता है।
अहं रज्जुम् आनयामि = मैं रस्सी लाता हूँ।
शत्रु आगच्छति = शत्रु आता है।

वह गुरु को प्रणाम करता है = सः गुरुं प्रणमति।
पक्षी चोंच उठाता है = खगः चञ्चुम् उन्नयति।
बन्दर वृक्ष पर चढ़ते हैं = कपयः तरुम् आरोहन्ति।
मैं कारण जानता हूँ = अहं हेतुं बोधामि।
भिखमंगा मृत्यु चाहता है = भिक्षुः मृत्युम् इच्छति।
मैं गुरुओं की सेवा करता हूँ = अहं गुरून् सेवे।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

चन्द्रमा उदित होता है। डाकू धन ले जाता है। वह दोनों बाँहों को उठाता है। बच्चा रोता है। बूँदें गिरती हैं। पुल हिलता है। मौत आती है। बेटा उत्पन्न होता है। गायें दौड़ती हैं। बच्चा मधु माँगता है। भिखमंगा लकड़ी लाता है।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

पशुः तनुम् उन्नयति। तरवः कम्पन्ते। रेणवः पतन्ति। साधू आगच्छतः। शिशुः जानुनी स्पृशति। सूनुः मोदते। धेनू चरतः। सः पशून् ताडयति। प्रभुः वार्त्तां पृच्छति।

३. शुद्ध करो—

स धेनून् ताड़यति। त्वं जन्तूः पश्यसि। अहं दारुं चालयामि। अश्रूनि पतन्ति। स वस्तून् नयति।

४. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

(लकड़ी) ....ज्वलते। (दाढ़ी) ....वर्द्धते। दस्युः ...... (चीजें) नयति ....। सः ......(रस्सी)... ......आनयति। ....उद्धयति।

आठवाँ पाठ

अन्त्यस्वरान्त शब्द

इस पाठ में ईकारान्त और ऊकारान्त आदि शब्दों से उद्देश्य बनाना सिखलाया जाता है।

ईकारान्त शब्द अधिकतर स्त्रीलिङ्ग ही हुआ करते हैं, इसलिये उन्हीं से प्रारम्भ किया जाता है।

ईकारान्त स्त्रीलिंग

नदी—नदी, river.
पृथ्वी—पृथ्वी, earth.
जननी—माता, mother.
पत्नी—स्त्री, wife.
भगिनी—बहन, sister.
रजनी—रात्रि, night.
लेखनी—कलम, pen.
वाणी—बोली, speech.
वाहिनी—सेना, army.
* श्री—लक्ष्मी, goddess of fortune.
* स्त्री—स्त्री, woman.
दासी—दासी, maid-servant.
राज्ञी—रानी, queen.
पुरी—नगरी, town.
पेटी—पिटारी, casket.
मशहरी—मशहरी, curtain.
स्थाली—थाली, dish.
देवी—देवी, goddess.
* धी—बुद्धि, intellect.
* भी—भय, fear.
* ह्री—लज्जा, shame.

उपर्युक्त से कर्त्ता और कर्म इस प्रकार बनाये जाते हैं—

कर्त्ता

(१) एकवचन कर्त्ता बनाने के लिये शब्द को ज्यों का त्यों रहने देते हैं। जैसे, नदी वहति। पृथ्वी चलति।

(२) द्विवचन कर्त्ता बनाने के लिये अन्तिम ईकार हटा कर "यौ" जोड़ देते हैं। जैसे, नदी-नद्यौ। दासी-दास्यौ।

(३) बहुवचन कर्त्ता बनाने के लिये अन्तिम ईकार हटाकर 'यः' जोड़ देते हैं। जैसे, नदी-नद्यः। दासी-दास्यः।

कर्म

(१) एकवचन कर्म बनाने के लिये शब्द में एक 'म्' लगा देते हैं। जैसे, नदी-नदीम्। दासी-दासीम् आदि।

(२) द्विवचन कर्म का रूप वही होता है जो द्विवचन कर्त्ता का। जैसे, नदी-नद्यौ। दासी-दास्यौ।

(३) बहुवचन कर्म का रूप बनाने के लिये शब्द के अन्त में एक विसर्ग जोड़ देते हैं। जैसे, नदी-नदीः। दासी-दासीः।

नोट—चिह्नाङ्कित शब्दों के रूप कुछ और ही तरह से चलते हैं। जैसे—

	ए० व०	द्विव०	ब० व०
कर्त्ता	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
कर्म	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः

नोट—'स्त्री' शब्द से एकवचन कर्त्ता बनाने में विसर्ग नहीं लगता। जैसे, स्त्री गच्छति।

ईकारान्त पुल्लिंग

पुल्लिङ्ग ईकारान्त में सुधी (विद्वान्) प्रभृति कुछ इने-गिने शब्द हैं। इनका रूप अधिकतर 'श्री' शब्द की तरह ही समझ लेना चाहिये।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग

ऊकारान्त शब्दों में भी अधिकतर स्त्रीलिङ्ग ही होते हैं। कुछ नीचे दिये जाते हैं—

वधू—बहू, wife. *भू—पृथ्वी, earth.
श्वश्रू—सास, mother-in-law *भ्रू—भौंह eye-brow.

इन शब्दों से कर्त्ता और कर्म इस तरह बनाये जाते हैं—

(१) शब्दों के अन्त में विसर्ग लगा देने से एकवचन कर्त्ता और बहुवचन कर्म बन जाता है। जैसे, वधू-वधूः आदि।

(२) शब्द के अन्त में 'म्' लगा देने से एकवचन कर्म बन जाता है। जैसे, वधू-वधूम् आदि।

(३) द्विवचन कर्त्ता और कर्म बनाने के लिये अन्तिम 'उ' कार हटाकर 'वौ' जोड़ दिया जाता है। जैसे, वधू-वध्वौ।

(४) बहुवचन कर्त्ता बनाने के लिये अन्तिम 'उ' कार हटाकर 'वः' जोड़ दिया जाता है। जैसे, वधू-वध्वः।

नोट—चिह्नाङ्कित शब्दों के रूप कुछ और ही तरह चलते हैं। जैसे,

	ए० व०	द्वि०	ब० व०
कर्त्ता	भूः	भुवौ	भुवः
कर्म	भुवम्	भुवौ	भुवः

ऊकारान्त पुल्लिंग

पुल्लिङ्ग ऊकारान्त में स्वयम्भू (ब्रह्मा)—Creator जैसे दो-चार शब्द हैं, जिनके कर्त्ता और कर्म अधिकतर 'भू' शब्द की तरह ही होते हैं।

ऋकारान्त शब्द

दातृ—दाता, giver. *पितृ—पिता, father.

जेतृ—जेता, conqueror.
कर्त्तृ—कर्त्ता, doer.
नेतृ—नेता, leader.
श्रोतृ—श्रोता, hearer.
सवितृ—सूर्य, the sun.
* भ्रातृ—भ्राता, brother.
* जामातृ—जामाता, son-in-law.
* देवृ—देवर, husband's. brother.
* (स्त्री०) मातृ—माता, mother.
*(स्त्री०) दुहितृ—बेटी, danghter (स्त्री०) स्वसृ—बहन, sister.

कर्त्ता और कर्म वनाने के नियम—

(१) अन्तिम 'ऋ' कार के स्थान पर 'आ'कार लगा देने से एकवचन कर्त्ता बन जाता है। जैसे दातृ-दाता। पितृ-पिता।

(२) अन्तिम 'ऋकार' को हटाकर 'आरौ' लगाने से द्विवचन कर्त्ता और कर्म वनते हैं। जैसे, दातृ-दातारौ, जेतृ-जेतारौ।

अपवाद—चिह्नाङ्कित शब्दों में 'आरौ' न लगाकर 'अरौ' लगाते हैं। जैसे, पितृ-पितरौ, भ्रातृ-भ्रातरौ।

(३) अन्तिम ऋकार को हटाकह 'आरः' लगादेने से बहुवचन कर्त्ता वन जाता है। जैसे, दातृ-दातारः। जेतृ-जेतारः।

अपवाद—चिह्नाङ्कित शब्दों में 'अरः' लगता है। जैसे, पितृ-पितरः, भ्रातृ-भ्रातरः।

(४) अन्तिम ऋकार को हटाकर 'आरम्' लगाने से एकवचन कर्म बनता है। जैसे, दातृ-दातारम्। जेतृ-जेतारम्।

अपवाद—चिह्नाङ्कित शब्दों में 'अरम्' लगता है। जैसे, पितृ-पितरम्। भ्रातृ-भ्रातरम्।

(५) अन्तिम ऋकार का दीर्घकर 'न' जोड़ देने से बहुवचन कर्म वनता है। जैसे, दातृ-दातॄन्; जेतृ-जेतॄन्।

जिन शब्दों के पहले स्त्री० लिखा हुआ है, वे स्त्रीलिंग हैं। 'मातृ' और 'दुहितृ' के रूप वैसे ही होते हैं, जैसे 'पितृ' के। 'स्वसृ' शब्द के रूप दातृ के समान होते हैं। अन्तर इतना ही है कि बहुवचन कर्म में इन स्त्रीलिङ्ग शब्दों का ऋकार दीर्घ हो जाता है और उसमें विसर्ग लगता है। जैसे, मातृ-मातॄः, स्वसृ-स्वसॄः।

'दातृ' आदि शब्द जब कभी नपुंसक लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं, तब इनके रूप यों चलते हैं—

	ए० व०	द्वि०	ब० व०
कर्त्ता	दातृ	दातृणी	दातॄणि
कर्म	दातृ	दातृणी	दातॄणि

अन्यान्य स्वरान्त शब्द

संस्कृत भाषा में कुछ अन्यस्वरान्त शब्द भी हैं, जैसे, गो, (गाय) cow नौ (नाव) boat आदि।

	ए० व०	द्वि०	ब० व०	ए० व०	द्वि०	ब० व०
कर्त्ता	गौः	गावौ	गावः	नौः	नावौ	नावः
कर्म	गाम्	गावौ	गाः	नावम्	नावौ	नावः

पर इस तरह के शब्द बहुत ही थोड़े हैं, और निम्न कक्षाओं में उनका विशेष प्रयोजन भी नहीं पड़ता है। अतएव इनका अधिक विवरण नहीं दिया जाता।

वाक्य-रचना

दासी नदीं गच्छति = दासी नदी को जाती है।
राज्ञी पुरीम् आगच्छति = रानी शहर में आती है।
स्वसा भ्रातरं प्रणमति = बहन भाई को प्रणाम करती है।
वधूः श्वश्रूं वन्दते = बहू सास को प्रणाम करती है।
जननी दुहितरं पृच्छति = माँ बेटी को पूछती है।
स्त्रियः गच्छन्ति = स्त्रियाँ जाती हैं।
अहं वाहिन्यौ पश्यामि = मैं दो सेनाओं को देखता हूँ।

मैं काशी जाता हूँ=अहं काशीं गच्छामि ।
तुम कलम चाहते हो=त्वं लेखनीम् इच्छसि ।
वह देवी को प्रणाम करती है=सा देवीं प्रणमति ।
नौकरानी पिटारी ले जाती है=दासी पेटीं नयति ।
नेता लोग बोलते हैं=नेतारः वदन्ति ।
गाएँ चरती हैं=गावः चरन्ति ।
वह नाव पर चढ़ता है=स नावम् आरोहति ।
पुत्र पिता की सेवा करता है=पुत्रः पितरं सेवते ।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

पृथ्वी चलती है । नदी बहती है । सरस्वती लक्ष्मी को देखती है । वह माता को प्रणाम करता है । भाई बहन को देखता है । दासी रानी की सेवा करती है । सेना शहर को जाती है । स्त्रियाँ देवी को प्रणाम करती हैं । बहनें आती हैं । रात बढ़ती है । मैं मशहरी लाता हूँ । वह थाली धोती है ।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

दातारः वर्द्धन्ते । जेतारः मोदन्ते । नद्यः वहन्ति । भियः भवन्ति । ह्रियः जायन्ते । ते सवितारं वन्दन्ते । इच्छन्ति । भ्रुवौ कम्पेते । अहं देवीः प्रणमामि ।

३. शुद्ध करो—

भ्रातारौ गच्छतः । दासीः आगच्छति । सः सवितरं पश्यति । त्वं मातृन् वन्दसे । सुध्यः वन्दति । यूयं श्रीम् इच्छथ । भवान् देवीन् पश्यति ।

नवाँ पाठ

व्यञ्जनान्त शब्द

व्यञ्जनान्त शब्द संस्कृत में बहुत से हैं। उनके रूपों को याद करना साधारणतः विद्यार्थियों को कठिन प्रतीत होता है। परन्तु इस पाठ में कुछ ऐसे तरीके बतलाये जाते हैं, जिनसे विद्यार्थियों को इन्हीं शब्दों के रूप सबसे अधिक सुगम प्रतीत होंगे।

व्यञ्जनान्त शब्दों में सबसे भारी सुभीता तो यह है कि पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का बखेड़ा नहीं रहता। दोनों में एक ही समान रूप चलते हैं।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों प्रकार के शब्दों के लिये यह नुसखा याद कर लेना चाहिए—

	ए० व०	द्वि०	ब० व०
कर्त्ता—	❀	औ	अः
कर्म—	अम्	औ	अः

नीचे कुछ व्यञ्जनान्त शब्द दिये जाते हैं—

चकारान्त शब्द

(स्त्री०) वाच्—वाणी, speech. (स्त्री०) शुच्—शोक sorrow.
(स्त्री०) त्वच्—त्वचा, skin. (पु०) जलमुच्—मेघ, cloud.

इन शब्दों में पूर्वोक्त नुसखे का व्यवहार कर कर्त्ता और कर्म बना लेना चाहिये।

नोट—कर्त्ता एक वचन में 'च्' के स्थान पर 'क्' हो जाता है। जैसे, वाच्-वाक्। त्वच्-त्वक्।

जकारान्त शब्द

(पु०) वणिज्—बनिया, merchant. (स्त्री०) स्रज्-माला, garland.
(पु०) सम्राज्—सम्राट्, emperor. (पु०) भिषज्-वैद्य, physician.
(स्त्री०) रुज्—रोग, disease.

इन शब्दों में भी ऊपरवाला नुसखा लगाकर कर्त्ता और कर्म बना लेना चाहिये।

नोट—कर्त्ता एकवचन में 'ज्' के स्थान पर 'क्' हो जाता है, जैसे, वणिज्—वणिक्। रुज—रुक्। पर 'सम्राज्' का 'सम्राट्' होता है।

तकारान्त शब्द

(१)

(पु०) भूभृत-पहाड़, mountain. (स्त्री०) विद्युत-बिजली, lightning.
(पु०) मरुत्—हवा, wind. (स्त्री०) सरित्—नदी, river.
(पु०) बृहत्—बड़ा, large. (पु०) हरित्—हरा, green.
(पु०) विपश्चित्-विद्वान्, learned. (पु०) दिनकृत्—सूर्य, the sun.
(स्त्री०) क्षुत्—भूख, hunger. (स्त्री०) चित्—चित्त, mind.
(स्त्री०) तडित्-बिजली, lightning. (स्त्री०) योषित्-स्त्री, woman.

(२)

(पु०) गच्छत्-जाता हुआ, going. (पु०) धावत्-दौड़ता हुआ, running.
,, गायत्-गाता हुआ, singing. ,, वदत्-बोलता हुआ, speaking.
,, पश्यत्-देखता हुआ, seeing. ,, सत्—होता हुआ, being.

(३)

(पु०) विद्यावत्-विद्यावान् learned. (पु०) बुद्धिमत्—बुद्धिमान् intelligent.
,, बलवत्—बलवान्, strong. ,, भवत्—आप, you.
,, ज्ञानवत्—ज्ञानवान्, wise. ,, महत्—महान्, great.

नं० १ वाले शब्दों में पूर्वोक्त नुसखा बिलकुल ठीक लग जाता है। जैसे, भूभृत- भूभृतौ, भूभृतः आदि।

नं० २ वाले शब्दों में भी यही नुसखा लगता है। पर दो बातें ध्यान देने की हैं—

(क) एकवचन कर्त्ता में 'त्' के स्थान पर 'न्' हो जाता है। जैसे, गच्छत्—गच्छन्।

(ख) बहुवचन कर्म को छोड़ बाकी विभक्तियों में 'त्' के पहले 'न्' लग जाता है। जैसे गच्छन्तौ, गच्छन्तः, गच्छन्तम् किन्तु ब० व० कर्म में गच्छतः।

नं० ३ वाले शब्दों के रूप वैसे ही चलते हैं, जैसे नं० २ के। अन्तर सिर्फ इतना ही है कि कर्त्ता एकवचन में 'वत्' के स्थान पर 'वान्' और 'मत्' के स्थान पर 'मान्' हो जाता है।

नोट—'महत्' शब्द के रूप में यह विशेषता है कि 'ह' के बाद एक 'आ' लग जाता है। जैसे, महान् महान्तौ, महान्तः। पर ब० व० कर्म में 'महतः' रूप होता है।

दकारान्त शब्द

(पु०) सुहृद्—मित्र, friend. (स्त्री०) आपद्—आपद्, danger.
„ सभासद्-सभासद्, member. „ विपद्—विपत्ति, misfortune.
„ पद्—पैर, foot. „ सम्पद्—सम्पत्ति, prosperity.
„ उद्भिज—उद्भिज, vegetable. „ परिषद्-सभा, assembly.

इन शब्दों में भी पूर्वोक्त नुसखा लगाकर कर्त्ता और कर्म बना लेना चाहिये।

नोट—कर्त्ता एकवचन में 'द्' के स्थान पर 'त्' हो जाता है। जैसे, सुहृद्—सुहृत्। सभासद्—सभासत्।

नकारान्त शब्द

(१) इन् भागान्त पुल्लिंग

गुणिन्—गुणी, meritorious.
धनिन्—धनी, rich.
प्राणिन्—प्राणी, animal.
स्वामिन्—स्वामी, husband.
रोगिन्—रोगी, patient.
युवन्—जवान, young.
पक्षिन्—पक्षी, bird.
ज्ञानिन्—ज्ञानी, wise.
संन्यासिन्—संन्यासी, ascetic.
तपस्विन्—तपस्वी, hermit.
मालिन्—माली, gardener.
※ पथिन्—मार्ग, way.

(२) अन् भागान्त.

राजन्—राजा, king.
मूर्द्धन्—सिर, head.
महिमन्—महिमा, greatness.
लघिमन्—हलकापन, lightness.
श्वन्—कुत्ता, dog.
प्रेमन्—प्रेम, love.
मघवन्—इन्द्र, Indra.
आत्मन्—आत्मा, soul.
ब्रह्मन्—ब्रह्मा, creator.

नं० (१) वाले शब्दों के कर्त्ता एकवचन ईकारान्त होते हैं। बाकी रूप नुसखे के अनुसार बनते हैं; जैसे, गुणी, गुणिनौ, गुणिनः।

नोट—पथिन् का रूप यों चलता है—

	ए०	द्वि०	ब०
कर्त्ता	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
कर्म	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः

नं० (२) वाले शब्दों के कर्त्ता एकवचन आकारान्त होते हैं। जैसे राजन्—राजा। मूर्द्धन—मूर्द्धा। शेष रूपों में नुसखा लगाने के पहले शब्द के अन्तिम भाग 'अन्' को 'आन' कर देते हैं। जैसे, राजानौ, राजानः, मूर्द्धानौ, मूर्द्धानः।

४

नोट—इन शब्दों के बहुवचन कर्म भिन्न-भिन्न तरह से बनते हैं। उन्हें याद रखना चाहिये—

शब्द	ब. व. कर्म	शब्द	ब. व. कर्म
राजन्	राज्ञः	श्वन्	शुनः
मूर्द्धन्	मूर्द्धनः	प्रेमन्	प्रेम्णः
महिमन्	महिम्नः	मघवन्	मघोनः
लघिमन्	लघिम्नः	आत्मन्	आत्मनः
युवन्	यूनः	ब्रह्मन्	ब्रह्मणः

शकारान्त शब्द

विश् (पुं०)—वैश्य—vaishya
निश् (स्त्री०)—रात्रि—night
*दिश् (स्त्री०)—दिशा—direction

इन शब्दों में भी उपर्युक्त नुसखा लगाकर कर्त्ता और कर्म बना लेना चाहिये।

* स्मरणीय—कर्त्ता एकवचन में 'श' के स्थान पर 'ट्' हो जाता है। जैसे विश्—विट, निश्—निट. पर 'दिश्' का 'दिक्' होता है।

सकारान्त शब्द

(१)	(२)
वेधस् (पुं०) ब्रह्मा, creator	लघीयस् (पुं०) छोटा, smaller
चन्द्रमस् (पुं०) चन्द्रमा, moon.	श्रेयस् (पुं०) अच्छा, better.
अप्सरस् (स्त्री०) अप्सरा; nymph	प्रेयस् (पुं०) प्रिय, dearer.
जलौकस् (पुं०) जोंक, leech	विद्वस् (पुं०) विद्वान्, learned.
आशिष (स्त्री०) आशीष, blessing	पुमस् (पुं०) पुरुष, man.

नं० १ वाले शब्दों से कर्त्ता एकवचन बनाने के लिये उनका

अन्तिम स्वर दीर्घ कर देते हैं और स् के स्थान में विसर्ग दे देते हैं। जैसें,वेधस—वेधाः, चंद्रमस—चन्द्रमाः, आशिस—आशीः। वाकी रूप नुसखे के अनुसार वनाये जाते हैं।

नं० २ वाले शब्दों में यह विशेषता है कि उनमें एकवचन कर्त्ता और वहुवचन कर्म छोड़ और बाकी विभक्तियों में स् कें पहले 'आ' जोड़ दिया जाता है, जैसे, लघीयांसौ, लघीयांसः आदि।

नोट (क) कर्त्ता एकवचन बनाने के लिये अन्तिम स् हटाकर आन् जोड़ देना चाहिये। जैसे, लघीयस्—लघीयान् । पुमस्—पुमान् । विद्वस्—विद्वान्।

(ख) इन शब्दों के वहुवचन कर्म यों होते हैं—

लघीयस्—लघीयसः	विद्वस्—विदुषः
श्रेयस—श्रेयसः	पुमस्—पुंसः

व्यञ्जनान्त नपुंसकलिङ्ग

व्यञ्जनान्त शब्दों के कर्त्ता और कर्म में प्रायः एक ही समान रूप होते हैं। भिन्न-भिन्न वचनों में, शब्दों के रूप में जो परिवर्तन होते हैं, वे यहाँ दिखाये जाते हैं।

(क) एकवचन

एकवचन में, शब्दों के रूप प्रायः ज्यों-के-त्यों बने रहते हैं। जैसे, 'जगत्' 'महत्' इत्यादि ।

नोट—(१) नकारान्त शब्दों का अन्तिम 'न्' उड़ जाता है।
(२) दकारान्त शब्दों में 'द्' के स्थान पर 'त्' हो जाता है।
(३) सकारान्त शब्दों में 'स' के स्थान में विसर्ग हो जाता है।

जैसे, नामन्—नाम। कर्मन्—कर्म। हृद्—हृत्। पयस्—पयः।

(ख) द्विवचन

द्विवचन में शब्दों के बाद प्रायः 'ई' जोड़ दिया जाता है। जैसे, जगत्—जगती। महत्—महती। हृद्—हृदी।

पयस्—पयसी। धनुष्—धनुषी। नामन्—नामनी। कर्म—कर्मणी। स्थायिन्—स्थायिनी। (किन्तु, गच्छत्—गच्छन्ती, पश्यत्—पश्यन्ती आदि।)

(ग) बहुवचन

बहुवचन में, शब्दों के बाद प्रायः 'इ' जोड़ देते हैं और हलन्त वर्ण के पूर्व 'न्' लगा देते हैं। जैसे, जगत्—जगन्ति। गच्छत्—गच्छन्ति। हृद्—हृन्दि। (किन्तु महत्—महान्ति।)

नोट—(१) नकारान्त शब्दों में, न् के साथ इ जोड़ देने के पहले, उसके पूर्ववर्ती स्वर को दीर्घ कर देते हैं। जैसे,

नामन्—नामानि। कर्मन्—कर्माणि। स्थायिन्—स्थायीनि।

(२) सकारान्त शब्दों में, पूर्ववर्ती स्वर को दीर्घ कर एक अनुस्वार भी जोड़ दिया जाता है। जैसे,

पयस्—पयांसि। हविष्—हवींषि। धनुष्—धनूंषि।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

वह सम्राट को प्रणाम करता है। बनिया चीजें बेचता है (विक्रीणीते)। वैद्य रोग छुड़ाता है (हरति)। बिजली चमकती है। हवा चलती है। गुणी लोग आदर पाते हैं। राजा लोग देश जीतते हैं। विद्वानों को देखा। ब्रह्मा ने जगत् की रचना की (अरचयत्)। आत्मा अमर है।

कुत्ते दौड़ते हैं। मैं रास्ता जानता हूँ। ज्ञानी लोग कहते हैं। वह तपस्वियों की सेवा करता है। पत्ती उड़ते हैं। महात्मा लोग प्रेम करते हैं। ज्ञानवान् पुरुष परमात्मा को जानते हैं।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

स जलमुचं पश्यति। बृहत् भूभृत् वर्त्तते। ताः स्रजः धारयन्ति। सरितः पश्यामि। बुद्धिमन्तः विद्यार्थिनः पठन्ति। सभासदः वदन्ति। स विपदः सहते। अहम् आपदः सहे। युवानः आगच्छन्ति। विद्वांसः परिषदं गच्छन्ति। संन्यासिनः भगवन्तं सेवन्ते। तपस्वी आशिषः ददाति।

३. शुद्ध करो—

स नामं पृच्छति। त्वं कर्म करोषि। स पथं जानाति। सम्राटः गच्छति। अहं विद्यार्थीं पश्यामि। स ब्रह्मां पूजयति। भूभृतः वर्त्तते। सुहृदः आगच्छति। महन्तः राजाः योधन्ते। श्वानः धावति। अ विदुषं पृच्छामि।

(ख) विधेय के स्वरूप

(Form's of Predicate)

पहला पाठ

क्रिया

हिन्दी की तरह संस्कृत में भी क्रियाओं के तीन मुख्य काल होते हैं—

(१) वर्त्तमान (Present Tense)
(२) भूत (Past Tense)
(३) भविष्य (Future Tense)

जिस तरह हिन्दी में क्रियाओं के तीन कालों में अलग-अलग रूप होते हैं, उसी तरह संस्कृत में भी। जैसे,

मैं पढ़ता हूँ = अहं पठामि
मैंने पढ़ा = अहम् अपठम्
मैं पढ़ूँगा = अहं पठिष्यामि

यह बात पहले ही ज्ञात हो चुकी है कि संस्कृत में—

(१) कर्त्ता के वचन के अनुसार क्रिया का वचन होता है। जैसे, बालकः पठति, बालकौ पठतः, बालकाः पठन्ति।

(२) कर्त्ता के पुरुष के अनुसार क्रिया का पुरुष होता है। जैसे, सः पठति, त्वं पठसि, अहं पठामि।

(३) कर्त्ता के लिंग के अनुसार क्रिया का लिङ्ग नहीं बदलता। जैसे, सः गच्छति, सा गच्छति, तत् गच्छति।

अतएव, तीन वचन और तीन पुरुष होने से, एक काल में क्रिया के (३ × ३) ९ रूप हुए। जैसे;

पठ्—वर्त्तमानकाल

	ए० व०	द्वि०	ब० व०
प्र. पु.	सः पठति वह पढ़ता है	तौ पठतः वे दोनों पढ़ते हैं	ते पठन्ति वे सब पढ़ते हैं
म. पु.	त्वं पठसि तुम पढ़ते हो	युवां पठथः तुम दोनों पढ़ते हो	यूयं पठथ तुम सब पढ़ते हो
उ. पु.	अहं पठामि मैं पढ़ता हूँ	आवां पठावः हम दोनों पढ़ते हैं	वयं पठामः हम सब पढ़ते हैं

हिन्दी में धातुओं से क्रिया बनाना सहल है। क्योंकि उसमें प्रायः सभी धातुओं के साथ एक-सी ही विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं और इसलिये भिन्न क्रियाओं के रूपों में कोई विशेष अन्तर नहीं होता। परन्तु संस्कृत में यह बात नहीं है। एक तो धातुओं की संख्या ही बहुत है। दूसरे प्रत्येक धातु के रूप एक से नहीं चलते। आगे 'ति, तः, अन्ति' आदि जोड़ने की जो रीति ऊपर बतलाई गई है वह सब पर एक-सी लागू नहीं होती।

विद्यार्थियों को आगे चलने पर ज्ञात होगा कि संस्कृत की क्रियाएँ दस गणों (classes) में विभक्त की जा सकती हैं। धातु रूप की दृष्टि से, प्रत्येक गण की रीति अपनी खास ही होती है। उसपर भी एक ही गण में सभी क्रियाओं के

रूप बिलकुल समान नहीं चलते। पर इस प्रारम्भिक अवस्था में ही छात्रों को इन उलझनों में फंसाना उचित नहीं है। इस पाठ में ऐसा प्रयत्न किया जाता है कि एक ही नियम (formula) के द्वारा विद्यार्थी भिन्न-भिन्न प्रकार के धातुओं से वर्त्तमान कालिक रूप बना सकें। अभी तक जो धातु बताये गये हैं वे सिर्फ इस लिए कि विद्यार्थी उनके द्वारा वाक्य बनावें। अब धातुओं का सिलसिलेवार वर्णन किया जाता है और उनके रूप बनाने के लिये उपयोगी नियम बतलाये जाते हैं।

धातुओं से वर्त्तमानकालिक रूप बनाने के लिये यह नुसखा काम में लाना चाहिये—

	परस्मैपदी			आत्मनेपदी		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र०	तिः	तः	न्ति	ते	एते	न्ते
म०	सिः	थः	थ	से	एथे	ध्वे
उ०	आमि	आवः	आम	ए	आवहे	आमहे

जब ये विभक्तियाँ लगाई जाती हैं, तब धातु के बाद 'अ' जोड़ दिया जाता है, किन्तु जिन विभक्तियों के आदि में स्वर है, उनके साथ 'अ' जोड़ा नहीं जाता।

उदाहरण—पठ् + न्ति = पठ + अ + न्ति = पठन्ति।

किन्तु, वप् + एते = वप् + एते = वपेते।

(१) निम्नलिखित धातुओं में उपर्युक्त नुसखा ठीक-ठीक लग जाता है—

परस्मैपदी

अट् जाना, to go
अर्ज् कमाना, to earn
ईर्ष्य् ईर्ष्या करना, to envy
चर्व् चबाना, to chew
जल्प् बड़बड़ाना, to mutter
जीव् जीना, to live
निन्द् निन्दा करना, to blame
वम् वमन करना, to vomit
व्रज् चलना, to go
रक्ष् रक्षा करना, to protect
प्र+शंस् प्रशंसा करना to praise
मूर्च्छ् मूर्छित होना, to faint
भूष् शोभित करना, to adorn
वाञ्छ् इच्छा करना, to wish
पच् पकाना, to cook
त्यज् छोड़ना, to abandon
पठ् पढ़ना, to read.
वह् बहना, to flow
नम् प्रणाम करना, to salute

आत्मनेपदी

कम्प् काँपना, to shake
गाह् स्नान करना, to bathe
एध् बढ़ना, to increase
यत् यत्न करना, to try
चेष्ट् चेष्टा करना, to strive
ईह् चाहना, to wish
रम् खेलना, to play
आ+रभ् शुरू करना, to begin
वेप् कांपना, to tremble
सेव् सेवा करना, to serve
सह् सहना, to endure
शिक्ष् सीखना, to learn
यज् यज्ञ करना, to sacrifice
याच् माँगना, to ask
ईक्ष देखना, to see
भाष् बोलना, to speak
लभ् पाना, o get
शङ्क् सन्देह करना, to doubt
वन्द् प्रणाम करना, to salute
क्षम् क्षमा करना, to forgive

(२) जिन धातुओं का अन्तिम स्वर 'इ' 'उ' अथवा 'ऋ' रहता है, उनमें इ के स्थान में ए, उ के स्थान में ओ, और 'ऋ' के स्था में 'अर्' हो जाता है।

यह परिवर्त्तन हो जाने पर पूर्वोक्त नुसखा लगता है।

जैसे, जि+ति=जे+अ+ति=जयति।

भू+ति=भो+अ=भवति।*

स्मृ+ति=स्मर+अ+ति=स्मरति।

नीचे कुछ ऐसे ही धातु दिये जाते हैं—

जि (प.) जीतना, to conquer (जयति)
क्षि (प.) कम होना, to decay (क्षयति)
स्मि (आ.) मुसकुराना, to smile (स्मयते)
नी (प.) ले जाना, to carry (नयति)
सृ (प.) चलना to move (सरति)
हृ (प.) लेना, to take away (हरति)
भृ (प.) भरना, to fill (भरति)
ध्यै (प.) ध्यान करना, to meditate (ध्यायति)
गै (प.) गाना, to sing (गायति)
द्रु (प.) गलना, to melt (द्रवति)
प्लु (आ.) तैरना to swim (प्लवते)
त्रै (आ.) रक्षा करना, to protect (त्रायते)
श्रि (आ.) जाना, to go (श्रयते)
च्युत् (आ.) गिरना, to fall (च्योतते)
वि+जि (आ.) जीतना, to conquer (विजयते)
अनु+सृ (प.) अनुसरण करना, to follow (अनुसरति)

---

* ए+अ=अय्। ऐ+अ=आय्।

ओ+अ=अव्। औ+अ=आव्।

(देखो, व्याकरण में स्वरसन्धि प्रकरण)

वाक्य-रचना*

गंगा हरति पापानि = गंगा पापों को हरती है।
साधुः स्मरति केशवम् = साधु केशव को स्मरण करता है।
ईश्वरः त्रायते लोकान् = ईश्वर लोगों की रक्षा करता है।
ध्यायन्ति मुनयः शिवम् = मुनि लोग शिव का ध्यान करते हैं।
गायन्ति ब्राह्मणाः वेदान् = ब्राह्मण लोग वेद गाते हैं।
यजन्ते साधवः सदा = साधुगण सदा यज्ञ करते हैं।
जनाः स्वार्थं समीहन्ते = लोग स्वार्थ चाहते हैं।
अहं वाञ्छामि सम्पदम् = मैं सम्पति की चाह करता हूँ।
भिक्षुकः याचते द्रव्यम् = भिक्षुक द्रव्य माँगता है।
राजानं वन्दते कविः = कवि राजा को प्रणाम करता है।
शिक्षते गणितं छात्रः = विद्यार्थी गणित सीखता है।
लभन्ते योगिनः सुखम् = योगी लोग सुख पाते हैं।
सूदः पचति अन्नानि = रसोइया अन्नों को पकाता है।
चर्वन्ति महिषाः तृणम् = भैंसे घासफूस चरते हैं।
नित्यं दुःखानि एधन्ते = नित्य दुःख बढ़ते हैं।
आयुः क्षयति सर्वदा = आयु सदा कम होती है।
उन्मत्ताः बहु जल्पन्ति = पागल बहुत बड़बड़ाते हैं।
मधुरं भाषते सुधीः = बुद्धिमान् मीठा बोलते हैं।

---

* पहले कहा जा चुका है कि वाक्य में सामान्यतः यही क्रम रहता है— १. कर्त्ता, २. कर्म, ३. क्रिया। पर यह क्रम गद्य (Prose) का है। यहां प्रत्येक वाक्य श्लोक का एक चरण है, अतएव शब्दों का क्रम स्वेच्छानुसार रक्खा गया है। पद्यबद्ध इसलिये दिये गये हैं। कि विद्यार्थियों को स्मरण रखने में विशेष सुविधा होगी और पाठ्य पुस्तकों के पाठ्य भाग का अर्थ समझने में भी सुगमता होगी।

त्यजन्ति कादराः धर्मम् = कायर लोग धर्म को छोड़ते हैं।
वीराः रक्षन्ति दुर्बलम् = वीरगण दुर्बल की रक्षा करते हैं।
द्रवन्ति धातवः सर्वे = सभी धातु गलते हैं।
वहन्ति सरितः सदा = नदियाँ सदा बहती हैं।
शत्रुः विजयते देशम् = शत्रु देश को जीतता है।
चौरः हरति कम्बलम् = चोर कम्बल लेता है।
स्मयन्ते बालकाः सर्वे = सभी बालक मुसकुराते हैं।
बाला नयति पुस्तकम् = लड़की पुस्तक ले जाती है।

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद करो—

निन्दन्ति नास्तिकाः वेदान्। असत्यं भाषते छली।
आरभन्ते नराः यज्ञम्। साधुमीर्ष्यति दुर्जनः।
कष्टानि सहते छात्रः। सेवन्ते सज्जनाः गुरून्।
अहं वंदे महादेवम्। नमामः केशवं वयम्।

२. संस्कृत में अनुवाद करो—

कविगण राजा की प्रशंसा करते हैं। दो लड़के तैरते हैं। फल गिर रहे हैं। तुम मुसकुराते हो। हम दोनों गाते हैं। हम लोग चलते हैं। शरीर काँपता है। वे लोग स्नान करते हैं। दोनों ओंठ काँपते हैं। नदियाँ बहती हैं। तारे चमकते हैं। रोगी मूर्छित होता है। सर्प विष वमन करता है। विद्यार्थी अपना पाठ प्रारम्भ करता है। हम लोग गणेश को प्रणाम करते हैं।

३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

सूदाः ओदनं ....। वयं दुःखानि ....।
ऋषिः ईश्वरं ....। छात्रः व्याकरणं ....।
कादरः शस्त्रं ....। सत्पुत्रः पितरं ....।

४. शुद्ध करो—

सदा सत्यं विजयति। ईश्वरः जयते। फलानि च्युतन्ति। अहं विष्णुं ध्यामि। सः मां ईक्षतिः। त्वं यतसि। आवां कष्टं सहावः। ते द्रव्यं अर्जन्ते। शरीरं कम्पति।

दूसरा पाठ

क्रिया बनाने की विशेष रीतियाँ

संस्कृत में ऐसे बहुत से दो अक्षरवाले धातु हैं, जिनमें पहला वर्ण ह्रस्व इकारान्त, उकारान्त अथवा ऋकारान्त होता है। इनमें भी इ की जगह ए, उ की जगह ओ और ऋ की जगह अर् हो जाता है।

यह परिवर्त्तन हो जाने के बाद पूर्वोक्त नुसखा लगता है। नीचे कुछ ऐसे ही धातु दिये जाते हैं

क्रुश (प०) चिल्लाना, to cry [क्रोशति]
घुष (प०) घोषणा करना, to proclaim [घोषति]
घृष् (प०) घिसना, to rub [घर्षति]
शुच् (प०) सोचना, to be sorry [शोचति]
पुष् (प०) पोसना, to nourish [पोषति]
रुह (प०) उगना, to grow [रोहित]
रुच् (आ०) पसन्द पड़ना, to be liked [रोचते]
वृत् (आ०) होना, to be [वर्त्तते]
मुद् (आ०) खुश होना, to be glad [मोदते]
शुभ(आ०) चमकना, to shine [शोभते]
बुध् (उ०) जानना, to know [बोधति, बोधते]
वृष् (प०) बरसना, to rain [वर्षति]
कृष् (प०) खींचना, to draw [कर्षति]

किन्तु कुछ धातु ऐसे भी हैं जिनमें यह परिवर्त्तन नहीं होता। और पूर्वोक्त नुसखा वैसे ही लगा दिया जाता है। जैसे—

स्पृश् (प०) छूना, to touch [स्पृशति]

विश् (प०) घुसना, to enter [विशति]
लिख् (प०) लिखना, to .write [लिखति]
सृज् (प०) विरचना, to create [सृजति]
स्फुट् (प०) खिलना, to split open [स्फुटति]
तुद् (प०) दुःख देना, to trouble [तुदति]
स्फुर् (प०) फड़कना, to throb [स्फुरति]
क्षिप् (उ०) फेंकना, to throw [क्षिपति, क्षिपते]
मिल् (प०) मिलना, to join [मिलति]

निम्नलिखित धातुओं में विभक्ति लगाने के पूर्व 'य' जोड़ दिया जाता है।

क्रुध् (प०) क्रोधित होना, to be angry [क्रुध्यति]
क्षुध् (प०) भूखा होना, to be hungry [क्षुध्यति]
क्षुभ् (प०) घबड़ाना, to be disturbed [क्षुभ्यति]
नृत् (प०) नाचना, to dance [नृत्यति]
लुभ् (प०) लोभ करना, to covet [लुभ्यति
शुध् (प०) शुद्ध होना, to be pure [शुध्यति]
स्निह् (प०) स्नेह करना, to love [स्निह्यति]
हृष (प०) प्रसन्न होना, to be glad [हृष्यति]
कुप् (प०) क्रोधित होना, to be angry [कुप्यति]
रुष् (प०) क्रोधित होना, to be angry [रुष्यति]
क्लिश् (आ०) क्लेश पाना, to suffer [क्लिश्यते]
खिद् (आ०) खेद पाना, to be afflicted [खिद्यते]
युध (आ०) युद्ध करना, to fight [युध्यते]
विद् (आ०) होना, to be [विद्यते]

कुछ धातु ऐसे हैं जिनमें विभक्ति लगने के पूर्व 'अय्' जोड़ दिया जाता है। जैसे—

कथ (प०) कहना, to say [कथयति]
क्षप् (प०) बिताना, to pass [क्षपयति]
गण् (प०) गिनना, to count [गणयति]
स्पृह (प०) चाहना, to wish [स्पृहयति]
चुर् (प०) चुराना, to steal [चोरयति]
चिन्त् (प०) सोचना, to think [चिन्तयति]
छद् (प०) ढांकना, to cover [छादयति]
चित्र् (प०) चित्र खींचना, to paint [चित्रयति]
चूर्ण् (प०) चूर्ण करना, to powder [चूर्णयति]
पूज् (प०) पूजा करना. to worship [पूजयति]
तिज् (प०) तेज करना, to sharpen [तेजयति]
तड् (प०) मारना, to beat [ताडयति]
पीड् (प०) चोट पहुँचाना, to hurt [पीडयति]
क्षल् (प०) धोना, to wash [क्षालयति]
मन्त्र् (आ०) सलाह लेना, consult [मन्त्रयते]

निम्नलिखित धातु विभक्ति लगने से पहले अपना रूप ही बदल लेते हैं। अतएव उनका रूप बदलकर नुसखा लगा लेना चाहिये—

गम् (प०) गच्छ, जाना, to go [गच्छति]
यम् (प०) यच्छ, रोकना, to restrain [यच्छति]
दाण (प०) यच्छ, देना, to give [यच्छति]
ऋ (प०) ऋच्छ—जाना, to go [ऋच्छति]
पा (प०) पिब्—पीना, to drink [पिबति]
घ्रा (प०) जिघ्र—सूँघना, to smell [जिघ्रति]

ध्मा (प०) धम्—फूँकना, to blow [धमति]
स्था (प०) तिष्ठ्—ठहरना, to stay [तिष्ठति]
दृश् (प०) पश्य्—देखना, to see [पश्यति]
दंश् (प०) दश्—डसना, to bite [दशति]
रञ्ज् (प०) रज्—रँगना, to dye [रजति]
सद् (प०) सीद्—दुःख पाना to suffer [सीदति]
ष्ठिव् (प०) ष्ठीव—थूकना, to spit [ष्ठीवति]
गुह् (प०) गूह—छिपाना, to conceal [गूहति]
इष् (प०) इच्छ—चाहना, to wish [इच्छति]
प्रच्छ् (प०) पृच्छ—पूछना, to ask [पृच्छति]
भ्रस्ज् (प०) भृज्ज्—भूँजना, to fry [भृज्जति]
मस्ज् (प०) मज्ज—स्नान करना, to bathe [मज्जति]
मुच् (प०) मुञ्च्—छोड़ना, to release [मुञ्चति]
लिप् (प०) लिम्प—लीपना, to anoint [लिम्पति]
सिच् (प०) सिञ्च—छिड़कना, to sprinkle [सिञ्चति]
भ्रंश् (प०) भ्रश्य्—बिगड़ना, to be polluted [भ्रश्यति]
जन् (प०) जाय्—उत्पन्न होना, to be born [जायते]
शम् (प०) शाम्य्—शान्त होना, to be calm [शाम्यति]
श्रम् (प०) श्राम्य्—थकना, to be weary [श्राम्यति]
क्लम् (प०) क्लाम्य्—थकना, to be weary [क्लाम्यति]
मद् (प०) माद्य—पागल होना, to be mad [माद्यति]
व्यध् (प०) विध्य—छेदना, to pierce [विध्यति]
दिव् (प०) दीव्य—खेलना, to play [दीव्यति]
सिव् (प०) सीव्य्—सीना, to sew [सीव्यति]
उत्+डी (आ०) उड्डीय्—उड़ना, to fly [उड्डीयते]
मृ (आ०) म्रिय्—मरना, to die [म्रियते]

संस्कृत में बहुत से ऐसे धातु भी हैं, जिनमें पूर्वोक्त नुसखा लगाने से काम नहीं चल सकता है वैसे तो, इन धातुओं की संख्या बहुत है किन्तु साधारण बोलचाल और अनुवाद के लिए दस-बारह मुख्य-मुख्य धातुओं के रूप जान लेना आवश्यक है। विद्यार्थियों को उचित है कि निम्नलिखित धातुओं के व्याकरण में देखकर याद कर लें।

अस—to be [अस्ति, स्तः, सन्ति, etc. ।
कृ— to do [करोति, कुरुतः, कुर्वन्ति, etc.]
श्रु—to hear [शृणोति, शृणुतः, शृण्वन्ति, etc.]
ब्रू— to speak [ब्रवीति, ब्रूतः, ब्रुवन्ति, etc.]
भुज—to eat [भुनक्ति, भुङ्क्तः, भुञ्जन्ति, etc.)
दा—to give [ददाति, दत्तः, ददति etc.]
रुद्—to weep [रोदिति, रुदितः, रुदन्ति, etc.]
शी—to sleep [शेते, शयाते, शेरते, etc.]
शक्— can [शक्नोति, शक्नुतः, शक्नुवन्ति, etc.]
आप— to get [आप्नोति, आप्नुतः, आप्नुवन्ति, etc.]
ज्ञा—to know [जानाति, जानीतः, जानन्ति, etc.]
क्री— to buy [क्रीणाति, क्रीणीतः, क्रीणन्ति, etc.]
ग्रह् — to take [गृह्णाति, गृह्णीतः, गृह्णन्ति, etc.]

नोट—संस्कृत में क्रियाओं के दस लकार (tenses) होते हैं। इस पुस्तक में इन लकारों का वर्णन किया गया है—

(१) वर्त्तमान काल के लिए लट् लकार
(२) भूतकाल के लिए लङ् लकार
(३) भविष्यत् काल के लिए लृट् लकार
(४) अनुज्ञार्थक क्रिया के लिये लोट् लकार

वाक्य-रचना

ब्रह्मा सृजति संसारम्=ब्रह्मा संसार की रचना करता है।
पत्रं लिखति बालकः=लड़का चिट्ठी लिखता है।
घर्षन्ति चन्दनं विप्राः=ब्राह्मण चन्दन घिसते हैं।
जलं कर्षन्ति वारिदाः=बादल जल खींचते हैं।
सज्जनः बोधते नीतिम्=सज्जन नीति जानता है।
विप्रः विशति मन्दिरम्=ब्राह्मण मन्दिर में घुसता है।
क्षिपन्ति कन्दुकं बालाः=लड़के गेंद फेंकते हैं।
कन्या स्पृशति दर्पणम्=लड़की आईना छूती है।
वात्यायां कम्पते वृक्षः=आँधी में पेड़ काँपता है।
माता पृच्छति बालिकाम्—माँ लड़की को पूछती है।
युध्यन्ते सैनिकाः सर्वे=सभी सिपाही लड़ते हैं।
क्लिश्यन्ते चिररोगिणः=बहुत दिनों के रोगी क्लेश पाते हैं।
भृत्यं ताड़यति स्वामी=मालिक नौकर को मारता है।
राजा मन्त्रयते कविम्=राजा कवि को सलाह देता है।
क्षपयन्ति नराः कालम्=लोग समय बिताते हैं।
कथयन्ति ऋतं बुधाः=पण्डित लोग सत्य कहते हैं।
सीव्यति बालिका वस्त्रम्=लड़की कपड़ा सीती है।
प्रश्नं पृच्छन्ति बालकाः=लड़के प्रश्न पूछते हैं।
गृहं गच्छति गोपालः=गोपाल घर जाता है।
पश्यन्ति मुनयः हरिम्=मुनिगण भगवान् को देखते हैं।
अहम् इच्छामि कुशलम्=मैं कुशल चाहता हूँ।
बाला लिम्पति प्राङ्गणम्=लड़की आँगन लीपती है।
उड्डीयन्ते खगाः सर्वे=सभी पक्षी उड़ते हैं।
भृज्जन्ति चणकं स्त्रियः=स्त्रियाँ चना भूनती हैं।

शंख धमन्ति योद्धारः = योद्धागण शंख फूँकते हैं।
भृत्यः सिञ्चति पादपान् = नौकर वृक्षों को सींचता है।
दशन्ति मशकाः जन्तून् = मच्छर जन्तुओं को डँसते हैं।
दयां कुर्वन्ति साधवः = साधु लोग दया करते हैं।

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद करो—

सः द्रव्यं गृह्णति। त्वं ष्ठीवसि। अहं विष्णुं पूजयामि। सा शिशुं छादयति। निर्बलाः खिद्यन्ते। धात्री बालिकां पोषति। अहं शोचामि। त्वं चिन्तयसि। अङ्कुराः रोहति। मेघाः वर्षन्ति। मयूराः नृत्यन्ति। नेत्रे स्फुरतः। वैद्यः औषधं चूर्णयति। सः छुरिकां [छुरी] तेजयति। अहं कालं क्षपयामि। चित्तं शाम्यति।

२. संस्कृत में अनुवाद करो—

दो पक्षी उड़ते हैं। पौधे उगते हैं। फूल खिलते हैं। माता क्रुद्ध होती है। वह कविता सोचता है। वह सबक [पाठम्] रटता है। यदुनाथ सत्यनारायण को पूजता है। सिपाही शस्त्र को तेज करता है। तुम मुझे दुःख देते हो। वे लोग ठहरते हैं। मैं कुशल पूछता हूँ।

३. शुद्ध करो—

सः गृहं गमति। सर्पः लोकान् दंशति। त्वं वार्ता प्रच्छसि। ते वृक्षान् सिचन्ति। सा पुष्पं घ्राति। त्वं वस्त्रं रञ्जसि। अहं गोपालं दृशामि।

तीसरा पाठ

भूतकाल

अभी तक जो क्रियाएँ बतलाई गई हैं वे केवल वर्त्तमान काल में। इस पाठ में भूतकाल की क्रिया बनाने की रीति बतलाई जाती है।

भूतकाल बनाने के लिये यह नुसखा याद कर लेना चाहिये—

	परस्मैपद				आत्मनेपद		
	ए०	द्वि०	ब०		ए०	द्वि०	ब०
प्र०	त्	ताम्	अन्	प्र०	त	एताम्	अन्त
म०	अः	तम्	त	म०	थाः	एथाम्	ध्वम्
उ०	अम्	आव	आम	उ०	ए	आवहि	आमहि

जिस तरह विभक्तियों के योग से वर्त्तमान काल की क्रिया बनाई जाती है, उसी तरह इन विभक्तियों के योग से भूतकाल की क्रिया बनाई जाती है।

स्मरणीय—भूतकाल की विभक्ति लगाने के समय धातु के पहले एक 'अ' जोड़ दिया जाता है। जैसे,

पठ्+त्=अ+पठ्+अ*+त्=अपठत्

वप+थाः=अ+वप्+अ+थाः=अवपथाः।

नोट—यदि धातु का पहला अक्षर स्वर हो, तो भूतकाल वाले 'अ' के संयोग से उसमें यों परिवर्त्तन हो जाता है—

'अ' के स्थान में 'आ' हो जाता है। जैसे, अट्—आटत्।

---

* वर्त्तमानकाल के प्रकरण में बताया गया है कि व्यञ्जनादि विभक्तियों के पहले 'अ' जोड़ा जाता है। जैसे, पठ्+ति=पठ्+अ+ति। वही नियम यहाँ भी समझना चाहिये।

'इ' के स्थान में 'ऐ' हो जाता है। जैसे, ईक्ष्—ऐक्षत।
'उ' के स्थान में 'औ' हो जाता है। जैसे, उज्झ्—औज्झत्।
'ऋ' के स्थान में 'आर्' हो जाता है। जैसे, ऋ—आर्च्छत्।

वर्त्तमान काल के प्रसङ्ग में कई धातुओं के जो विशेष रूप बताये गये हैं, वे भूतकाल में भी लागू होते हैं। अर्थात् वर्त्तमान की विभक्ति लगने के समय जिस धातु का जो रूप होता है, वही भूतकाल में भी रहता है। जैसे,

(१) पठ्+त्=अ+[पठ्+अ]+त्=अपठत् (पढ़ा)
(२) जि+त्=अ+[जे+अ]+त्=अजयत् (जीता)
(३) क्रुश्+त्=अ+[क्रोश्+अ]+त्=अक्रोशत् (चिल्लाया)
(४) स्पृश्+त्=अ+[स्पृश्+अ]+त्=अस्पृशत् (छुआ)
(५) क्रुध्+त्=अ+[स्पृश्+अ]+त्=अक्रुध्यत् (क्रोधित हुआ)
(६) कथ्+त्=अ+[कथय्+अ]+त्=अकथयत् (कहा)
(७) गम्+त्=अ+[गच्छ+अ]+त्=अगच्छत् (गया)

इसी तरह पूर्वोक्त सभी धातुओं से भूतकाल की क्रिया बना लेनी चाहिये और कर्त्ता के पुरुष वचनानुसार वाक्य में प्रयोग करना चाहिये।

	ए० व०	द्वि० व०	बहु व०
प्र०	सः अगच्छत् वह गया	तौ अगच्छताम् वे दोनों गये	ते अगच्छन् वे सब गये
म०	त्वं अगच्छः तुम गये	युवां अगच्छतम् तुम दोनों गये	यूयं अगच्छत तुम सब गये
उ०	अहं अगच्छम् मैं गया	आवां अगच्छाव हम दोनों गये	वयं अगच्छाम हम सब गये

जिन धातुओं के पहले उपसर्ग रहता है, उनसे भूतकालिक क्रिया कैसे बनाई जायगी ?

विधि—पहले उपर्युक्त रीति से उस धातु की भूतकालिक क्रिया बना लेनी चाहिये। तब जो रूप तैयार हो, उसके पहले उपसर्ग जोड़ देना चाहिये।

नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

आ + गम्—[आ + अगच्छत् =] आगच्छत्।
ते आगच्छन् = वे सब आये।

उप + विश—[उप + अविशत =] उपाविशत्।
वयं उपाविशाम = हम लोग बैठे।

आ + नी—[आ + अनयत् =] आनयत्।
सा पुस्तकं आनयत् = वह पुस्तक लाई।

प्र + नम्—[प्र + अनमत् =] प्राणमत्।
अहं प्राणमम् = मैंने प्रणाम किया।

वि + जी—[वि + अजयत* =] व्यजयत।
राजानः व्यजयन्त = राजाओं ने विजय किया.

प्र + भू—[प्र + अभवत =] प्राभवत्।
राक्षसाः प्राभवन् = राक्षस उत्पन्न हुए।

प्र + हृ—[प्र + अहरत् =] प्राहरत्।
तौ प्राहरताम् = उन दोनों ने मारा।

अनु + सृ—[अनु + असरत् =] अन्वसरत्।
त्वम् अन्वसरः = तुम पीछे चले।

प्र + स्था—[प्र + अतिष्ठत*] प्रातिष्ठत।
ते प्रातिष्ठन्त = वे लोग बिदा हुए।

---

*उपसर्ग लगने से बहुत से धातु परस्मैपदी से आत्मनेपदी और आत्मनेपदी परस्मैपदी हो जाते हैं। ऊपर की कक्षाओं में यह बात अच्छी तरह बतलाई जायगी।

ऊपर जो विभक्तियाँ बतलाई गई हैं उनके द्वारा सामान्य भूत की क्रिया बना सकते हैं। जैसे,

घोड़ा दौड़ा	पक्षी उड़ा
अश्वः अधावत्	पक्षी उदडीयत्

किन्तु हिन्दी में जहाँ अपूर्णभूत की क्रिया रहती है वहाँ संस्कृत में क्या किया जायगा? जैसे,

घोड़ा दौड़ता था	पक्षी उड़ता था

इनका अनुवाद कैसे किया जायगा?

संस्कृत में इसके लिये एक बहुत ही सरल तरीका है। वह यह कि वर्त्तमानकाल की क्रिया बनाकर उसमें एक 'स्म' जोड़ दिया जाता है। जैसे,

अश्वः धावतिस्म	पक्षी उड्डीयतेस्म

भूतकाल बनाने के लिये संस्कृत में तीन 'लकार' हैं—

(१) लङ्। जैसे, भू—अभवत्।

(२) लिट्। जैसे, भू—बभूव।

(३) लुङ्। जैसे, भू—अभूत्।

इस पाठ में सिर्फ पहला लकार दिखाया गया है, क्योंकि प्रारम्भिक अवस्था में केवल इसी के द्वारा भी काम चल सकता है। शेष दोनों लकारों के रूप कुछ टेढ़े-मेढ़े होते हैं, अतएव वे ऊपर की कक्षाओं में सिखलाये जाते हैं।

वाक्य रचना

अपठन् पुस्तकं छात्राः = विद्यार्थियों ने किताब पढ़ी।

अगच्छत् भवनं हरिः = हरि घर गया।

यूयं विष्णुम् अवन्दध्वम् = तुम लोगों ने विष्णु को प्रणाम किया।

आरभन्त जनाः कृषिम् = लोगों ने खेती शुरू की।

आवाम् गीतम् अगायाव=हम दोनों ने गीत गाया।
यूयम् अनयत शिशुम्=आप लोग बच्चे को ले गये।
अस्मराम वयं पाठम्=हम लोगों ने पाठ याद किया।
अत्रायन्त सुराः पुरम्=देवताओं ने नगर की रक्षा की।
विद्यार्थिनः अमोदन्त=विद्यार्थी लोग खुश हुए।
अबोधामहि शङ्करम्= हम लोगों ने शङ्कर को जाना।
युवाम् अलिखम्पत्रम्=तुम दोनों ने पत्र लिखा।
यूयम् अस्पृशत शिरः=तुम लोगों ने सिर छुआ।
अक्रुधन् बालकाः सर्वे=सभी लड़के क्रोधित हुए।
अयुध्यन्त प्लवङ्गमाः=बन्दरों ने लड़ाई की।
चोरः अचोरयत् द्रव्यम्=चोर ने धन चुराया।
स्वामी भृत्यम् अताडयत्=मालिक ने नौकर को मारा।
अपश्याम वयं मित्रम्=हम लोगों ने मित्र को देखा।
अगच्छन् ऋषयः वनम्=ऋषि लोग वन को गये।
अपिवाव जलम् आवाम्=हम दोनों ने पानी पिया।
तौ पुष्पाणि अजिघ्रताम्=उन दोनों ने फूल सूँघे।
आगच्छन् मुनयः सर्वे=सभी मुनि आये।
प्राणमाम वयं गुरुम=हम लोगों ने गुरु को प्रणाम किया।
उपविशन् महाराजाः=महाराजा गण बैठे।
प्रातिष्ठेथां युवां गृहम=तुम दोनों घर को विदा हुए।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

वे दोनों घर गये। तुम दोनों ने पानी पिया। मैंने पुस्तक पढ़ी। तुमने मुझे देखा। मैंने यह बात कही। वह बोला। उसने मुझसे ईर्ष्या की। तुमने केशव की निन्दा की। मैंने उसकी प्रशंसा की। चोर ने सन्दूक (वासकं) चुराली। ईश्वर ने हम लोगों की रक्षा की। बर्फ

(हिमम्) गलती थी। राजा ने घोषणा कर दी। अध्यापक ने लड़कों को पूछा। वे लोग मर गये।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

पथिकः (मुसाफिर) अश्राम्यत्। अहम् ऐच्छम्। मनः अशाम्यत्। श्वान् अमाद्यन्। शराः मृगम् अविध्यन्। राजा अपराधिनम् अमुञ्चत्। वणिक् द्रव्याणि अगणयत्। त्वं पात्रं (बर्तन) प्राक्षालयः। अहं विष्णुम् अपूजयम्। राजा निवसतिस्म।

३. शुद्ध करो—

अहं अकथत्। त्वं अदशत्। वयं अपठम्। ते अबुधन्। अहं मूर्ति अस्पर्शम्। सः पुस्तकं अछदयत्। ते वृक्षं असिचन्। सः अप्रणमत्।

४. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो (भूतकालिक क्रिया के द्वारा)—

पक्षिणो............। वयं धनं.........।
त्वं पत्रं............। अहं पुस्तकं......।
यूयं जलं............। तौ प्रश्नं.........।

———

चौथा पाठ

विधि (लोट् लकार)

"तुम आओ। वह जावे। वे लोग सुनें।"

इन क्रियाओं से आज्ञा का अर्थ झलकता है। संस्कृत में इनका अनुवाद करने के लिए एक खास लकार (tense) है। इसको 'लोट्' लकार कहते हैं।

लोट् लकार बनाने का नुसखा नीचे दिया जाता है—

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र.	तु	ताम्	अन्तु	ताम्	एताम्	अन्ताम्
म.	अ	तम्	त	स्व	एथाम्	ध्वम्
उ.	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै

जैसे, वर्त्तमान और भूतकाल में उनकी विभक्तियाँ जोड़कर धातु से क्रिया बनाते हैं, वैसे ही इस लकार में उपर्युक्त विभक्तियाँ जोड़कर क्रिया बनाते हैं।

नोट—इस लकार में भी व्यञ्जनादि विभक्तियों के पहले 'अ' लगता है।
उदाहरण—पठ् + तु = पठ् + अ + तु = पठतु।
वेप + ध्वम् = वेप् + अ + ध्वम् = वेपध्वम्
स्वरादि विभक्तियों के पहले नहीं लगता। जैसे,
पठ् + अन्तु = पठन्तु।
वेप् + अन्ताम् = वेपन्ताम्।

लोट् लकार का प्रयोग समझाने के लिये नीचे हिन्दी क्रियाओं में अनुवाद दिया जाता है—

पठ् धातु--परस्मैपद

	ए० व०	द्वि०	ब० व०
प्र०	सः पठतु वह पढ़े	तौ पठताम् वे दोनों पढ़ें	ते पठन्तु वे सब पढ़ें
म०	त्वं पठ तुम पढ़ो	युवां पठतम् तुम दोनों पढ़ो	यूयं पठत तुम सब पढ़ो
उ०	अहं पठानि मैं पढ़ूं	आवां पठाव हम दोनों पढ़ें	वयं पठाम हम सब पढ़ें

वर्त्तमान काल में, धातुओं के रूप बदलने के सम्बन्ध में जो नियम बताये गये हैं वे यहाँ भी लागू होते हैं। जैसे—

(१) अट् अटतु (जाय) (५) क्रुध् क्रुध्यतु (क्रोधित होवे)
(२) जि जयतु (जीवे) (६) कथ् कथयतु (कहे)
(३) क्रुश् क्रोशतु (चिल्लाये) (७) गम् गच्छतु (जाय)
(४) स्पृश् स्पृशतु (छुए)

भाष्—आत्मनेपद

	ए० व०	द्वि०	ब० व०
प्र०	सः भाषताम् वह बोले	तौ भाषेताम् वे दोनों बोलें	ते भाषन्ताम् वे सब बोलें
म०	त्वं भाषस्व तुम बोलो	युवां भाषेथाम् तुम दोनों बोलो	यूयं भाषध्वम् तुम सब बोलो
उ०	अहं भाषै मैं बोलूं	आवां भाषावहै हम दोनों बोलें	वयं भाषामहै हम सब बोलें

उदाहरण—

(१) लभ्—लभताम् (पावे)
(२) प्लु—प्लवताम् (तैरे)
(३) बुध—बोधताम् (जाने)
(४) क्षिप्—क्षिपताम् (फेंके)
(५) युध्—युध्यताम् (युद्ध करे)
(६) मन्त्र्—मन्त्रयताम् (सलाह करे)
(७) मृ—म्रियताम् (मरे)

नोट—कुछ धातुओं के रूप मध्यमपुरुष एकवचन में दूसरी ही तरह के होते हैं। इन्हें अच्छी तरह स्मरण रखना चाहिये।

दा (देना)—देहि = (दो)

वरं देहि=वरदान दो।

हन् (मारना)—जहि मारो।

शत्रुं जहि=शत्रु को मारो।

ग्रह (लेना)—गृहाण (लो)

शिक्षां गृहाण=शिक्षा लो।

पा (पीना, रक्षा करना)—पिव (पिओ), पाहि (रक्षा करो)

जलं पिव=पानी पिओ।

शरणागतं पाहि=शरणागत की रक्षा करो।

कृ (करना)—कुरु (करो)

कर्म कुरु=काम करो।

नोट—(१) जिस तरह हिन्दी में सिर्फ 'आओ' 'जाओ' कहने से ही काम निकल जाता है, उसी तरह संस्कृत में केवल 'आगच्छ' 'गच्छ'

कहने से ही अभिप्राय विदित हो जाता है। त्वम् (तुम) लगाना, न लगाना, वक्ता की इच्छा पर निर्भर है।

(२) हिन्दी में जहाँ क्रिया के साथ मत (नहीं) का प्रयोग किया जाता है, संस्कृत में वहाँ भी (नहि) का प्रयोग किया जाता है, जैसे,

मत जाओ = मा गच्छ।
मत दौड़ो = मा धाव।

(३) यह स्मरण रखना चाहिये कि भवत् (आप) शब्द के साथ सर्वदा प्रथमपुरुष की क्रिया लगती है। अतएव,

भवान् गच्छ = आप जाओ।
भवन्तः पश्यत = आप लोग देखो।

ऐसा कहना अशुद्ध है। इस स्थान पर यह कहना शुद्ध होगा—
भवान् गच्छतु = आप जाँय।
भवन्तः पश्यन्तु = आप लोग देखें।

वाक्य-रचना

सत्यं वद = सत्य बोलो।
धर्मं कुरु = धर्म करो।
ईशं भज = ईश्वर को भजो।
विद्यां पठ = विद्या पढ़ो।
भवान् उपविशतु = आप बैठें।
भवन्तः ताम्बूलं गृह्णन्तु = आप लोग पान लें।
सः पुस्तकं पठतु = वह पुस्तक पढ़े।
तौ गीतं गायताम् = वे दोनों गीत गावें।
ते समाचारं कथयन्तु = वे लोग समाचार कहें।
अहं गृहं गच्छानि = मैं घर जाऊं।
आवां नाटकं पश्याव = हम दोनों नाटक देखें।

वयं भ्रमाम = हम लोग टहलें।
परोपकारी भव = परोपकारी होओ।
आलस्यं मा कुरु = आलस मत करो।
अनृतं मा भाषस्व = झूठ मत बोलो।
जन्तून् मा पीड़य = जीवों को दुःख मत दो।
जीवं मा जहि = जीव को मत मारो।
युवां जलं पिवतम् = तुम दोनों जल पीओ।
यूयं मिष्टान्नं खादत = तुम लोग मिठाई खाओ।
गुरुं वन्दस्व = गुरु को प्रणाम करो।
युवां मातरं सेवेथाम् = तुम दोनों माता की सेवा करो।
यूयं सत्यं भाषध्वम् = तुम लोग सत्य बोलो।
धर्मः विजयताम् = धर्म की जय हो।
पापिनः नश्यन्तु = पापियों का नाश हो।
जनाः सुखिनः सन्तु = मनुष्य सुखी हों।
लोकाः शान्तिम् आप्नुवन्तु = लोग शान्ति प्राप्त करें।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

तुम चिट्ठी लिखो। आप स्नान करें। वह घर जाय। मैं सबक (पाठम्) याद करूँ। वे लोग तमाशा (कौतुकम्) देखें। आपलोग ठहरें। हम दोनों खेलें। तुम हाल कहो। वह आवे। हम लोग दौड़ें। आप दोनों क्षमा करें। तुमलोग कुशल पूछो। चोरी (चौर्यम्) मत करो। क्रुद्ध मत होओ। झूठ (अनृतम्) मत बोलो। दया करो। भगवान् की पूजा करो।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

ऋणं मा गृहाण। विद्यां देहि। ते द्रव्यम् अर्जन्तु। रोगियं

सेवस्व । मन्दिरं प्रविश । युवां तिष्ठतम् । वयं लिखाम । ईशं प्रणमाम ।

३. इन वाक्यों के अर्थ में क्या अन्तर है ?

(क) अहं गच्छामि
(ख) अहं गच्छानि

(क) वयं नमामः
(ख) वयं नमाम

(क) यूवं पठत
(ख) यूयं पठथ

४. शुद्ध करो—

भवान् आगच्छ । त्वं पठतु । यूय पश्यन्तु । सत्यं वदस्व । अनृतं मा भाष । राजाना विजयन्तु । ईश्वरं वन्दाम । पुस्तकं दद । फलं गृह । दीनं पिब । दुष्टान् हन ।

पाँचवाँ पाठ

भविष्यत्काल

अभी तक भूत और वर्त्तमान काल की क्रियाओं के रूप बतलाये गये हैं। इस पाठ में भविष्यत् काल की क्रिया सिखलाई जायगी।

भविष्यत् काल के लिये धातुओं के बाद 'लृट्' लकार की विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं। किन्तु इन विभक्तियों को न देकर हम एक ऐसा रास्ता बतला देते हैं, जिसके अनुसार विद्यार्थी गण बड़ी सुगमता के साथ भविष्यत्कालिक क्रिया बना लेंगे।

नुस्खा (Formula)—वर्त्तमान काल के लिये जो विभक्तियाँ दी गई हैं, उन्हीं विभक्तियों के पूर्व 'स्य' जोड़ देने से भविष्यत् काल की क्रियाएँ बन जायँगी।

नोट—अधिकाँश धातुओं में 'स्य' के बदले 'इष्य' हो जाता है।

उदाहरण—पठ्+ति=पठ्+अ+ति=पठति (वर्त्तमान)
पठ्+ (इष्य+) ति=पठ्+इष्य्+अ+ति=पठिष्यति (भविष्य)
भाष+ते=भाष्+अ+ते=भाषते (वर्त्तमान)
भाष्+(इष्य+) ते=भाष्+इष्य्+अ+ते=भाषिष्यते (भविष्य)

पठ् धातु—भविष्यत्

	ए० व०	द्विव०	ब० व०
प्र०	सः पठिष्यति वह पढ़ेगा	तौ पठिष्यतः वे दोनों पढ़ेंगे	ते पठिष्यन्ति वे सब पढ़ेंगे
म०	त्वं पठिष्यसि तुम पढ़ोगे	युवां पठिष्यथः तुम दोनों पढ़ोगे	यूयं पठिष्यथ तुम सब पढ़ोगे
उ०	अहं पठिष्यामि मैं पढ़ूंगा	आवां पठिष्यावः हम दोनों पढ़ेंगे	वयं पठिष्यामः हम सब पढ़ेंगे

भाष्—धातु भविष्यत्

	ए० व०	द्विव०	ब० व०
प्र०	सः भाषिष्यते वह बोलेगा	तौ भाषिष्येते वे दोनों बोलेंगे	ते भाषिष्यन्ते वे सब बोलेंगे
म०	त्वं भाषिष्यसे तुम बोलोगे	युवां भाषिष्येथे तुम दोनों बोलोगे	यूयं भाषिष्यध्वे तुम सब बोलोगे
उ०	अहं भाषिष्ये मैं बोलूंगा	आवां भाषिष्यावहे हम दोनों बोलेंगे	वयं भाषिष्यामहे हम सब बोलेंगे

स्मरणीय— लट् (वर्त्तमान), लङ् (भूतकाल) और लोट (अनुज्ञा) लकारों में यह बतलाया गया है कि बहुत से धातुओं से विभक्ति लगने के पहले कुछ और ही रूप हो जाता है। जैसे, गम् से गच्छ, पा से पिब् इत्यादि। परन्तु लृट् (भविष्यत्) लकार में यह नियम लागू नहीं होता। उसमें सीधे धातु के

उपरान्त ही विभक्ति जोड़ दी जाती है। जैसे, 'गम्' धातु से 'गमिष्यति' रूप होगा, न की 'गच्छिष्यति'। विद्यार्थियों को यह बात ध्यान पूर्वक स्मरण रखना चाहिये।

भविष्यत् काल बनाने के लिये—

(१) धातुओं के अनन्तर 'इष्य' जोड़कर विभक्तियाँ लगाई जाती हैं जैसे,

गम्—गमिष्यति=जायगा
पठ्–पठिष्यति=पढ़ेगा
हस्–हसिष्यति=हसेगा
चल्–चलिष्यति=चलेगा
वद्—वदिष्यति=बोलेगा
पत्–पतिष्यति=गिरेगा
धाव्–धाविष्यति=दौड़ेगा
हन्–हनिष्यति=मारेगा
खेल्–खेलिष्यति=खेलेगा
बाध्—बाधिष्यते=रोकेगा
याच्–याचिष्यते=माँगेगा
सह् –सहिष्यते=सहेगा, इत्यादि

(२) वर्तमान काल के प्रसङ्ग में जो नियम नं० २ और विशेष नियम नं० १ में बताये गये हैं, (देखो, पृष्ठ संख्या ५६ और ६२) वे ऌट लकार में भी लागू होते हैं।

भू–भविष्यति=होगा
कृ–करिष्यति=करेगा
स्मृ–स्मरिष्यति=याद करेगा
हृ–हरिष्यति=लेगा
तृ–तरिष्यति=तैरेगा

भृ—भरिष्यति=भरेगा
शो—शयिष्यते=सोयेगा
बुध्—बोधिष्यते=जानेगा
शुच्—शोचिष्यति=सोचेगा
मुद्—मोदिष्यते=खुश होगा
वृष्—वर्षिष्यति=बरसेगा
शुभ्—शोभिष्यते=चमकेगा
कुप्—कोपिष्यते=क्रोधित होगा
नृत्—नर्तिष्यति=नाचेगा
लिख्—लेखिष्यति=लिखेगा
वृत्—वर्तिष्यते=होगा

नोट—किन्तु बहुत से धातुओं में 'इष्य्' के बदले केवल 'ष्य' ही लगता है। जैसे,

जि—जेष्यति=जीतेगा
श्रु—श्रोष्यति=सुनेगा
नी—नेष्यति=ले जायगा
चि—चेष्यति=चुनेगा

(३) वर्तमान काल के प्रसङ्ग में जो विशेष नियम नं० ४ में बतलाया गया है (देखो, पृष्ठ ६३), वह लृट् लकार में भी लागू होता है। जैसे,

कथ्—कथयिष्यति=कहेगा
पूज्—पूजयिष्यति=पूजेगा
तड्—ताड़यिष्यति=मारेगा
चिन्त्—चिन्तयिष्यति=सोचेगा
(४) आकारान्त और ऐकारान्त धातुओं में 'इष्य्' के बदले 'स्य'

लगता है। ऐकारान्त धातु भी विभक्ति लगने के समय आकारान्त बन जाते हैं। जैसे—

दा—दास्यति = देगा
पा—पास्यति = पीवेगा
स्था—स्थास्यति = रहेगा
या—यास्यति = जायगा
गै—गास्यति = गायगा
ध्यै—ध्यास्यति = ध्यान करेगा
ग्लै—ग्लास्यति = घटेगा
स्ना—स्नास्यति = नहायगा

(५) बहुत से धातु ऐसे हैं जिनमें भविष्यत्कालिक विभक्ति लगने के पहले कुछ दूसरा ही रूप हो जाता है। यहाँ कुछ ऐसे ही धातु दिये जाते हैं।

वच् [वक्ष्य]—वक्ष्यति = बोलेगा
पच् [पक्ष्य]—पक्ष्यति = पकावेगा
त्यज् [त्यक्ष्य]—त्यक्ष्यति = छोड़ेगा
दह् [धक्ष्य]—धक्ष्यति = जलावेगा
भज् [भक्ष्य]—भक्ष्यति = भजन करेगा
यज [यक्ष्य]—यक्ष्यति = यज्ञ करेगा
रभ् [रप्स्य]—रप्स्यते = शुरू करेगा
लभ् [लप्स्य]—लप्स्यते = पावेगा
वस् [वत्स्य]—वत्स्यति = रहेगा
ब्रू [वक्ष्य]—वक्ष्यति = बोलेगा
नश् [नंक्ष्य]—नंक्ष्यति = नष्ट होगा
शुष् [शोक्ष्य] शोक्ष्यति = सूखेगा
शक् [शक्ष्य]—शक्ष्यति = सकेगा

प्रच्छ् [प्रक्ष्य]—प्रक्ष्यति = पूछेगा
मुच् [मोक्ष्य]—मोक्ष्यति = छोड़ेगा
सिच् [सेक्ष्य]—सेक्ष्यति = सींचेगा
स्पृश् [स्प्रक्ष्य]—स्प्रक्ष्यति = छुएगा
दृश् [द्रक्ष्य]—द्रक्ष्यति = देखेगा
अस् [भविष्य]—भविष्यति = होगा
नम् [नंस्य]—नंस्यति = प्रणाम करेगा
रम् [रंस्य]—रंस्यते = खेलेगा
विद् [वेत्स्य]—वेत्स्यति = होगा
भुज् [भोक्ष्य]—भोक्ष्यति = खायगा

नोट—(१) 'ग्रह् (लेना) से 'ग्रहीष्यति' रूप बनता है। अर्थात् 'इष्य' के बदले 'ईष्य' लगाना पड़ता है।

(२) 'स्मृ' धातु आत्मनेपदी है, किन्तु भविष्यत् काल में परस्मैपदी की तरह रूप होता है। जैसे, मरिष्यति = मारेगा।

वाक्य-रचना

वयं ग्रामं गमिष्यामः = हमलोग गाँव जायगे।
भृत्यः कार्य्यं करिष्यति = नौकर काम करेगा।
बाधिष्यते नदी मार्गम् = नदी रास्ता रोकेगी।
पूजयिष्यन्ति साधवः = साधुगण पूजा करेंगे।
लप्स्यन्ते मुनयः स्वर्गम् = मुनि लोग स्वर्ग पावेंगे।
जलं पास्यन्ति बालकाः = लड़के पानी पीवेंगे।
भवनं यास्यथ यूयम् = तुम लोग घर जाओगे।
गीतं गास्यन्ति गायकाः = गवैये गीत गायँगे।
अहं भोक्ष्यामि मिष्टान्नम् = मैं मिठाई खाऊँगा।
प्रश्नं प्रक्ष्यन्ति बालकाः = लड़के प्रश्न पूछेंगे।

शत्रुं जेष्यन्ति राजानः=राजा लोग शत्रु को जीतेंगे।
द्रक्ष्यसि त्वं हिमालयम्=तुम हिमालय देखोगे।
अग्निः धक्ष्यति काष्ठानि=आग लकड़ियों को जलावेगी।
सूदः पक्ष्यति भोजनम्=रसोइया भोजन पकावेगा।
सेक्ष्यन्ति मालिनः वृक्षान्=माली लोग पेड़ों को सींचेंगे।
छात्रः नेष्यति पुस्तकम्=विद्यार्थी पुस्तक ले जायगा
अहं श्रोष्यामि शास्त्राणि=मैं शास्त्रों को सुनूंगा।
सत्यं वक्ष्यन्ति पण्डिताः=पण्डित लोग सत्य बोलेंगे।
लेखिष्यथः युवां लेखम्=तुम दोनों लेख लिखोगे।
भविष्यामः बुधाः वयम्=हम लोग पण्डित होवेंगे।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

मैं पुस्तक पढ़ूंगा। वह चिट्ठी लिखेगी। वे दोनों गीत गावेंगे। तुम इनाम (पुरस्कारम्) पाओगे। वे लोग घर जायँगे। वह सच कहेगा। तुम लोग झूठ बोलोगे। मैं जल पीऊँगा। हमलोग फल खायँगे। यह पेड़ गिरेगा। वह घोड़ा दौड़ेगा। हमलोग काम करेंगे। मेघ बरसेगा। मैं कारण जानूँगा। हमलोग प्रश्न पूछेंगे। दुर्भिक्ष होगा। लोग दुःख सहेंगे। धर्मात्मा ईश्वर को देखेंगे। पापी लोग दण्ड पावेंगे। वह मुझे प्रणाम करेगा। मैं आशीर्वाद दूँगा। सभी लोग मरेंगे।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

अहं काशीं यास्यामि। विश्वनाथं द्रक्ष्यामि। गङ्गाजलं पास्यामि। प्रसादं भोक्ष्यामि। निर्माल्यं घ्रास्यामि। देवताः नंस्यामि। दक्षिणां दास्यामि। धर्मं प्रक्ष्यामि। सत्यं ज्ञास्यामि। पूजनं करिष्यामि। वस्तूनि ग्रहीष्यामि। गृहम् आगमिष्यामि। रात्रिः गमिष्यति, भविष्यति सुप्रभातम्। भास्वान् (सूर्य) उदेष्यति, हसिष्यति पङ्कजश्रीः (कमल की शोभा)।

३. शुद्ध करो—

ते प्रयागं गच्छिष्यन्ति । अहं शिलां स्पर्शिष्यामि । त्वं ओदनं भक्षिष्यसि । अहं तान् नमिष्यामि । सा दुखं सहिष्यति । त्वं जलं पिविष्यसि । अहं प्रश्नं प्रच्छिष्यामि । स धनं ग्रहिष्यति । सर्वे मरिष्यन्ते ।

संस्कृत-रचना

द्वितीय भाग

उद्देश्य और विधेय के विस्तार

(Attributes of Subject and Predicate)

—:※:—

पहला अध्याय

उद्देश्य विस्तार

(Attributes of Subject)

पहला पाठ

विशेषण

(१) उजला घोड़ा चरता है। उजली घोड़ी चरती है।
(२) उजला घोड़ा चरता है। उजले घोड़े चरते हैं।
(३) उजला घोड़ा चरता है। उजले घोड़े को देखो।

ऊपर के वाक्यों से पता चलता है कि—

(१) विशेष्य (संज्ञा) का जो लिङ्ग रहता है, विशेषण का भी वही लिङ्ग हो जाता है।

(२) विशेष्य का जो वचन रहता है, विशेषण का भी वही वचन हो जाता है।

(३) विशेष्य का जो कारक होता है, विशेषण का भी वही कारक हो जाता है।

संस्कृत में भी ये सभी नियम लागू होते हैं। जैसे—

(१) उज्ज्वलः घोटकः चरति। उज्ज्वला घोटकी चरति।

उज्ज्वलः घोटकः चरति। उज्ज्वलाः घोटकाः चरन्ति।

उज्ज्वलः घोटकः चरति। उज्ज्वलं घोटकं पश्य।

नोट—विशेषणों के रूप उसी प्रकार चलते हैं जैसे विशेष्यों के। अर्थात् अकारान्त विशेषण के रूप उसी तरह चलेंगे जैसे अकारान्त विशेष्य के। इकारान्त विशेषण के रूप उसी तरह चलेंगे जैसे इकारान्त विशेष्य के इसी तरह प्रत्येक विशेषण के विषय में समझना चाहिये।

उदाहरण—

		ए. व.	द्वि.	ब. व.
पुंल्लिङ्ग	विशेष्य—	बालकः	बालकौ	बालकाः
	विशेषण—	सुन्दरः	सुन्दरौ	सुन्दराः
स्त्रीलिङ्ग	विशेष्य—	लता	लते	लताः
	विशेषण—	मधुरा	मधुरे	मधुराः
नपुंसकलिङ्ग	विशेष्य—	फलं	फले	फलानि
	विशेषण—	मिष्टं	मिष्टे	मिष्टानि

नीचे कुछ विशेषणों की सूची दी जाती है—

(१) अकारान्त विशेषण

प्रिय—dear
स्वस्थ—healthy
चतुर—clever
सुशील—gentle
स्वतन्त्र—independent
शूर—brave
धीर—patient
उत्तम—good
अधम—bad
मूर्ख—foolish
दुष्ट—wicked
दुर्बल—weak

धूर्त—cunning
मत्त—mad
चञ्चल—fickle
दृढ़—steady
दरिद्र—poor
मलिन—dirty
अन्ध—blind
बधिर—deaf
खञ्ज—lame
वृद्ध—old
कृश—thin

स्थूल—fat
दीर्घ—large
क्षुद्र—small
कृष्ण—black
श्वेत—white
हरित—green
लोहित—red
पीत—yellow
नील—blue
मधुर—sweet
अम्ल—sour

संज्ञाएं जितनी हैं, सबके लिङ्ग बंधे हुए हैं। परन्तु विशेषणों में यह बात नहीं है। उनका कोई खास लिङ्ग नहीं होता। वे तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त हो सकते हैं। उपर्युक्त सूची में जितने विशेषण हैं, वे पुल्लिंग और नपुंसक लिङ्ग में तो अकारान्त ही रहेंगे, पर स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त हो जावेंगे। जैसे,

पु०—उत्तमः बालकः = अच्छा लड़का।
न०—उत्तमं फलम् = अच्छा फल।
स्त्री०—उत्तमा बालिका = अच्छी लड़की।

नोट—इन विशेषणों के स्त्रीलिंग 'ई' लगाकर बनाये जाते हैं—

पु०	स्त्री०
सुन्दर—(beautiful)—	सुन्दरी।
तरुण—(young)—	तरुणी।
गौर—(fair)—	गौरी।

(२) अन्यस्वरान्त विशेषण

शुचि—pure	बहु—many
सुरभि—fragrant	मृदु—soft
स्वादु—tasteful	तनु—thin
साधु—good	चारु—expert
गुरु—heavy	पटु—fine
लघु—light	दयालु—kind

नोट—इन विशेषणों में जो इकारान्त हैं, उनके रूप पुल्लिंग में 'मुनि' शब्द के समान, स्त्रीलिंग में 'मति' शब्द के समान और नपुंसक लिंग में वारि शब्द के समान चलते हैं। उकारान्त विशेषणों के रूप पुल्लिङ्ग में प्रभु शब्द की तरह और नपुंसक लिङ्ग में 'मधु' शब्द की तरह चलेंगे। स्त्रीलिङ्ग में 'उ' कार के शब्द एक 'ई' जोड़ा जाता है, जैसे, साधु—साध्वी। गुरु—गुर्वी। लघु—लघ्वी।

उदाहरण—बहवः नराः = बहुत से मनुष्य।
बह्व्यः स्त्रियः = बहुत सी स्त्रियाँ।
बहूनि फलानि = बहुत से फल।

(३) व्यञ्जनान्त विशेषण

विद्यावत्—learned	गुणिन्—meritorious
ज्ञानवत्—wise	धनिन्—rich
बलवत्—strong	तेजस्विन्—luminous
बुद्धिमत्—intelligent	विद्वस्—learned

इन शब्दों के रूप उद्देश्य (subject) के प्रकरण में बताये ही जा चुके हैं। इनका स्त्रीलिङ्ग रूप बनाने के लिये अन्त में एक 'ई' जोड़ देना चाहिये। जैसे, विद्यावत्—विद्यावती। गुणिन्—गुणिनी। किन्त विद्वस्—विदुषी।

उदाहरण-पु० - ज्ञानवान् पुरुषः = ज्ञानवान् पुरुष ।
स्त्री०—ज्ञानवती नारी = ज्ञानवती स्त्री ।
न० — ज्ञानवत् मित्रम् = ज्ञानवान् मित्र ।

पु०—तेजस्विनः छात्राः = तेजस्वी विद्यार्थी ।
स्त्री०—तेजस्विन्यः बालिकाः = तेजस्विनी बालिकाएँ ।
न० तेजस्वीनि नक्षत्राणि = तेजस्वी नक्षत्र ।

पु०—विद्वांसं पुरुषम् = विद्वान् पुरुष को ।
स्त्री—विदुषीं नारीम् = विदुषी नारी को ।

"उजला घोड़ा । घोड़ा उजला ।"

इन वाक्यों में 'उजला' विशेषण है, जिसका विशेष्य है 'घोड़ा' किन्तु प्रथम वाक्य में विशेषण संज्ञा के पहले आया है, और द्वितीय वाक्य में पीछे ।

पहले प्रकार के प्रयोग को विशेषण का Attributive use" कहते हैं, और दूसरे प्रकार के प्रयोग को "Predicative use" अंग्रेजी ग्रामर में विद्यार्थियों को यह बात मिली ही होगी ।

संस्कृत में भी इन दोनों रीतियों से विशेषण का प्रयोग कर सकते हैं । जैसे—

सुशीलः बालकः = सुशील लड़का ।
बालकः सुशीलः अस्ति = लड़का सुशील है ।

सुन्दरी बालिका = सुन्दर लड़की ।
बालिका सुन्दरी अस्ति = लड़की सुन्दर है ।

मधुरं फलम् = फल मीठा ।
फलं मधुरम् अस्ति = फल मीठा है ।

नोट—

(१) जिस तरह अंग्रेज़ी में comparative और superlative

degree बनाने के लिये adjective के बाद क्रमशः 'er' और 'est' जोड़ते हैं, उसी तरह संस्कृत में विशेषण के बाद 'तर' और 'तम' जोड़ते हैं।

जैसे, प्रियः = dear.

प्रियतरः = dearer.

प्रियतमः = dearest.

(२) यदि किसी विशेषण से उसका ठीक उलटा अर्थ वाला विशेषण बनाना हो, तो उसके पहले 'अ' लगा देना चाहिये।

जैसे, प्रियः—dear.

अप्रियः—not dear.

नोट—किन्तु यदि विशेषण का प्रथम वर्ण स्वर हो, तो उसके पहले 'अन्' लगाना पड़ता है।

जैसे, उत्तमः—good.

अनुत्तमः—not good.

वाक्य-रचना

लड़का अच्छा है = बालकः उत्तमः वर्त्तते।
लड़की अच्छी है = बालिका उत्तमा वर्त्तते।
पुस्तक अच्छी है = पुस्तकम् उत्तमं वर्त्तते।
विद्यार्थी चतुर है = विद्यार्थी चतुरः अस्ति।
दोनों विद्यार्थी चतुर हैं = विद्यार्थिनौ चतुरौ स्तः।
बहुत से विद्यार्थी चतुर हैं = बहवः विद्यार्थिनः चतुराः सन्ति।
पीले कपड़े चमकते हैं = पीतानि वस्त्राणि शोभन्ते।
पके हुये फल गिरते हैं = पक्वानि फलानि पतन्ति।
बड़ी नदियाँ बहती हैं = दीर्घाः नद्यः वहन्ति।
लड़का चतुर नहीं है = बालकः अचतुरः विद्यते।
लड़की चतुर नहीं है = बालिका अचतुरा विद्यते।

कपड़े उज्ज्वल नहीं हैं=वस्त्राणि अनुज्ज्वलानि विद्यते।
काले घोड़ों को देखो=कृष्णान् अश्वान् पश्य।
काले फलों को चखो=कृष्णानि फलानि आस्वादय।
काली गायों को ले आओ=कृष्णाः गाः आनय।
सिंह वलवान होता है=सिंहः वलवान भवति।
भैंस मज़बूत होती है= महिषी वलवती भवति।
लोहा मज़वूत होता है=लोहं वलवत् भवति।
लड़का दोनों में अधिक होशियार है=वालकः पटुतरः अस्ति।
लड़की सब से अधिक सुशील है=वालिका सुशीलतमा अस्ति।
हिमालय सब से ऊंचा पहाड़ है=हिमालयः उच्चतमः गिरिःअस्ति।
आम सब से मीठा फल है=आम्र मधुरतमं फलम् अस्ति।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

बहुत लड़के बुद्धिमान् हैं। मुनि लोग दयालु होते हैं। बाघ भयङ्कर जन्तु है। काले बादल बरस रहे हैं। सांप दुष्ट जीव है। तुम ज्यादे बेवकूफ हो। यह फूल अधिक सुगन्धित है। गङ्गाजल सबसे अधिक पवित्र होता है। बहुत सी पुस्तकें अच्छी नहीं हैं। विदुषी स्त्रियाँ आती हैं। बहुत सी उजली गायें चरती हैं। तरकारी स्वादिष्ट है। सिन्धु सब से बड़ी नदी है। मैं स्वस्थ नहीं हूँ।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

क्रोधिनः जनाः अन्धाः भवन्ति। वधिराः नराः न शृण्वन्ति। गजः स्थूलतमः पशुः। वृद्धाः पुरुषाः धीरतमा भवन्ति। तरुणाः पुरुषाः चञ्चलाः भवन्ति। कष्ठानि मृदूनि सन्ति। क्षत्रियाः शूरतमाः भवन्ति।

३. शुद्ध करो—

गोपालः दुर्बलमं अस्ति। जलं निर्मलः वर्त्तते। नभः स्वच्छः अस्ति।

मित्रः प्रियः भवति । सा विद्यावान् अस्ति । सा सुन्दरा वर्त्तते । स्त्रियः धनिनः सन्ति । नगराणि धनवन्तः सन्ति ।

४. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

आम्राणि..................भवन्ति । भारतीयाः..................भवन्ति । पुस्तकं..................वर्तते । बालिके..................स्तः । लता..................सन्ति । नवनीतं..................भवति । हिमाचला......गिरयः सन्ति ।

——

दूसरा पाठ

सार्वनामिक विशेषण

(१) यह अच्छा है। वह बुरा है।

(२) यह लड़का अच्छा है। वह लड़का बुरा है।

पहले दोनों वाक्यों में 'यह' और 'वह' किसी संज्ञा के बदले में आये हैं, अतएव 'सर्वनाम' हैं।

पिछले दोनों वाक्यों में 'यह' और 'वह' विशेष्य (लड़का) का गुण बतलाते हैं अतएव 'विशेषण' हैं।

ऐसे विशेषण सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। संस्कृत में ऐसे विशेषण बहुत-से हैं और वाक्य-रचना में उनका काम भी बहुत पड़ता है। इस पाठ में इन्हीं का विवरण दिया जाता है।

यह–इसके लिए संस्कृत में दो विशेषण हैं–

(१) इदम्,

(२) एतत्,

इन विशेषणों के रूप भिन्न-भिन्न लिङ्गों और वचनों में इस तरह होते हैं।

(१) इदम् (यह)

(क) कर्त्ता

	ए० व०	द्विव०	व० व०
पु०	अयं (बालकः) यह (लड़का)	इमौ (बालकौ) ये दोनों (लड़के)	इमे (बालकाः) ये (लड़के)
स्त्री०	इयं (बालिका) यह (लड़की)	इमे (बालिके) ये दोनों (लड़कियाँ)	इमाः (बालिकाः) ये (लड़कियाँ)
न०	इदं (पुष्पं) यह (फूल)	इमे (पुष्पे) ये दोनों (फूल)	इमानि (पुष्पाणि) ये (फूल)

(ख) कर्म

	ए० व०	द्विव०	ब० व०
पु०	इमं (बालकं) इस (लड़के) को	इमौ (बालकौ) इन दोनों (लड़कों) को	इमान् (बालकान् इन (लड़कों) को
स्त्री०	इमां (बालिकां) इस (लड़की) को	इमे (बालिके) इन दोनों (लड़कियों)को	इमाः (बालिकाः) इन (लड़कियों) को
न०	इदं (पुष्पं) इस (फूल) को	इमे (पुष्पे) इन दोनों (फूलों) को	इमानि (पुष्पाणि) इन (फूलों) को

(२) एतत् (यह)

(क) कर्त्ता

	ए० व०	द्विव०	ब० व०
पुं०	एषः (बालकः) यह (लड़का)	एतौ (बालकौ) ये दोनों (लड़के)	एते (बालकाः) ये (लड़के)
स्त्री०	एषा (बालिका) यह (लड़की)	एते (बालिके) ये दोनों (लड़कियाँ)	एताः (बालिकाः) ये (लड़कियाँ)
न०	एतत् (पुष्पं) यह (फूल)	एते (पुष्पे) ये दोनों (फूल)	एतानि (पुष्पाणि) ये (फूल)

(ख) कर्म

	ए० व०	द्विव०	ब० व०
पुं०	एतं (बालकं) इस (लड़के) को	एतौ (बालकौ) इन दोनों (लड़कों) कों	एतान् (बालकान्) इन (लड़कों) को
स्त्री०	एतां (बालिकां) इस (लड़की को)	एते (बालिके) इन दोनों (लड़कियों, को	एताः (बालिकाः) इन (लड़कियों) को
न०	एतत् (पुष्पं) इस (फूल) को	एते (पुष्पे) इन दोनों (फूलों) को	एतानि (पुष्पाणि) इन (फूलों) को

नोट—जब कोई वस्तु निकट हो तब 'इदम्' विशेषण का प्रयोग करना चाहिये। जैसे,

अयं वृक्षः, इयं लता, इदं गृहम्।

जब कोई वस्तु एकदम समीप में हो तब एतत् विशेषण का प्रयोग करना चाहिये। जैसे,

एषः ग्रन्थः; एषा लेखनी; एतत् फलम्।

वह—इसके लिये भी संस्कृत में दो विशेषण हैं—

(१) तत्
(२) अदस्

'तत्' शब्द के रूपों का वर्णन पहले ही हो चुका है।
(देखो, भाग १, अध्याय १, पाठ ४, पृ० १६.)
यहाँ 'अदस' शब्द के भिन्न-भिन्न रूप दिये जाते हैं—

अदस्—(क) कर्त्ता

	ए० व०	द्विव०	ब० व०
पु०	असौ (बालकः) वह (लड़का)	अमू (बालकौ) वे दोनों (लड़के)	अमी (बालकाः) वे (लड़के)
स्त्री०	असौ (बालिका) वह (लड़की)	अमू (बालिके) वे दोनों (लड़कियाँ)	अमूः (बालिकाः) वे (लड़कियाँ)
न०	अदः (पुष्पं) वह (फूल)	अमू (पुष्पे) वे दोनों (फूल)	अमूनि (पुष्पाणि) वे (फूल)

(ख) कर्म

	ए० व०	द्विव०	ब० व०
पुं०	अमुं (बालकं) उस (लड़के) को	अमू (बालकौ) उन दोनों (लड़कों) को	अमून् (बालकान्) उन (लड़कों) को
स्त्री०	अमूम् (बालिकां) उस (लड़की) को	अमू (बालिके) उन दोनों (लड़कियों को)	अमूः (बालिकाः) उन (लड़कियों) को
न०	अदः (पुष्पं) उस (फूल) को	अमू (पुष्पे) उन दोनों (फूलों) के	अमूनि (पुष्पाणि) उन (फूलों को)

नोट—(१) जब कोई वस्तु दूर में दिखाई पड़ती हो तब उसके लिये अदस् का प्रयोग करना चाहिये।

जब कोई वस्तु प्रत्यक्ष नहीं रहे तब उसके विषय में 'तत्' का प्रयोग करना चाहिये। जैसे,

असौ गिरिः = वह पहाड़ (सामने दिखाई देता है)

सः नृपः = वह राजा (जो इस समय यहाँ मौजूद नहीं है)

(२) 'सः' और 'एषः' के बाद यदि कोई व्यञ्जन वर्ण रहे, तो उनके विसर्गों का लोप कर दे सकते हैं। जैसे, स गच्छति, एष बालकः पठति।

* कौन—इसके लिये संस्कृत में 'किम्' शब्द आता है। यह प्रश्नवाचक विशेषण है।

---

१ * प्रश्नवाचक किम् अव्यय भी है जो अव्यय प्रकरण में दिखाया गया है।

इसके भिन्न-भिन्न रूप यों होते हैं—

		ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
पुं०	कर्त्ता	कः (बालकः) कौन (लड़का)	कौ (बालकौ) कौन दोनों (लड़के)	के (बालकाः) कौन (लड़के)
	कर्म	कम् (बालकं) किस (लड़के) को	कौ (बालकौ) किन दोनों (लड़कों) को	कान् (बालकान्) किन (लड़कों) को
स्त्री०	कर्त्ता	का (बालिका) कौन (लड़की)	के (बालिके) कौन दोनों (लड़कियाँ)	काः (बालिकाः) कौन (लड़कियाँ)
	कर्म	काम् (बालिकां) किस (लड़की) को	के (बालिके) किनदोंनों (लड़कियों) को	काः (बालिकाः) किन (लड़कियों) को
न०	कर्त्ता	किम् (पुष्पं) कौन (फूल)	के (पुष्पे) कौन दोनों (फूल)	कानि (पुष्पाणि) कौन (फूल)
	कर्म	किम् (पुष्पं) किस (फूल) को	के (पुष्पे) किन दोनों (फूलों) को	कानि (पुष्पाणि) किन (फूलों) को

जो—इसके लिये संस्कृत में 'यत्' शब्द आता है इसके रूप ठीक 'किम्' के समान ही होते हैं। उपर्युक्त कोष्ठक में सभी जगह 'क' के स्थान पर 'य' रख देने से ही 'यत्' के रूप बन जायँगे।

अपवाद—केवल 'किम्' के स्थान पर 'यत्' होता है।

नोट—

(१) सार्वनामिक विशेषणों के बाद 'एव' लगाने से वे निश्चयवाचक बन जाते हैं। जैसे,

स एव बालकः=वही लड़का.
एतत् एव फलम्=यही फल.
ताम् एव बालिकाम्=उसी लड़की को.

(२) 'किम्' के बाद 'चित्, या 'चन' लगाने से अनिश्चयवाचक विशेषण बन जाते हैं। जैसे,

किञ्चित राजा=कोई राजा.
†किञ्चित पुस्तकम्=कोई पुस्तक.
काञ्चन बालिकां=किसी लड़की को.

(३) 'सः' और 'एषः' के बाद यदि 'अ' छोड़कर और कोई भी वर्ण हो तो उनके विसर्ग का लोप कर सकते हैं। जैसे,

स बालकः=वह लड़का.
एष राजा=वह राजा।

(४) सार्वनामिक विशेषण जैसे हिन्दी में दुहराये जाते हैं, वैसे ही संस्कृत में भी दुहराये जा सकते हैं। जैसे,

के के बालकाः=कौन कौन लड़के।
यानि यानि फलानि=जो जो फल।

वाक्य-रचना

वह लड़का शान्त है=असौ बालकः शान्तः अस्ति।
ये दोनों लड़के चञ्चल हैं=इमौ बालकौ चञ्चलौ स्तः।

---

†किम् के बाद चित् लगाने से अल्पता भी सूचित होती है। जैसे,
किञ्चित् जलम्=थोड़ा पानी।
किञ्चित् द्रव्यम्=कुछ रुपया।
किम् के बाद अपि लगाने से भी अनिश्चयवाचक विशेषण बनता है। जैसे,
किमपि पुस्तकम्=कोई किताब।
कोऽपि राजा=कोई राजा।

व हराजा वीर था=स राजा वीरः आसीत्।
वह लड़की आती है = असौ वालिका आगच्छति।
ये फूल सुन्दर हैं=एतानि पुष्पाणि सुन्दराणि सन्ति।
ये पुस्तकें पुरानी हैं=तानि पुस्तकानि प्राचीनानि सन्ति।
यह गाय सीधी है=इयं गौः सरला अस्ति।
वह मर गया=स अम्रियत।
वे दोनों लड़कियाँ जाती हैं=अमू वालिके गच्छतः।
वे लड़के आते हैं=अमी वालकाः आगच्छन्ति।
वे लड़कियाँ आती हैं=अमूः वालिकाः आगच्छन्ति।
उन वृक्षों को देखो=अमून् वृक्षान् पश्य।
उन लताओं को देखो=अमूः लताः पश्य।
कोई राजा रहता था=कश्चित् राजा आसीत्।
कोई नगरी थी=काचित् नगरी आसीत्।
कोई चिट्ठी है=किमपि पत्रम् अस्ति।
वही लड़की थी=सा एव वालिका आसीत्।
वही गाँव है=स एव ग्रामः वर्त्तते।
वही पुस्तक है=तत् एव पुस्तकं वर्त्तते।
उसी पुस्तक को लाओ=तदेव पुस्तकं आनय।
उन्हीं फलों को लेलो=तानि एव फलानि गृहाण।
कौन मनुष्य आता है ?=कः नरः आगच्छति।
कौन चीज़ चाहते हो ?=किं वस्तु इच्छसि ?
आप कौन प्रश्न पूछते हैं ?=भवान कं प्रश्नं पृच्छति ?
तुम कौन-कौन सी पुस्तकें पढ़ते हो ?=कानि कानि पुस्तकानि पठसि ?

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद करो—

अमी बालकाः वेदं पठन्ति। असौ विप्रः मन्दिरं याति। कश्चित् अश्वम् आनय। ते छात्राः सफलाः अभवन्। ताः बालिकाः गृहम् आगच्छन्। इयं धेनुः दुग्धं ददाति। अमून् ग्रन्थान् पठ।

२. संस्कृत में अनुवाद करो—

किस पक्षी को देखते हो? वे लड़के चले गये। जो जो पुस्तकें मैं चाहता हूँ, वे ला दो। तुमने कौन-कौन से उत्तर लिखे? वे दोनों लड़कियाँ उस किताब को पढ़ती हैं। ये फूल नये हैं। वे फूल पुराने हैं। इन फलों को ले जाओ। उन फलों को लाओ। इन दोनों तारों को देखो। मैं गायों को देखता हूँ।

३. इनके अर्थों में क्या अन्तर है—

(क) अयं बालकः सुशीलः अस्ति
(ख) एषः बालकः सुशील अस्ति

(क) अहं तानि पुस्तकानि पठामि
(ख) अहम् अमूनि पुस्तकानि पठामि

४. शुद्ध करो—

अमी स्त्रियः आगच्छन्ति। अमुः बालकान् पश्य। अमूं छात्रं ताडय। अमूं पुष्पं जिघ्र। अहं अमूं लतां पश्यामि। अयं पुष्पं शोभते। इदं वृक्षः उच्चतमः। इदानि फलानि स्वादूनि वर्त्तन्ते।

तीसरा पाठ

संख्यावाचक विशेषण

"दो लड़के आते हैं। तीन लड़कियाँ जाती हैं।"

उपर्युक्त वाक्यों में 'दो' और 'तीन' शब्द संख्यावाचक विशेषण हैं। इसी तरह संस्कृत में भी—

"द्वौ वालकौ आगच्छतः तिस्रः वालिकाः आगच्छन्ति।"

यहाँ 'द्वौ' और 'तिस्रः' संख्यावाचक विशेषण हैं।

अधिकांश विद्यार्थियों में यह दोष पाया जाता है कि वे संस्कृत में संख्याओं के नाम शुद्ध-शुद्ध नहीं जानते। इसी कमी को पूरा करने के लिये इस पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ जाना चाहिये।

नीचे संख्याओं के नाम दिये जाते हैं—

१ एक	१५ पञ्चदशन्	२९ नवविंशति
२ द्वि	१६ षोडशन्	३० त्रिंशत्
३ त्रि	१७ सप्तदशन्	३१ एकत्रिंशत्
४ चतुर	१८ अष्टादशन्	३२ द्वात्रिंशत
५ पञ्चन्	१९ ऊनविंशति	३३ त्रयस्त्रिंशत्
६ षष्ठ	२० विंशति	३४ चतुस्त्रिंशत्
७ सप्तन्	२१ एकविंशति	३५ पञ्चत्रिंशत्
८ अष्टन्	२२ द्वाविंशति	३६ षट्त्रिंशत्
९ नवन्	२३ त्रयोविंशति	३७ सप्तत्रिंशत
१० दशन्	२४ चतुर्विंशति	३८ अष्टत्रिंशत
११ एकादशन्	२५ पञ्चविंशति	३९ नवत्रिंशत
१२ द्वादशन्	२६ षड् विंशति	४० चत्वारिंशत्
·३ त्रयोदशन्	२७ सप्तविंशति	४१ एकचत्वारिंशत
१४ चतुर्दशन्	२८ अष्टाविंशति	४२ द्वाचत्वारिंशत

४३ त्रिचत्वारिंशत्
४४ चतुश्चत्वारिंशत
४५ पञ्चचत्वारिंशत्
४६ पट् चत्वारिंशत्
४७ सप्तचत्वारिंशत्
४८ अष्टचत्वारिंशत्
४९ नवचत्वारिंशत्
५० पञ्चाशत्
५१ एकपञ्चाशत्
५२ द्वापञ्चाशत्
५३ त्रिपञ्चाशत
५४ चतुः पञ्चाशत्
५५ पञ्चपञ्चाशत्
५६ पट्पञ्चाशत्
५७ सप्तपञ्चाशत्
५८ अष्टपञ्चाशत्
५९ नवापञ्चाशत्
६० षष्टि
६१ एकषष्टि
६२ द्वाषष्टि
६३ त्रिषष्टि
६४ चतुः षष्टि
६५ पञ्चषष्टि
६६ पट्षष्टि
६७ सप्तषष्टि

६८ अष्टषष्टि
६९ नवषष्टि
७० सप्तति
७१ एक सप्तति
७२ द्वासप्तति
७३ त्रिसप्तति
७४ चतुः सप्तति
७५ पञ्चसप्तति
७६ पट्सप्तति
७७ सप्तसप्तति
७८ अष्टसप्तति
७९ नवसप्तति
८० अशीति
८१ एकाशीति
८२ द्वयशीति
८३ त्र्यशीति
८४ चतुरशीति
८५ पञ्चाशीति
८६ षडशीति
८७ सप्ताशीति
८८ अष्टाशीति
८९ नवाशीति
९० नवति
९१ एकनवति
९२ द्वानवति

९३ त्रिनवति
९४ चतुर्नवति
९५ पञ्चनवति
९६ षण्णवति
९७ सप्तनवति
९८ अष्टनवति
९९ नवनवति
१०० शत
१०१ एकाधिकशत
१०२ द्व्यधिकशत
१०३ त्र्यधिकशत
१०४ चतुरधिकशत
१०५ पञ्चाधिकशत
११० दशाधिकशत
२०० द्विशत
३०० त्रिशत
५०० पञ्चशत
१००० सहस्र
१०००० अयुत (दस हजार)
१००००० लक्ष (लाख)
१०००००० प्रयुत
(दस लाख)
१००००००० कोटि
(करोड़)

इन संख्याओं का प्रथमा विभक्ति में व्यवहार करने के लिये निम्नलिखित बातों को स्मरण रखना चाहिये—

(१) 'एक' शब्द सदा एकवचन होता है। पुल्लिंग में 'एकः' स्त्रीलिंग में 'एका' और नपुंसकलिंग में 'एकम्' हो जाता है। जैसे,

एकः बालकः = एक लड़का।
एका बालिका = एक लड़की।
एकं फलम् = एक फल।

(२) 'द्वि' शब्द सदा द्विवचन होता है। पुल्लिंग में 'द्वौ' स्त्रीलिंग और नपुंसकलिङ्ग में 'द्वे' हो जाता है। जैसे—

द्वौ बालकौ = दो लड़के।
द्वे बालिके = दो लड़कियाँ।
द्वे फले = दो फल।

(३) 'त्रि' शब्द (और इससे आगे की सभी संख्याएँ) सदा बहुवचन होता है। पुल्लिङ्ग में 'त्रयः,' स्त्रीलिङ्ग मे 'तिस्रः' और नपुंसक लिङ्ग में 'त्रीणि' हो जाता है। जैसे—

त्रयः बालकाः = तीन लड़के।
तिस्रः बालिकाः = तीन लड़कियाँ।
त्रीणि फलानि = तीन फल।

(४) 'चतुर्' शब्द का रूप पुल्लिङ्ग में 'चत्वारः,' स्त्रीलिङ्ग में चतस्रः' और नपुंसक लिङ्ग में 'चत्वारि' हो जाता है। जैसे—

चत्वारः बालकाः = चार लड़के।
चतस्रः बालिकाः = चार लड़कियाँ।
चत्वारि फलानि = चार फल।
चतुरः बालकान् = चार लड़कों को।

(५) 'पञ्चम' शब्द से लेकर आगे की जितनी संख्याएँ हैं, वे सभी लिङ्गों में एक समान रहती हैं। जैसे—

पञ्च बालकाः = पाँच लड़के।

पञ्च बालिकाः = पाँच लड़कियां।

पञ्च फलानि = पाँच फल।

इन संख्याओं के प्रयोग के विषय में ये बातें जाननी चाहिये—

(क) 'पञ्चन्' प्रभृति जितने नकारान्त शब्द हैं उनका 'न्' हटा कर प्रयोग किया जाता है। जैसे—

पञ्च पितरः = पाँच पितर। दश रात्रयः = दस रातें।

षोडश दिनानि = सोलह दिन

अपवाद—'अष्टन्' से 'अष्टौ' हो जाता है। जैसे, अष्टौ बालकाः। अष्टौ बालिकाः। अष्टौ फलानि।

(ख) ऊनविंशति से लेकर नवनवति पर्य्यन्त जितने इकारान्त शब्द हैं, उनका रूप सदा एकवचन में (स्त्रीलिंग 'मति' शब्द की तरह) चलता है। जैसे—

विंशतिः स्त्रियः = बीस स्त्रियाँ।

अशीतिः जनाः = अस्सी मनुष्य।

नवतिः रौप्यकानि = नब्बे रुपये।

(ग) त्रिंशत प्रभृति जितने तकारान्त शब्द हैं उनका रूप सदा एकवचन में (स्त्रीलिंग 'सरित्' की तरह) चलता है। जैसे—

त्रिंशत् वर्षाः = तीस वर्ष।

पञ्चाशत् रौप्यकानि = पचास रुपया।

सप्तचत्वारिंशत् धेनवः = सैंतालीस गायें।

(घ) 'शत' 'सहस्र' और 'लक्ष' सदा नपुंसक एकवचनान्त होते हैं। 'कोटि' शब्द स्त्रीलिंग एकवचनान्त होता है। जैसे,

शतं बालकाः = सौ लड़के।

सहस्रं रौप्यकानि = हजार रुपये।

कोटिः प्रजाः = करोड़ प्रजाएं।

पूरणवाचक संख्या (Ordinal Numbers)

१ ला—प्रथम*	११ वाँ—एकादश	३० वाँ--त्रिंशत्तम
२ रा—द्वितीय*	१२ वाँ—द्वादश	४० वाँ--चत्वारिंशत्तम
३ रा—तृतीय*	१३ वाँ—त्रयोदश	५० वाँ--पञ्चाशत्तम
४ था—चतुर्थ	१४ वाँ—चतुर्दश	१०० वाँ--शततम
५ वाँ—पञ्चम	१५ वाँ--पञ्चदश	१००० वाँ--सहस्रतम
६ ठा—षष्ठ	१६ वाँ--षोडश	लाखवां--लक्षतम
७ वाँ—सप्तम	१७ वाँ—सप्तदश	करोड़वां--कोटितम
८ वाँ—अष्टम	१८ वाँ—अष्टादश	
९ वाँ—नवम	१९ वाँ—ऊनविंशतितम	
१० वाँ—दशम	२० वाँ--विंशतितम्	

ऊनविंशति से लेकर आगे की सभी संख्याओं में 'तम' लगा कर पूरणवाचक संख्या बनाई जाती है।

नोट—इन शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग और नपुंसक में क्रमशः 'बालक' और 'फल' की तरह चलते हैं।

स्त्रीलिंग बनाने के लिये चिह्नाङ्कित शब्दों में 'आ' लगा कर बाकी सभी शब्दों के अन्त में 'ई' जोड़ देते हैं। जैसे,

प्रथमा परीक्षा=पहली परीक्षा।

तृतीया रात्रिः=तीसरी रात।

किन्तु—चतुर्थी तिथिः=चौथी तिथि।

एकविंशतितमी बालिका=इक्कीसवां लड़की।

वाक्य--रचना

नीचे की वाक्यावली पर विद्यार्थियों को अच्छी तरह ध्यान देना चाहिये—

एक लड़का जाता है=एकः बालकः गच्छति।

दो लड़के जाते हैं=द्वौ बालकौ गच्छतः।
दोनों लड़के जाते हैं=उभौ बालकौ गच्छतः।
दोनों लड़कियाँ जाती हैं=उभे बालिके गच्छतः।
सभी विद्यार्थी पढ़ते हैं=सर्वे विद्यार्थिनः पठन्ति।
सभी स्त्रियाँ जाती हैं—सर्वाः स्त्रियः गच्छन्ति।
सभी फल ले लो=सर्वाणि फलानि गृहाण।
मैं हजार रुपया दूंगा=अहं सहस्रं रौप्यकानि दास्यामि।
तुम सौ वर्ष जीओ=त्वं शतं वर्षान् जीव।
चालीसवाँ पृष्ठ पढ़ो=चत्वारिंशत्तमं पृष्ठं पठ।
चार लड़कों को पूछो=चतुरः बालकान् पृच्छ।
तीन लड़कियाँ गाती हैं=तिस्रः बालिकाः गायन्ति।
तीन लड़कियों से पूछो=तिस्रः बालिकाः पृच्छ।
तीन फल खाओ=त्रिणि फलानि खाद।
बीसवें लड़के को पूछो=विंशतितमं बालकं पृच्छ।
बीसवें चित्र को देखो=विंशतितमं चित्रं पश्य।
कितने लड़के हैं ?=कति बालकाः सन्ति।
दो सौ लड़के हैं=द्विशतं बालकाः सन्ति।
यह १९३० ई० है=अयं त्रिंशदधिकोनविंशतिशततमः संवत्सरः।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

मेरी छः पुस्तकें हैं। उसके आठ लड़के हैं। पाँच सौ आदमी आये। मैं चौबीस रुपये देता हूँ। पचास लड़कियाँ पढ़ती हैं। इस पाठशाला में (अस्यां पाठशालायां) चार सौ साठ लड़के हैं। ग्यारह अध्यापक हैं। लाइब्रेरी में (पुस्तकालये) दो हज़ार पुस्तकें हैं। बगीचे में (उपवने)

आठ सौ नवासी पेड़ हैं। चौआलीस मालाएँ लाओ। भारतवर्ष में (भारतवर्षे) तैंतीस करोड़ मनुष्य बसते हैं। यह बीसवीं शताब्दी है।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

मम चत्वारि मित्राणि सन्ति। तत्र त्रयः भ्रातरः सन्ति। तस्याः तिस्रः स्वसारः वर्त्तन्ते। तस्य द्वौ भ्रातरौ स्तः। अस्माकं द्वे गृहे वर्त्तेते। तेषां दशसहस्रं रौप्यकानि विद्यन्ते।

३. शुद्ध करो—

चत्वारः बालकान् पश्यामि। चत्वारः फलानि गृहाण। त्रयः स्त्रियः गच्छन्ति। अष्टाः मनुष्याः आगच्छन्ति। विंशतयः बालका पठन्ति। सहस्रान् जनान् पश्य। शतानि पुस्तकानि पठ।

चौथा पाठ

सम्बन्ध-पद

"राम का घोड़ा चरता है। गोपाल की पुस्तक अच्छी है।"

ऊपर के वाक्यों में 'राम' और 'गोपाल' दोनों संज्ञा हैं। परन्तु ये उद्देश्य (Subject) नहीं हैं, उद्देश्य के प्रस्तार हैं।

किसका घोड़ा ?—राम का।
किसकी पुस्तक ?—गोपाल की।

यहाँ 'राम की' और 'गोपाल की' ये दोनों सम्बन्ध-पद विशेषण का काम करते हैं।

संस्कृत में भी इसी तरह सम्बन्ध-पद का व्योहार होता है। जिस तरह हिन्दी में 'का' 'के' 'की' आदि लगाकर सम्बन्ध-पद बनाते हैं, उसी तरह संस्कृत में 'स्य' आदि विभक्ति जोड़कर सम्बन्ध-पद बनाते हैं।

स्मरणीय—यहाँ एक बात ऐसी है जिसमें हिन्दी से संस्कृत में भेद पड़ता है। हिन्दी में कहते हैं "राम का लड़का। राम की लड़की। राम के लड़के"

अर्थात् आगे की संज्ञा का जो लिङ्ग-वचन रहता है, सम्बन्ध के चिह्न में भी लिङ्ग-वचन हो जाता है। पर संस्कृत में आगे की संज्ञा चाहे जिस लिङ्ग या वचन में हो, सम्बन्ध की विभक्ति ज्यों-की त्यों रहेगी। जैसे,

रामस्य पुत्रः। रामस्य पुत्री। रामस्य पुत्राः

सम्बन्ध का चिह्न लगने पर किस संज्ञा का कैसा रूप हो जाता है, और वाक्य में उसका किस तरह प्रयोग होता है, यही इस पाठ में बताया जाता है।

सम्बन्ध-सद बनाने की रीति

१. स्वरान्त शब्द

(क) एकवचन

(१) अकारान्त शब्द के अन्त में 'स्य' जोड़ देना चाहिये। जैसे, (पु०) राम+स्य=रामस्य=राम का। (न०) जल+स्य=जलस्य=जल का।

(२) आकारान्त (स्त्री) शब्द के अन्त में 'याः' जोड़ देना चाहिये। जैसे, लता+याः लतायाः=लता का।

(३) इकारान्त शब्द का 'इ' हटाकर उसकी जगह 'एः' कर देना चाहिये। जैसे, (पु०) मुनि—मुनेः=मुनि का। (स्त्री०) मति—मतेः=मति का।

नोट—(१) 'पति' से 'पत्युः' और 'सखि' से 'सख्युः' होता है।

(२) नपुंसक लिङ्ग में शब्द के बाद 'नः' जोड़ा जाता है। जैसे, वारि—वारिणः=पानी का।

(४) ईकारान्त (स्त्री०) शब्द का 'ई' हटाकर उसकी जगह 'याः' कर देना चाहिये। जैसे, नदी—नद्याः=नदी का।

नोट—श्री, स्त्री, धी, सुधी, (पु०) इन शब्दों के रूप सम्बन्ध में वे ही होंगे, जो कर्त्ता बहुवचन में होते हैं। जैसे, स्त्री-स्त्रियः।

(५) उकारान्त शब्द का 'उ' हटाकर उसकी जगह 'ओः' कर देना चाहिये। जैसे—(पु०) साधु—साधोः=साधु का। (स्त्री०) धेनु—धेनोः=गाय का।

नोट—नपुंसकलिंग में शब्द के बाद 'नः' जोड़ देना चाहिये। जैसे, मधु—मधुनः=मधु का।

(६) ऊकारान्त (स्त्री०) शब्द का 'ऊ' हटाकर उसकी जगह 'वाः' जोड़ देना चाहिये। जैसे, वधू—वध्वाः=वहू का।

नोट—'भू' प्रभृति का रूप सम्बन्ध में वही होता है जो कर्त्ता बहुवचन में। जैसे, भुवाः=पृथ्वी का। स्वयम्भुवः=ब्रह्मा का।

(७) ऋकारान्त शब्द का 'ऋ' हटाकर उसकी जगह 'उः' जोड़ देना चाहिये। जैसे, (पु०) पितृ—पितुः=पिता का। (स्त्री०) मातृ—मातुः=माता का।

नोट—गो, नौ, शब्दों के रूप क्रमशः 'गोः' और 'नावः' होते हैं। जैसे, गोः—गाय का। नावः=नाव का।

(ख) द्विवचन

शब्दों के अन्त में 'ओः' जोड़ देने से द्विवचन सम्बन्ध-पद बन जाता है। जैसे,

मुनि+ओः=मुन्योः*=दो मुनियों का।

गुरु+ओः=गुर्वोः=दो गुरुओं का।

नदी+ओः=नद्योः=दो नदियों का।

बधू+ओः=वध्योः=दो बहुओं का।

भ्रातृ+ओः=भ्रात्रोः=दो भाइयों का।

गो+ओः=गवोः=दो गायों का।

अपवाद—अकारान्त पुल्लिंग और आकारान्त-स्त्रीलिङ्ग शब्दों में 'ओः' के बदले 'योः' लगाया जाता है। जैसे,

वालकयोः=दो लड़कों का। बालिकयोः=दो लड़कियों का।

---

*विद्यार्थियों को हिंन्दी-व्याकरण में सन्धि के साधारण नियम मिल ही चुके होंगे, अतएव इन रूपों को समझने में कठिनता नहीं होगी।

नोट—आकारान्त शब्द 'योः' लगने से पहले अकारान्त बन जाते हैं। जैसे,

लता-लतयोः=दो लताओं का। बालिकयोः=दो लड़कियों का।

(ग) बहुवचन

शब्दों के अन्त में 'नाम' जोड़ देने से बहुवचन सम्बन्ध-पद बन जाता है। जिन शब्दों के अन्त में ह्रस्व स्वर रहता है, उनमें 'नाम्' के लगने के पहले, दीर्घ स्वर हो जाता है। अर्थात् अ के बदले, आ, इ के बदले ई, उ के बदले ऊ, और ऋ के बदले ॠ हो जाता है।

बालक+नाम्=बालकानाम्=लड़कों का।
बालिका+नाम्=बालिकानाम्=लड़कियों का।
मुनि+नाम्=मुनीनाम्=मुनियों का।
साधु+नाम्=साधूनाम्=साधुओं का।
भ्रातृ+नाम्=भ्रातॄणाम्*=भाइयों का।

नोट—(१) 'सर्व' और 'पर' शब्दों के रूप क्रमशः 'सर्वेषाम्' (सबों का) और 'परेषाम्' (दूसरों का) होते हैं।

(२) 'गो', 'नौ' प्रभृति शब्दों में केवल 'आम्' लगता है। जैसे, गवाम्=गायों का। नवाम्=नावों का।

(३) स्त्री, श्री और धी से क्रमशः स्त्रियाम्, श्रियाम्, धियाम्, रूप होते हैं।

२. व्यञ्जनान्त शब्द

व्यञ्जनान्त शब्दों से सम्बन्ध-पद बनाने के लिये यह नुसखा याद कर लेना चाहिये।

---

*'ऋ' के बाद अव्यवहित 'न' आने से 'मूर्द्धन्य' 'ण' बन जाता है। जैसे, दातृ+नाम्=दातॄणाम्।

ए० व०	द्वि०	ब० व०
अः	ओः	आम्

सम्राजः [सम्राट् का] सम्राजोः [दो सम्राटों का] सम्राजाम् [सम्राटों का]।

नोट—नुसखा लगाने से पूर्व इन शब्दों के रूप बदल जाते हैं—

'विद्वस्' से 'विदुष्' 'पुमस'—से 'पुंस', 'युवन्' से 'यून्' 'राजन्' से 'राज्ञ' 'पथिन्' से 'पथ्' और 'महिमन्' प्रभृति से 'महिम्न्' प्रभृति हो जाते हैं। जैसे,

विदुषः = विद्वान् का। पुंसोः = दो पुरुषों का। राज्ञाम् = राजाओं का।

३. सर्वनाम

सर्वनामों से सम्बन्ध-पद बनाने की रीति नीचे दिखाई जाती है।

		ए० व०		द्वि०		ब० व०	
उ०		मम मेरा		आवयोः हम दोनों का		अस्माकम् हम लोगों का	
म०		तव तुम्हारा	भवतः आपका	युवयोः तुमदोनों का	भवतोः आपदोनों का	युष्माकम् तुम लोगों का	भवताम् आपलोगों का
प्र०	पुं. न.	तस्य उस (पुरुष का वस्तु) का		तयोः उन दोनों का		तेषाम् उन लोगों का	
प्र०	स्त्री.	तस्याः उस (स्त्री) का		तयोः उन दोनों का		तासाम् उन लोगों का	

		ए० व०	द्विव०	व० व०
१. इदम्	पुं. न.	अस्य इस (पुरुष या वस्तु) का	अनयोः इन दोनों का	एषाम् इनका
	स्त्री.	अस्या इस (स्त्री) का	अनयोः इन दोनों का	आसाम् इनका
२. एतत्	पुं. न.	एतस्य इन (पुरुष या वस्तु) का	एतयोः इन दोनों का	एतेषाम् इनका
	स्त्री.	एतस्याः इस (स्त्री) का	एतयोः इन दोनों का	एतासाम् इनका
३. किम्	पुं. न.	कस्य किस (पुरुष या वस्तु) का	कयोः किन दोनों का	केषाम् किनका
	स्त्री.	कस्याः किस (स्त्री) का	कयोः किन दोनों का	कासाम् किनका
४. यत्	पुं. न.	यस्य जिस (पुरुष या वस्तु) का	ययोः जिन दोनों का	येषाम् जिनका
	स्त्री.	यस्याः जिस (स्त्री) का	ययोः जिन दोनों का	यासाम् जिनका

वाक्य-रचना

गोपाल का पिता आता है = गोपालस्य पिता आगच्छति ।
मेरी गाय चरती है = मम गौः चरति ।
तुम्हारी पुस्तकें नई हैं = तव पुस्तकानि नवीनानि सन्ति ।
उसका लड़का मेरा मित्र है = तस्य पुत्रः मम मित्रम् अस्ति ।
राजा के लड़के को देखो = राज्ञः पुत्रं पश्य ।
हमलोगों की परीक्षा होगी = अस्माकं परीक्षा भविष्यति ।
यह पुस्तक किसकी है ? = इदं पुस्तकं कस्य वर्त्तते ।
यह इन दोनों लड़कों की है = इदम् अनयोः वालकयोः अस्ति ।
स्त्रियों की शिक्षा उचित है = स्त्रियां शिक्षा उचिता ।
अच्छे लड़कों की संगति करो = सतां बालकानां संगतिं कुरु ।
विद्वान् लोगों का आदर करो = विदुषां जनानाम् आदरम् कुरु ।
युवा पुरुषों की सभा है = यूनां पुंसां सभा वर्त्तते ।

इदम् अस्य गृहं वर्त्तते = यह इस (पुरुष) का घर है ।
इदम् अस्याः गृहं वर्त्तते = यह इस (स्त्री) का घर है ।
तस्य वालकस्य भ्राता गच्छति = उस लड़के का भाई जाता है ।
तस्याः वालिकायाः भ्राता आगच्छति = उस लड़की का भाई आता है ।

कस्याः कन्या विद्यते = किस (स्त्री) की लड़की है ।
कस्य कन्या विद्यते = किस (पुरुष) की लड़की है ।
केषां पुष्पाणां सुगन्धः अस्ति = किन फूलों की सुगन्धि है ।
गुणवतां नराणाम् आदरः भवति = गुणवान् मनुष्यों का आदर होता है ।

एतासां स्त्रियां कः ग्रामः = इन स्त्रियों का गाँव कौन है ?
सर्वेषां जनानाम् उपकारं कुरु = सभी मनुष्यों का उपकार करो ।

अभ्यास

१. संस्कृत म अनुवाद करो—

नदी का जल स्वच्छ है। उसका मकान नया है। मेरे कपड़े मैले हैं। हम लोगों की किताब कौन है? महात्माओं का वचन सुनो। दूसरों की वस्तु मत लो। गुरु की सेवा धर्म है। राजा की आज्ञा होती है। मेरी इच्छा होती है। हम दोनों का आचरण अच्छा (सत्) है। पेड़ के पत्ते हिलते हैं। स्कूल के लड़के पढ़ते हैं।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

तासां पुस्तकानि सन्ति। आवयोः मित्रम् आगच्छति। तयोः राज्ञोः संग्रामः अभवत्। तस्य विद्या नास्ति। युष्माकं गुरुः आगच्छति। अस्माकं कुशलं वर्त्तते। तेषां छात्राणां पाठशालां पश्य। तस्य पत्रं पठ। तस्याः कन्या अम्रियत। भगवतः भजनं कुरु।

३. शुद्ध करो—

विद्वानस्य वचनं अस्ति। मुनिनां कुटी वर्त्तते। पितुस्य गृहं गच्छामि। अस्य पथस्य अन्तः वर्त्तते। बालकाणां पाठशाला अस्त। एतेषां बालिकानां पुस्तकानि सन्ति। तव पतेः भ्राता आगच्छति। तस्याः त्रयः पुत्राः सन्ति।

४. इनके अर्थों में क्या अन्तर है—

(क) तस्य दास्याः गृहम् अस्ति।
(ख) तस्याः दास्याः गृहम् अस्ति।

(क) स धेनोः रक्षकः अस्ति।
(ख) स धेन्वोः रक्षकः अस्ति।

(क) आसां माता गच्छति।
(ख) एषां माता गच्छति।

———

पाँचवाँ पाठ

वर्त्तमानकालिक कृदंत विशेषण

(१) दौड़ता हुआ सवार गिर पड़ा।

(२) बोलता हुआ सुग्गा उड़ गया।

इन वाक्यों में सूक्ष्मलिखित शब्द यद्यपि क्रिया से बने हुए हैं, तथापि विशेषण की तरह प्रयुक्त हुए हैं। इस तरह के विशेषणों को अँगरेज़ी में Participial Adjective और संस्कृत में कृदन्त विशेषण कहते हैं।

हिन्दी में जिस तरह क्रिया के बाद 'ता हुआ' जोड़कर विशेषण बनाते हैं, संस्कृत में उसी तरह 'त्' जोड़ कर विशेषण बनाते हैं।

नोट—'त्' जोड़ने से पहले क्रियाओं के वही रूप हो जाते हैं जो वर्त्तमानकालिक 'न्ति' जोड़ने के पहले। जैसे 'गम्' में 'त्' जोड़ना हो तो इस तरह करना होगा।

गम् + त् = गच्छ + त् = गच्छत् = जाता हुआ।

दृश + त् = पश्य + त् = पश्यत् = देखता हुआ।

आत्मनेपदी धातुओं में 'त्' के बदले 'मान' जोड़ कर विशेषण बनाते हैं।

नोट—'मान' जोड़ने से पहले क्रियाओं के वही रूप हो जाते हैं जो वर्त्तमानकालिक 'न्ते' जोड़ने के पहले। जैसे,

वृत् + मान = वर्त्त + मान = वर्त्तमान = होता हुआ।

त्रै + मान = त्राय + मान = त्रायमान = रक्षा करता हुआ।

"जाता हुआ लड़का। जाती हुई लड़की। जाते हुए लड़के।" इन प्रयोगों से स्पष्ट होता है कि—

(१) कृदन्त विशेषण का वही लिङ्ग होता है जो उसके विशेष्य का।

(२) कृदन्त विशेषण का वही वचन होता है जो उसके विशेष्य का।

संस्कृत में भी ठीक यही नियम समझना चाहिये।

गच्छन् बालकः = जाता हुआ लड़का।

गच्छन्ती बालिका = जाती हुई लड़की।

गच्छन्तः बालकाः = जाते हुए लड़के।

गच्छन्त्यः बालिकाः = जाती हुई लड़कियाँ।

नोट—संस्कृत में जो उद्देश्य की विभक्ति होती है, विशेषण की भी वही विभक्ति होती है। जैसे,

गच्छन्तं बालकं पश्य = जाते हुए लड़के को देखो।

गच्छतः राज्ञः वस्त्रं पश्य = जाते हुए राजा की पोशाक देखो

नीचे कुछ धातुओं से कृदन्त विशेषण बनाकर दिखाये जाते हैं—

परस्मैपद

धातु—कृदन्त विशेषण	धातु—कृन्दत विशेषण
गम्—गच्छत् (going)	हस्—हसत् (laughing)
दृश्—पश्यत् (seeing)	वद—वदत् (speaking)
स्था—तिष्ठत् (staying)	पठ्—पठत् (reading)
घ्रा—जिघ्रत् (smelling)	लिख्—लिखत् (writing)
पा—पिबत् (drinking)	स्मृ—स्मरत् (remembering)
जि—जयत् (conquering)	भू—भवत् (being)
नी—नयत् (carrying)	खाद्—खादत् (eating)
इष्—इच्छत् (wishing)	स्पृश्—स्पृशत् (touching)
पृच्छ्—पृच्छत् (asking)	गै—गायत् (singing)

आत्मनेपद

धातु—कृदन्त विशेषण	धातु—कृदन्त विशेषण
सेव्—सेवमान (serving)	शिक्ष्—शिक्षमाण (learning)
काप्—कम्पमान (trembling)	यज्—यजमान (sacrificing)
विद्—विद्यमान (being)	शङ्क्—शङ्कमान (doubting)
वृत्—वर्तमान (being)	त्रै—त्रायमाण (protecting)
खिद्—खिद्यमान (suffering)	मुद्—मोदमान (rejoicing)
भाष्—भाषमाण (speaking)	युध—योधमान (fighting)
यत्—यतमान (trying)	डी—डीयमान (flying)
ईक्ष्—ईक्षमान (seeing)	मृ—म्रियमाण (dying)
सह्—सहमान (bearing)	शुभ—शोभमान (shining)

नोट—"इन विशेषणों के रूप भिन्न-भिन्न लिङ्गों में कैसे चलेंगे," यह समझने के लिये नीचे लिखी हुई बातों पर ध्यान देना चाहिये—

(क) परस्मैपद में—

(१) पुल्लिङ्ग के रूप व्यञ्जनान्त शब्दों के प्रकरण में दिये जा चुके हैं [देखो, तकारान्त, नं० २] जैसे,

गच्छन् गच्छन्तौ गच्छन्तः

(२) नपुंसक लिङ्ग के रूप भी व्यञ्जनान्त शब्द के प्रकरण में दिये जा चुके हैं (देखो, तकारान्त, नपुंसक)। जैसे,

गच्छत्, गच्छती, गच्छन्ति।

(३) स्त्रीलिङ्ग विशेषण बनाने के लिये 'त्' के पहले 'न' जोड़कर अन्त में ई लगा देना चाहिये। जैसे,

गच्छत्—गच्छन्ती। पश्यत्—पश्यन्ती।

इन शब्दों के रूप ईकारान्त 'नदी' की तरह चलेंगे।

(ख) आत्मनेपद में—

(१) पुल्लिङ्ग विशेषण के रूप अकारान्त 'बालक' की तरह चलेंगे जैसे. सेवामानः. सेवमानौ, सेवमानाः।

(२) नपुंसकलिंग विशेषण के रूप अकारान्त 'फल' की तरह चलेंगे। जैसे, सेवमानं, सेवमाने, सेवमानानि।

(३) स्त्रीलिंग विशेषण बनाने के लिये 'मान' के बाद एक 'आ' जोड़ देना चाहिये। जैसे,

सेवमान—सेवमाना। कम्पमान—कम्पमाना।

इन शब्दों के रूप आकारान्त 'लता' की तरह चलेंगे।

स्मरणीय—

(क) इन धातुओं से स्त्रीलिंग विशेषण बनाने के लिये 'न्ती' के बदले 'ती' जोड़ना चाहिये। बाकी नियम वही रहेंगे।

प० धातु	स्त्री० वि०	प० धातु	स्त्री० वि०
कृ—कुर्वत	कुर्वती	रुद्—रुदत्	रुदती
दा—ददत्	ददती	ज्ञा—जानत्	जानती

(ख) इन धातुओं से विशेषण बनाने के लिय 'मान' के बदले 'आन' जोड़ना चाहिये। शेष नियम पूर्ववत् समझना चाहिये।

आ. धातु	कृ० विशेषण	आ. धातु	कृ० विशेषण
कृ—	कुर्वाण	शी—	शयान
दा—	ददान	भुज्—	भुञ्जान

नोट—आस् (बैठना) से 'आसीन' रूप बनता है। जैसे, आसीनः पुरुषः = बैठा हुआ मनुष्य। आसीना बालिका = बैठी हुई लड़की।

वाक्य-रचना

दौड़ता हुआ लड़का गिर पड़ा = धावन् बालकः अपतत्।
दौड़ती हुई गाय आती है = धावन्ती गौः आगच्छति।
दौड़ती हुई गाड़ी जाती है = धावत् शकटं गच्छति।
दो गाते हुए लड़के आते हैं = गायन्तौ बालकौ आगच्छतः।
गाते हुए पक्षियों को देखो = गायतः पक्षिणः पश्य।

गाता हुई स्त्रियाँ जाती हैं=गायन्त्यः स्त्रियः गच्छन्ति।
काँपता हुआ शरीर गिर पड़ा=कम्पमानं शरीरम् अपतत्।
लड़ते हुये सिपाही मर गये=योधमानाः सैनिकाः अम्रियन्त।
बैठा हुआ लड़का लिखता है=आसीनः बालकः लिखति।
नाचते हुए मयूर शोभते हैं=नृत्यन्तः मयूराः शोभन्ते।
खिलते हुये फूल अच्छे लगते हैं—प्रस्फुटन्ति पुष्पाणि राजन्ते।
लटकती हुई रस्सी हिलती है=लम्बमाना रज्जु वेपते।
वह लेटी हुई है=सा शयाना वर्त्तते।
मैं बैठा हुआ हूँ=अहम् आसीनः अस्मि।
उदयन् सूर्यः शोभते=उगता हुआ सूर्य चमकता है।
भ्रमन्तं योगिनं पश्य=घूमते हुए योगी को देखो।
धावमानम् अश्वं पश्यामि=दौड़ते हुये घोड़े को देखता हूँ।
भाषमाणं वक्तारं शृणु=बोलते हुये वक्ता को सुनो।
राजमानां मूर्तिं पश्य=चमकती हुई मूर्ति को देखो।
ध्यायन्तं मुनि वन्दस्व=ध्यान करते हुए मुनि को प्रणाम करो।
रुदतीं बालिकां पृच्छ=रोती हुई लड़की को पूछो।
धर्म्मं कुर्वन्तः (कुर्वाणाः) जनाः सुखं लभन्ते=धर्म करते मनुष्य सुख पाते हैं।
विद्यां जानत्यः स्त्रियः आदरं लभन्ते=विद्या जानती हुई स्त्रियाँ आदर पाती हैं।
शिक्षां ददतः (ददानान्) गुरून् प्रणाम=शिक्षा देते हुए गुरुओं को प्रणाम करो।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

बहता पानी निर्मल होता है। बोलता हुआ सुग्गा उड़ गया। फलता हुआ वृक्ष सूख गया। पढ़ता हुआ लड़का सो गया। मरता हुआ सभी कुछ करता है। उड़ता हुआ पक्षी गिर पड़ा है। घूमते हुये पहिये को देखो। मैं चमकता हुआ सोना लूँगा। खेलती हुई लड़कियों को मत मारो। लड़का हँसता हुआ बोलता है। वह पूजा करता हुआ बैठा है। हमलोग यत्न करते हुए सफलता पाते हैं।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

मुनिः हरिं स्मरन् आगच्छत्। साधुः नीतिं भाषमाणः आगच्छति। छात्राः वेदं पठन्तः पाठशालां गच्छन्ति। यजमानः ब्राह्मणः फलम् आप्नोति। मोदमानाः बालकाः क्रीडन्ति। ते कुशलं पृच्छन्तः आगच्छन्ति। त्वं गीतं शृण्वन् आगच्छ। तपस्यां कुर्वाणौ मुनी मुक्तिम् अलभेताम्। नृत्यन्तौ मयूरौ पश्य। पतन्ति फलानि चेष्यामि। क्लिश्यमानाः जनाः ईश्वरं स्मरन्ति।

३. शुद्ध कर—

पठतीं बालिकां पृच्छ। गच्छमानं पुरुषं पश्य। रुदन्ती बालिका आगच्छति? शोभन्तं चन्द्रं पश्यामि। सेवन्ती दासी प्रभुं नमति। शयन्तं बालकं पश्य। जयमानः राजा मोदते। विजयन्तः सैनिकाः मोदन्ते। विजयन् सेना आगच्छति।

छठा पाठ

भूतकालिक और अन्यान्य कृदन्त विशेषण

(१) थका हुआ लड़का सोता है।

(२) यह पढ़ी हुई पुस्तक है।

(३) यह लता झुकी हुई है।

इन वाक्यों में सूक्ष्मलिखित पद क्रिया से बने हुए हैं, और विशेषण का काम करते हैं, अतः कृदन्त विशेषण Participial Adjective) हैं।

नोट—पिछले पाठ में जो कृदन्त विशेषण बताये गये हैं, वे वर्त्तमान काल की क्रिया सूचित करते हैं। अतः उन्हें वर्त्तमानकालिक कृन्दत विशेषण कहना चाहिये। इस पाठ में जो कृदन्त विशेषण बताये जाते हैं, वे भूतकाल की क्रिया सूचित करते हैं। अतः इन्हें भूतकालिक कृदन्त विशेषण कहना चाहिये।

अँगरेजी में इस तरह का विशेषण बनाने के लिये verb के बाद कहीं कहीं ed और कहीं कहीं en जोड़ते हैं। उसी तरह सस्कृत में भी धातु के बाद कहीं कहीं 'त' और कहीं कहीं 'इत' जोड़ते हैं। जैसे,

कृ—कृत (done) किया हुआ

पठ्—पठित (read) पढ़ा हुआ

नोट—बहुत जगह धातुओं में 'त' लगने पर उनका रूप कुछ और हो हो जाता है। जैसे—

गम्—गत (gone)

प्रच्छ्—पृष्ट (asked)

यहाँ कुछ मुख्य धातुओं से Past Participle बनाकर दिये जाते हैं—

कृ—कृत (done)
दृश्—दृष्ट (seen)
भुज्—भुक्त (eaten)
स्पृश—स्पृष्ट (touched)
गुह—गूढ़ (concealed)
वच्—उक्त (spoken)
दा—दत्त (given)
पा—पीत (drunk)
गै—गीत (sung)
ध्यै—ध्यात (meditated)
रुज—रुग्ण (diseased)
रञ्ज—रक्त (coloured)
गम्—गत (gone)
नम्—नत (bent)
श्रम्—श्रान्त (fatigued)
शम्—शान्त (pacified)
दह्—दग्ध (burnt)
ग्रह्—गृहीत (taken)
आ + रभ्—आरब्ध (begun)
प्रच्छ—पृष्ट (asked)
जि—जित (conquered)
नी—नीत (carried)
श्रु—श्रुत (heard)
हन्—हत (killed)
आ + हन्—आहत (wounded)
ज्ञा—ज्ञात (known)
मस्ज्—मग्न (drowned)
क्रुध—क्रुद्ध (enraged)

नोट—(१) इन विशेषणों के रूप पुंल्लिंग और नपुंसकलिंग में अकारान्त शब्द की तरह चलते हैं। जैसे,

श्रान्तः बालकः = थका हुआ लड़का।

पठितं पुस्तकम् = पढ़ी हुई पुस्तक।

(२) स्त्रीलिंग में इन विशेषणों के रूप आकारान्त 'लता' की तरह चलते हैं। जैसे,

नता लता = झुकी हुई लता।

दृष्टा बालिका = देखी हुई लड़की।

उदाहरण—

श्रान्तः पथिकः आगच्छति = थका हुआ राही आता है।

इयं श्रुता वार्त्ता = यह सुनी हुई बात है।

इदं धनं दत्तम् अस्ति = यह धन दिया हुआ है।
ज्ञातं विषयं मा पृच्छ = जाने हुए विषय को मत पूछो।
आरब्धं कार्य्यं न परित्यज = आरम्भ किये काम को मत छोड़ो।
पीतं जलं क्षिप = पिये हुए जल को फेंको।
दग्धां बालिकां सेवस्व = जली हुई लड़की की सेवा करा।
जितान् शत्रून् क्षमस्व = जीते गये शत्रुओं को क्षमा करो।
इदं पुस्तकम् पठितम् अस्ति = यह पुस्तक पढ़ी हुई है।
इमे गावौ क्रीते स्तः = ये दोनों गायें खरीदी हुई हैं।
गतानि वस्तूनि मा चिन्तय = गई हुई वस्तुओं को मत सोचो।
भुक्तानि अन्नानि पचन्ति = खाये हुये अन्न पचते हैं।
आहतः व्याघ्रः क्रोशति = घायल (हुआ) बाघ चिल्लाता है।
रक्तानि वस्त्राणि शोभन्ते = रंगे हुए कपड़े शोभते हैं।

"खाने योग्य वस्तु। पीने योग्य जल। देखने योग्य शहर।"

इस प्रकार के प्रयोगों में सूक्ष्मलिखित विशेषण बनाने के लिये संस्कृत में तीन प्रत्ययों का प्रयोग कर सकते हैं—(१) तव्य (२) अनीय, और (३) य। जैसे—

दा + तव्य = दातव्य = देने योग्य।
दा + अनीय = दानीय = देने योग्य।
दा + य = देय = देने योग्य।

नोट—इन प्रत्ययों के लगने से पहले धातुओं के स्वरूप में बहुत कुछ उलट-फेर हो जाताहै। इसलिये नीचे मुख्य-मुख्य धातुओं से विशेषण बनाकर दिखाये जाते हैं—

धातु—तव्य	अनीय	य	अर्थ
भू—भवितव्य	भवनीय	भाव्य	होने योग्य
कृ—कर्तव्य	करणीय	कार्य्य	करने योग्य
दृश—द्रष्टव्य	दर्शनीय	दृश्य	देखने योग्य

गम्—गन्तव्य	गमनीय	गम्य	जाने योग्य
पठ्—पठितव्य	पठनीय	पाठ्य	पढ़ने योग्य
प्रच्छ्—प्रष्टव्य	प्रच्छनीय	पृच्छ्य	पूछने योग्य
श्रु—श्रोतव्य	श्रवणीय	श्राव्य	सुनने योग्य
वच—वक्तव्य	वचनीय	वाच्य	कहने योग्य
दा—दातव्य	दानीय	देय	देने योग्य
ग्रह—ग्रहीतव्य	ग्रहणीय	ग्राह्य	लेने योग्य
भुज—भोक्तव्य	भोजनीय	भोज्य	खाने योग्य
पा—पातव्य	पानीय	पेय	पीने योग्य
त्यज—त्यक्तव्य	त्यजनीय	त्याज्य	छोड़ने योग्य
स्मृ—स्मर्त्तव्य	स्मरणीय	स्मार्य्य	याद करने योग्य
ज्ञा—ज्ञातव्य	ज्ञानीय	ज्ञेय	जानने योग्य
पूज—पूजितव्य	पूजनीय	पूज्य	पूजा करने योग्य

नोट—(१) पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में इन विशेषणों के रूप अकारान्त शब्द की तरह चलते हैं। जैसे—

द्रष्टव्यः नगरः=देखने योग्य शहर।
खाद्यं वस्तु=खाने योग्य वस्तु।
पठनीयम् पुस्तकम्=पढ़ने योग्य पुस्तक।

(२) स्त्रीलिङ्ग में इन विशेषणों के रूप आकारान्त 'लता' की तरह चलते हैं। जैसे—

श्रोतव्या कथा=सुनने योग्य कथा।
स्मरणीया वार्त्ता=याद रखने योग्य बात।
दृश्या नगरी=देखने योग्य नगरी।

वाक्यों के उदाहरण

यह जल पीने योग्य है=इदं जलं पेयम्।

ये काम करने योग्य हैं=इमानि कार्य्याणि कर्त्तव्यानि ।
ये दोनों पुस्तकें पढ़ने योग्य हैं=इमे पुस्तके पठितव्ये ।
यह प्रश्न पूछने योग्य है=अयं प्रश्नः प्रष्टव्यः ।
यह दही खाने योग्य है=इदं दधि भोक्तव्यम् ।
यह दक्षिणा लेने योग्य है=इयं दक्षिणा ग्रहीतव्या ।
वह गाँव जाने योग्य है=असौ ग्रामः गन्तव्यः ।
यह तमाशा देखने योग्य है=इदं कौतुकं दर्शनीयम् ।
यह मनुष्य क्रोध किये हुए है=अयं जनः क्रुद्धः ।
डूबे हुए जहाज़ को देखो=मग्नं जलयानं पश्य ।
पूजा करने योग्य महात्माओं को देखो=पूज्यान् महात्मनः पश्य ।
पढ़ने योग्य ग्रन्थों को पढ़ो=पाठ्यान् ग्रन्थान् पठ ।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

दिया हुआ धन मत लो। पढ़ी हुई पुस्तक मत पढ़ो। यह पक्षी मरा हुआ है। लड़का घर गया हुआ है। यह पेड़ झुका हुआ है। मैं थका हुआ हूँ। यह विषय जाना हुआ है। हरद्वार देखने के योग्य है। यह मकान रहने के योग्य है। ये फल लेने के योग्य हैं। सभी पुस्तकें पढ़ने योग्य हैं।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

नौः मग्ना अभवत्। इयं बालिका रुग्णा वर्त्तते। त्वं क्रुद्धः असि। अहं गूढं वस्तु पश्यामि। इदं वचनम् उक्तम् अस्ति। इमे काष्ठे दग्धे स्तः। विद्यार्थिनः श्रान्ताः अभवन्। इदं द्रव्यं ग्रहीतव्यम् (अस्ति)। अयं स्वाभावः त्यक्तव्यः (अस्ति)। ज्ञातव्यान् विषयान् पठ। पूजनीयान् गुरून् सेवस्व।

३. सूक्ष्मलिखित शब्दों के बदले में उसी अर्थ के दूसरे शब्द रक्खो

(१) इदं पुस्तकं पठनीयम् ।

(२) अमी नगराः द्रष्टव्याः ।

(३) इयं कथा वाच्या ।

४. शुद्ध करो—

माता पूजनीयः भवति । अयं सर्पः हन्तः अस्ति । इयं वार्त्ता गूढं वर्त्तते । पठ्यं पुस्तकं आनय । इदं मिष्टान्नं भोजितव्यम् । अयं ग्रामः गच्छितव्यः ।

दूसरा अध्याय

विधेय का विस्तार

क्रिया-विशेषण

(Attributes of Predicate)

पहला पाठ

क्रिया-विशेषण

मैं वहाँ जाता हूँ। वह आज आवेगा।

पहले वाक्य में सूक्ष्मलिखित शब्द (वहाँ) क्रिया का 'स्थान' (Place) बतलाता है। दूसरे वाक्य में सूक्ष्मलिखित शब्द (आज) क्रिया का समय (Time) बतलाता है। ऐसे शब्द हिन्दी में क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

संस्कृत में बहुत से अव्यय (Indeclinables) हैं, जो क्रियाविशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं। ये शब्द सामान्यतः क्रिया के पहले आते हैं।

नोट—'अव्यय' उस शब्द को कहते हैं जिसका रूप सदा एक समान बना रहे। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, और क्रिया के रूप में लिङ्ग वचनादि के अनुसार बदलते रहते हैं। किन्तु 'अव्यय' के रूप में किसी तरह का विकार (change) नहीं होता। इसलिये उसका नाम ही अव्यय पड़ा है, अर्थात् जिसमें 'व्यय' (कमी) न होने पावे। हिन्दी-व्याकरण में विद्यार्थी गण इस बात को भलीभाँति समझ चुके हैं। संस्कृत में भी ठीक यही नियम समझ लेना चाहिये।

इस पाठ में मुख्य-मुख्य क्रियाविशेषण और उनके प्रयोग दिये जाते हैं।

(१) अकस्मात्=अचानक (Suddenly)
अकस्मात् सः अपतत्=वह अचानक गिर पड़ा।

(२) अग्रे=आगे, (in front)
त्वम् अग्रे धावसि=तुम आगे दौड़ते हो।

(३) अजस्रम्=निरन्तर (constantly)
अजस्रं वृष्टिः भवति=लगातार वर्षा होती है।

(४) अत्र यहाँ (here)
सः अत्र आगमिष्यति=वह यहाँ आवेगा।

(५) अद्य=आज (to-day)
अहम् अद्य गमिष्यामि=मैं आज जाऊँगा।

(६) अधः=नीचे (below)
अधः कूपः वर्त्तते=नीचे कुँआ है।

(७) अपरेद्युः=दूसरे दिन (next day)
अहरेद्युः ते गृहम् अगच्छन्=दूसरे दिन वे लोग घर गये।

(८) अधुना=अब (now)
अधुना स व्याकरणं पठति=अब वह व्याकरण पढ़ता है।

(९) अन्तरे=बीच में (in the middle)
त्वम् अन्तरे तिष्ठ=तुम बीच में रहो।

(१०) अन्यत्र=दूसरी जगह (elsewhere)
अहम् अन्यत्र गच्छामि=मैं दूसरी जगह जाता हूँ।

(११) अवश्यम्=जरूर (certainly)
त्वम् अवश्यम् सफलः भविष्यसि=तुम अवश्य सफल होगे।

(१२) इतः=यहाँ से (hence)

त्वम् इतः गमिष्यसि = तुम यहाँ से जाओगे।

(१३) इतस्ततः = इधर-उधर (here and there)

सः इतस्ततः भ्रमति = वह इधर-उधर घूमता है।

(१४) इत्थम् = इस तरह (in this way)

इत्थं कर्म कुरु = इस तरह काम करो।

(१५) इदानीम् = इस समय (at this time)

त्वम् इदानीं किं पठसि = तुम इस समय क्या पढ़ते हो ?

(१६) इह = यहाँ (here)

इह कुशलं वर्त्तते = यहाँ कुशल है।

(१७) उच्चैः = जोर से (loudly)

सः उच्चैः वदति = वह जोर से बोलता है।

(१८) ऋतम् = सत्य (truly)

साधवः ऋतम् भाषन्ते = साधु लोग सच बोलते हैं।

(१९) एकत्र = एक जगह (together)

ते सर्वे एकत्र वर्त्तन्ते = वे सब एक जगह रहते हैं।

(२०) एकदा = एक बार (once)

एकदा सः प्रयागम् अगच्छत् = एक बार वह प्रयाग गया।

(२१) एव = ही (just)

नोट—(क) यह सामान्यतः क्रिया के पीछे आता है।

स पठत्येव = वह पढ़ता ही है।

अहं करोम्येव = मैं करता ही हूँ।

(ख) इस अव्यय को चाहे जिस शब्द के पीछे रख दें, 'ही' का अर्थ निकलेगा। जैसे,

सर्वनाम—अहम् एव गच्छामि = मैं ही जाता हूँ।

संज्ञा—गोपालः एव वदति = गोपाल ही बोलता है।

विशेषण—सः दुष्टः एव अस्ति = वह दुष्ट ही है।
क्रिया—अहम् पठाम्येव = मैं पढ़ता ही हूँ।
अव्यय—सः तत्रैव निवसति = वह वहीं रहता है।

(२२) एवम् = इस तरह (in this manner)
सः एवं लिखति = वह इस तरह लिखता है।

(२३) कथम् = कैसे (how)
त्वं कथं पठसि = तुम कैसे पढ़ते हो ?

(२४) कदा = ? (when)
सः कदा आगमिष्यति = वह कब आवेगा ?

(२५) किम् = क्या (what)
त्वं किम् इच्छसि = तुम क्या चाहते हो ?

नोट—'किम्' क्यों (why) के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। जैसे, विलम्बं किं कुरुषे = देर क्यों करते हो ?

(२६) कुत्र = कहाँ (where)
त्वं कुत्र गच्छसि = तुम कहाँ जाते हो ?

(२७) केवलम् = सिर्फ (only)
सः केवलं वदति = वह केवल बोलता है।

(२८) क्व = कहाँ (where)
गोविन्दः क्व वर्त्तते — गोविन्द कहाँ है ?

(२९) क्वचित् = कहीं (anywhere)
अहं क्वचित् गमिष्यामि = मैं कहीं जाऊँगा।

(३०) चिरम् = देर तक (for a long time)
त्वं चिरम् अपश्यः = तुमने देर तक देखा।

(३१) झटिति = झट (quickly)
झटिति अत्र आगच्छ = झट यहां आओ।

(३२) तत्र = वहाँ (there)
अहं तत्र गच्छामि = मैं वहाँ जाता हूँ।

(३३) तदा = तब (then)
तदा सः अवदत् = तब वह बोला।

(३४) तदानीम् = उस समय (at that time)
तदानीं सर्वे सुप्ताः आसन् = उस समय सभी सोये हुए थे।

(३५) तावत् = तब तक (meanwhile)
तावत् तत्रैव तिष्ठ = तब तक वहीं रहो।

(३६) तूष्णीम् = चुपचाप (silently)
अहं तूष्णीं तिष्ठामि = मैं चुपचाप रहता हूँ।

(३७) दिवा = दिन में (in the day)
सः दिवा शेते = वह दिन में सोता है।

(३८) दूरम् = दूर (far)
गृहं दूरं वर्त्तते = मकान दूर है।

(३९) नूनम् = निश्चय (surely)
नूनं मृत्युः भविष्यति = निश्चय मृत्यु होगी।

(४०) न = नहीं (not)
त्वं न पठसि = तुम नहीं पढ़ते हो।

(४१) नक्तम् = रात में (in the hight)
अहं नक्तं न खादामि = मैं रात में नहीं खाता हूँ।

(४२) परश्वः = परसों (day after to-morrow)
सः परश्वः गमिष्यति = वह परसों जायगा।

(४३) पश्चात् = पीछे (behind)
अहं पश्चात् आगमिष्यामि = मैं पीछे आऊँगा।

(४४) पुनः = फिर (again)
अहं पुनः आगमिष्यामि = मैं फिर आऊँगा ।

(४५) पुरा = पहले (in ancient times)
पुरा दशरथ नाम राजा आसीत् = प्राचीन समय में दशरथ नाम के राजा थे ।

(४६) पृथक = अलग (separately)
अहं पृथक् पठिष्यामि = मैं अलग पढ़ूँगा ।

४७) प्रतिदिनम् = हररोज़ (every-day)
सः प्रतिदिनं स्नाति = वह रोज नहाता है ।

(४८) प्रातः = सवेरे, भोर में (early in the morning)
अहं प्रातः उत्तिष्ठामि = मैं सवेरे उठता हूँ ।

(४९) प्रायः = शायद (perhaps)
अद्य प्रायः अवकाशः वर्त्तते = आज शायद छुट्टी है ।

(५०) बहिः = बाहर (outside)
अहं बहिः गच्छामि = मैं बाहर जाता हूँ ।

(५१) परस्परम् = आपस में (with one another)
ते परस्परं विवदन्ते = ये आपस में बहस करते हैं ।

(५२) मिथ्या = झूठ (false)
त्वं मिथ्या भाषसे = तुम झूठ बोलते हो ।

(५३) यत्र = जहाँ (where)
यत्र त्वं गच्छसि तत्रैव अहम् अपि गच्छामि = जहाँ तुम जाते हो वहीं मैं भी जाता हूँ ।

(५४) यदा = जब (when)
यदा त्वम् आगमिष्यसि तदा अहं गमिष्यामि = जब तुम आओगे तब मैं जाऊँगा ।

(५५) यावत्=जबतक (so long as)
यावत् श्वासः वर्त्तते तावत् आशा वर्त्तते=जब तक सांस है तब तक आस (आशा) है।

(५६) वृथा=व्यर्थ (in vain)
वृथा वार्त्तालापं मा कुरु=व्यर्थ बातचीत मत करो।

(५७) शीघ्रम्=जल्द (soon)
पत्रस्य उत्तरं शीघ्रं देहि=पत्र का उत्तर शीघ्र दो।

(५८) श्वः=कल (to-morrow)
अहं श्वः गमिष्यामि=मैं कल जाऊँगा।

(५९) शनैः शनैः=धीरे-धीरे (slowly)
सः शनैः शनैः चलति=वह धीरे-धीरे चलता है।

(६०) सदा, सर्वदा=सदा (always)
सर्वदा सत्यं वद=सदा सच बोलो।

(६१) समीपे=नजदीक (near)
गृहं समीपे वर्त्तते=घर नजदीक है।

(६२) सर्वत्र=सब जगह (everywhere)
योगिनः सर्वत्र भ्रमन्ति=योगी लोग सब जगह घूमते हैं।

(६३) सायम्=शाम को (in the evening)
वयं सायं भ्रमामः=हम लोग शाम को टहलते हैं।

(६४) स्वयम्=खुद (self)
भवान् स्वयं चलतु=आप खुद चलें।

(६५) ह्यः=कल (yesterday)
ते ह्यः अगच्छन्=वे लोग कल गये।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

मैं जरूर जाऊंगा। वह यहां नहीं है। वह दूर रहता है। तुम जल्द आओ। वह कल घर जायगा। तुम दिन में सोते हो। वह शायद रात में पढ़ता है। वह चुपचाप बैठी है। क्या कहते हो? इस समय मैं काम करता हूँ। तुम बाहर रहो। मैं पढ़ता ही हूँ। मैं ही पढ़ता हूँ। वह कल यहाँ से गया। तुम इधर उधर घूमते हो। मैं सच कहता हूँ। झूठ क्यों कहते हो। हम दोनों परसों आवेंगे। तुम खुद यह काम कर लो। सदा प्रसन्न रहो।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

अहं दिवा सक्तु खादामि। तूष्णीं तिष्ठ। सः शनैः शनैः पठति। त्वम् उच्चैः क्रोशसि। इतस्ततः किं भ्रमसि? ते नक्तं पुनः आगमिष्यन्ति। सा ऋतं भाषते। यावत् अहम् अत्र लिखामि, तावत् तूष्णीं तिष्ठ।

३. इन वाक्यों के अर्थ में क्या अन्तर है?

(क) अहम् एव पुस्तकं पठामि
(ख) अहं पुस्तकम् एव पठामि
ग) अहं पुस्तकं पठाम्येव

(क) गोपालः एव पठति
(ख) गोपाल एवं पठति

४. शुद्ध करो—

सः ह्यः गमिष्यति। ते श्वः अगच्छन्।
अहं दिवायां लिखामि। सः अवश्य आगमिष्यति।

दूसरा पाठ

करण कारक

(१) मैं कलम से लिखता हूँ।

(२) मनुष्य कान के द्वारा सुनते हैं।

इन वाक्यों में सूक्ष्मलिखित पद करण कारक में हैं। करण कारक से यह ज्ञात होता है कि कर्त्ता किस वस्तु के सहारे क्रिया करता है। अतएव इसे विधेय (मुख्य क्रिया) का विशेषण कह सकते हैं।

नोट—करण कारक में दो ही तरह की संज्ञाएँ प्रयुक्त हो सकती हैं।

(क) जो कर्त्ता के शरीर के अन्तर्गत हो। जैसे,

मनुष्य कान के द्वारा सुनते हैं।

(ख) जो क्रिया के हेतु कर्त्ता के द्वारा सञ्चालित की जाती हो। जैसे,

मैं कलम से लिखता हूँ।

जिस तरह हिन्दी शब्द के बाद 'के द्वारा' और 'से' विभक्ति लगाकर करण कारक बनाते हैं, उसी तरह संस्कृत में शब्द के बाद 'तृतीया विभक्ति' जोड़कर करण कारक बनाते हैं।

इस पाठ में भिन्न-भिन्न शब्दों के साथ तृतीया विभक्ति लगाना सिखलाया जाता है।

१. स्वरान्त शब्द

(क) एकवचन

(१) अकारान्त शब्दों में अन्तिम 'अ' को हटाकर 'एन' कर देते हैं। जैसे,

(पुं०) लगुड़ (लाठी)—लगुड़ेन (लाठी के द्वारा)
क्षुर (छुरा) क्षुरेण (छुरे के द्वारा)
(न०) जल (पानी)—जलेन (पानी से)
खनित्र (खन्ती)—खनित्रेण (खन्ती से)

वाक्यों के उदाहरण—

स लगुड़ेन चौरं प्रहरति=वह चोर को लाठी से मारता है।
नापितः क्षुरेण केशान मुण्डयति=नायी छुरे से बाल बनाता है।

अहं जलेन मुखं प्रक्षालयामि=मैं पानी से मुँह धोता हूँ।
सः खनित्रेण भूमिं खनति=वह खन्ती से जमीन खोदता है।

(२) आकारान्त (स्त्रीलिङ्ग) शब्दों में अन्तिम 'आ' को हटाकर 'अया' कर देते हैं। जैसे,

मृत्तिका (मिट्टी) मृत्तिकया (मिट्टी के द्वारा)
क्षुरिका (छुरी)—क्षुरिकया (छुरी से)
सा मृत्तिकया प्राङ्गणं लिम्पति=वह मिट्टी से आङ्गन को लीपती है।

सः क्षुरिकया बन्धनं छिनत्ति=वह छुरी से बन्धन काटता है।

(३) इकारान्त पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में शब्द के बाद 'ना' जोड़ दिया जाता है।

(पुं०) असि (तलवार)—असिना (तलवार से)
पाणि (हाथ)—पणिना (हाथ से)

(न०) वारि (जल)—वारिणा (जल से)

सा असिना दुष्टान् हन्ति=वह तलवार से दुष्टों को मारती है।

स पाणिना नासिकां स्पृशति=वह हाथ से नाक छूता है।
अहं वारिणा पादौ प्रक्षालयामि=मैं पानी से (दोनों) पाँव धोता हूँ।

नोट—'सखि' और 'पति' इन दोनों पुल्लिङ्ग शब्दों में तृतीया विभक्ति लगने पर क्रमशः 'सख्या' और 'पत्या' रूप बनते हैं। दधि (न० लिङ्ग) से दध्ना रूप होता है।

(४) उकारान्त पुल्लिंग और नपुंसक लिंग में भी शब्दों के बाद 'ना' जोड़ा जाता है। जैसे,

(पुं०) परशु (कुल्हाड़ी)—परशुना (कुल्हाड़ी के द्वारा)
तन्तु (सूत)—तन्तुना (सूत के द्वारा)

(न०) मधु (शहद)—मधुना (शहद से)
अम्बु (पानी)—अम्बुना (पानी से)

सः परशुना वृक्षं छिनत्ति=वह कुल्हाड़ी से पेड़ काटता है।
तन्तुवायः तन्तुना वस्त्रं वयति=जुलाहा सूत से कपड़ा बुनता है।
स सक्तुना उदरं बिभर्ति=वह सत्तू से पेट भरता है।
अम्बुना अहम् वृक्षान् सिञ्चामि=मैं जल से वृक्षों को सींचता हूँ।

(५) शेष स्वरान्त शब्दों में प्रायः 'आ' जोड़ दिया जाता है। जैसे,
(क) इकारान्त (स्त्री०)—अङ्गुलि (उंगली)—अङ्गुल्या (उंगली से)
यष्टि (छड़ी)—यष्ट्या (छड़ी से)
(ख) ईकारान्त (स्त्री०)—लेखनी (कलम) लेखन्या (कलम से)
(ग) उकारान्त (स्त्री०)—चञ्चु (चोंच) चञ्च्वा (चांच के द्वारा)
रज्जु (रस्सी) रज्ज्वा (रस्सी के द्वारा)

(घ) ऊकारान्त (स्त्री०)—चञ्चू (चोंच) चञ्च्वा (चोंच से)
तनू (शरीर)—तन्वा (शरीर से)

(ङ) औकारान्त (स्त्री०) नौ (नाव) नावा (नाव के द्वारा)

वाक्यों के उदाहरण—

(क) सः अङ्गुल्या संकेतं करोति=वह उंगली से इशारा करता है।

(ख) अहं लेखन्या लिखामि=मैं कलम से लिखता हूँ।

(ग) सः रज्ज्वा महिषं बध्नाति=वह रस्सी से भैंस बाँधता है।

(घ) पक्षी चञ्च्वा जलं पिबति=पक्षी चोंच से जल पीता है।

(ङ) सः नावा गच्छति=वह नाव से जाता है।

नोट—'स्त्री', 'श्री', और 'धी' शब्दों से क्रमशः 'स्त्रिया' 'श्रिया' और 'धिया' रूप हो जाते हैं। 'भू' और 'भ्रू' से क्रमशः 'भुवा' और 'भ्रुवा' बनते हैं।

(ख) द्विवचन

प्रायः जितने स्वरान्त शब्द हैं उनमें 'भ्याम्' लगकर तृतीया द्विवचन का रूप बनता है। जैसे, पाणि-पाणिभ्याम्। लेखनी-लेखनीभ्याम्। बाहु-बाहुभ्याम्। नौ-नौभ्याम्। इत्यादि।

नोट—अकारान्त शब्दों में 'भ्याम्' के बदले 'आभ्याम्' लगता है। जैसे, हस्त—हस्ताभ्याम्। पाद—पादाभ्याम्।

वाक्यों के उदाहरण—

जनाः नेत्राभ्यां पश्यन्ति=लोग आंखों से देखते हैं।

जनाः पाणिभ्याम् अर्घ्यं ददति—लोग (दोनों) हाथों से अर्घ्य देते हैं।

जनाः वाहुभ्याम् परिष्वजन्ते = लोग (दोनों) बाँहों से आलिङ्गन करते हैं।

स्त्रियः भ्रूभ्यां क्रोधं सूचयन्ति = स्त्रियाँ (दोनों) भौंहों से क्रोध प्रकट करती हैं।

(ग) वहुवचन

प्रायः जितने स्वरान्त शब्द हैं उनमें 'भिः' लगाकर तृतीया वहुवचन का रूप बनता है। जैसे लता-लताभिः। नदी-नदीभिः। साधु-साधुभिः। भ्रातृ-भ्रातृभिः। इत्यादि।

नोट—अकारान्त शब्दों में 'भिः' के बदले 'ऐः' जोड़ा जाता है। जैसे, बालक-बालकैः। फल-फलैः। इत्यादि।

वाक्यों के उदाहरण—

सैनिकः आयुधैः प्रहरति = सिपाही हथियारों से मारता है।
सः अङ्गुलिभिः कपाटं प्रहरति = वह उंगलियों से किवाड़ खट-खटाता है।

सः वेणुभिः गृहं निर्म्माति = वह वांसों से घर बनाता है।
सा अश्रुभिः अञ्चलं सिञ्चति = वह आँसुओं से अञ्चल भिगोती है।
ते मुद्राभिः यन्त्रं क्रीणन्ति = वे रुपयों से कल खरीदते हैं।

(२) व्यञ्जनान्त शब्द

व्यञ्जनान्त शब्दों में तृतीया विभक्ति के लिये यह नुसखा स्मरण रखना चाहिये—

ए० व०	द्वि०	व० व०
आ	भ्याम्	भिः

नोट—(१) व्यञ्जनान्त शब्दों के बाद इन विभक्तियों के लगने

पर उनमें नियमानुसार सन्धि हो जाती है। (विद्यार्थियों को इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिये।*) जैसे,

शुच् + भ्याम् = शुग्भ्याम्।

विद्युत् + भिः = विद्युद्भिः।

(२) 'भ्याम्' 'भिः' लगने पर नकारान्त शब्दों के 'न' कार का लोप हो जाता है। जैसे,

आत्मन् + भ्याम् = आत्मभ्याम्।

युवन् + भिः = युवभिः।

(३) इन शब्दों के रूप कुछ विलक्षण होते हैं। अतएव इनपर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

विद्वस*—विदुषा*	युवन्—यूना
पथिन्—पथा	श्वन्—शुना।
राजन्—राज्ञा	पुमस्—पुंसा

नोट—'भ्यां' 'भ्यः' लगने से पूर्व 'विद्वस' का 'विद्वत्' और 'पुमस्' का 'पुम्' हो जाता है। जैसे, विद्वद्भ्याम्। पुम्भ्यः।

वाक्यों के उदाहरण—

सः विकटेन पथा अगच्छत् = वह विकट रास्ते से गया।

त्वं वाचा मां विध्यसि = तुम मुझे वचन से बेधते हो।

इन्द्रः विद्युद्भिः अयोधत = इन्द्र ने बिजलियों के द्वारा युद्ध किया।

सर्वान् प्रेम्णा जय = सभी को प्रेम से जीतो।

---

* (नकारान्त शब्दों के अतिरिक्त) व्यञ्जन शब्दों में 'भ्याम्' 'भ्यः' आदि व्यञ्जनादि विभक्तियाँ लगने से वही रूप हो जाता है जो प्रथमा एकवचन में। तब यथानियम सन्धि कर दी जाती है। जैसे, शुच् + भ्याम् = शुक + भ्याम् = शुग्भ्याम्। निश् + भ्यः = निट् + भ्यः = निड्भ्यः)

मूषिकः दद्भिः बन्धनं छिनत्ति = मूसा दाँतों से बन्धन काटता है।
पक्षिणः गरुद्भ्यां उड्डीयन्ते = पक्षी पाँखों के द्वारा उड़ते हैं।
सः मूर्ध्ना नमति = वह मस्तक से प्रणाम करता है।
वयं शिरसा प्रणामः = हम लोग सिर से प्रणाम करते हैं।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो —

वह छुरी से कलम बनाता है। उसने अस्त्र से मुझको घायल किया। चिड़ियाँ चोंच से फल खाती हैं। हाथी सूँड़ से (शुण्डेन) पानी पीते हैं। वह दोनों हाथों से ताली पीटता है। पहलवान (मल्लः) दोनों बाँहों से लड़ता है। वह कुल्हाड़ी से बाँस काटता है। तुम मुँह से साँस लेते हो। वह रस्सी से मोटा बाँधता है। साँप नेवले को (नकुलम्) अपने शरीर से लपेटता (परिवेष्टते) है। उसने खड़ाऊँ (पादुकया) से नौकर को पीटा। मैंने रुपये से पुस्तक खरीदी।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

सः पयसा लतां सिञ्चति। गुरुः यष्ट्या बालकान् प्रहरति। जनाः त्वचा स्पृशन्ति, चक्षुर्भ्यां पश्यन्ति, पद्भ्यां गच्छन्ति। ब्राह्मणाः अङ्गुलिभ्यः चन्दनं लिम्पति।

३. शुद्ध करो—

अहं यष्टिना त्वां ताडयामि। देवाः धन्वा राक्षसान् हन्ति। स दधिना* उदरं बिभर्त्ति। अहं वारिना मुखं प्रक्षालयामि। त्वं रज्जुना गाव बध्नासि। जनः चक्षुर्भ्यः पश्यति।

---

*दधि शब्द में तृतिया एक वचन की विभक्ति लगने पर अन्तिम इकार उड़ कर 'न' आ जाता हैं। अतएव 'दध्ना' रूप होता है। (चतुर्थी पंचमी, षष्ठी और सप्तमी में भी 'दधि' के साथ यही नियम समझना चाहिये)

४. करण कारक के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्त्ति करो—

अहं······पत्रं लिखामि । सः······कपाटं प्रहरति । सः······वृक्षं सिञ्चति । जनः······गच्छति । सः······लतां छिनत्ति । यूयं······श्रात्रुं हथ । कुविन्दः······वस्त्रं वयति ।

तीसरा पाठ

सम्प्रदान कारक

(१) वह ज्ञान के लिये पढ़ता है।

(२) मैं लड़के के लिये खिलौना लाता हूं।

इन वाक्यों में स्थूलमुद्रित पद सम्प्रदान कारक में हैं। सम्प्रदान कारक यह बतलाता है कि क्रिया किसके हेतु की जाती है। अतएव इसे विधेय का विस्तार समझना चाहिये।

जिस तरह हिन्दी में शब्द के बाद 'के लिये' लगाकर सम्प्रदान कारक बनाते हैं, उसी तरह संस्कृत में शब्द के बाद चतुर्थी विभक्ति लगाकर सम्प्रदान कारक बनाते हैं। जैसे,

बालक के लिये = बालक + चतुर्थी विभक्ति = बालकाय। चतुर्थी विभक्ति लगाने पर भिन्न २ शब्दों के कैसे रूप हो जाते हैं, वही इस पाठ में बताया जाता है।

१. स्वरान्त शब्द

(क) एक वचन

(१) अकारान्त शब्दों के बाद 'आय' जोड़कर चतुर्थी विभक्ति बनाते हैं। जैसे,

(पुं०) बालक— बालकाय (लड़के के लिये)

(न०) ज्ञान— ज्ञानाय (ज्ञान के लिये)

अहं बालकाय क्रीडनकम् आनयामि—मैं लड़के के लिये खिलौना लाता हूँ।

सः ज्ञानाय पठति = वह ज्ञान के लिये पढ़ता है।

नोट—'सर्व' 'एक' और 'पर' शब्दों में स्मै लगाकर चतुर्थी

विभक्ति बनाते हैं। जैसे, सर्वस्मै (सब के लिये), एकस्मै (एक के लिये) स्त्रीलिंग में इन शब्दों के अन्तर 'स्यै' लगाते हैं। जैसे, एकस्यै बालिकायै=एक लड़की के लिये।

(२) आकारान्त (स्त्रीलिंग) शब्दों के वाद 'यै' जोड़कर चतुर्थी विभक्ति वनाते हैं। जैसे,

बालिका—बालिकायै (लड़की के लिये)

स बालिकायै मिष्टान्नं ददाति=वह लड़की के लिये मिठाई देता है।

(३) ईकारान्त शब्दों के बाद 'ऐ' जोड़कर चतुर्थी विभक्ति बनाते हैं। जैसे,

(क) लक्ष्मी—लक्ष्मी+ऐ=लक्ष्म्यै=लक्ष्मी के लिये।

(ख) वधू—वधू+ऐ=वध्वै=वहू के लिये।

स लक्ष्म्यै नैवेद्यं ददाति=वह लक्ष्मी के लिये नैवेद्य देता है।

अहं वध्वै पुस्तकं ददामि=मैं बहू के लिये पुस्तक देता हूँ।

नोट—'स्त्री' 'श्री' और 'धी' से चतुर्थी विभक्ति में क्रमशः 'स्त्रियै' 'श्रियै' और 'धियै' रूप बनते हैं। 'भू' 'भ्रू' और ऊकारान्त पुल्लिग से 'भुवे' 'भ्रुवे' आदि की तरह रूप बनाते हैं।

(४) इकारान्त उकारान्त शब्दों में पुल्लिग, और स्त्रीलिंग में, 'इ' के स्थान में 'अये' और 'उ' के स्थान में 'अवे' हो जाता है।

(क) मुनि—मुन्+अये=मुनये=मुनि के लिये।
मति—मत्+अये=मतये=मति के लिये।

(ख) साधु—साध्+अवे=साधवे=साधु के लिये।
धेनु—धेन्+अवे=धेनवे=धेनु के लिये।

सः मुनये फलं ददाति=वह मुनि के लिये फल देता है।

जनाः मतये पठन्ति=लोग बुद्धि के लिये पढ़ते हैं।

सा साधवे भिक्षां ददाति = वह साधु के लिये भीख देती है।
सा धेनवे घासम् आनयति = वह गाय के लिये घास लाती है।

नोट—'पति' और 'सखि' से क्रमशः 'पत्यै' और 'सख्यै' रूप बनते हैं। जैसे,

सा पत्यै भक्तं पचति = वह पति के लिये भात रींधती है।
अहं सख्यै पुस्तकम् आनयामि = मैं साथी के लिये पुस्तक लाता हूँ।

(५) इकारान्त तथा उकारान्त नपुंसकलिंग के शब्दों में प्रायः शब्द के बाद 'ने' लगाकर चतुर्थी विभक्ति बनाते हैं। जैसे,

(क) वारि—वारिणे (जल के लिये)
(ख) मधु—मधुने (मधु के लिये)

मक्षिकाः मधुने भ्रमन्ति = मक्खियाँ मधु के लिये घूमती हैं।

(६) शेष शब्दों में प्रायः 'ए' लगाकर चतुर्थी विभक्ति बनाते हैं जैसे,

पितृ—पितृ + ए = पित्रे (पिता के लिये)
मातृ—मातृ + ए = मात्रे (मातः के लिये)
गो—गो + ए = गवे (गाय के लिये)
नौ—नौ + ए = नावे (नाव के लिये)

स पित्रे पिण्डं ददाति = वह पिता के लिये पिण्ड देता है।
सा मात्रे औषधम् आनयति = वह माँ के लिये औषध लाती है।
गोपः गवे घासं छिनत्ति = ग्वाला गाय के लिये घास काटता है।

धीवरः नावे काष्ठं नयति=धीवर (मलाह) नाव के लिये लकड़ी ले जाता है।

(ख) द्विवचन।

चतुर्थी विभक्ति का द्विवचन रूप बनाने में विद्यार्थियों को कोई झंझट ही नहीं है। क्योंकि जो रूप तृतीया द्विवचन में बताये गये हैं, ठीक वही रूप चतुर्थी द्विवचन में भी समझ लेना चाहिये। जैसे,

बालकाभ्याम्=दो बालकों के लिये।
मुनिभ्याम् =दो मुनियों के लिये।
भ्रातृभ्याम् =दो भाइयों के लिये।
गोभ्याम् =दो गायों के लिये।

(ग) बहुवचन

जिस तरह शब्दों के बाद 'भिः' जोड़कर तृतीया का बहुवचन बनाया जाता है, उसी तरह 'भ्यः' जोड़कर चतुर्थी का बहुवचन बनाया जाता है। जैसे,

मुनि—मुनिभ्यः=मुनियों के लिये।
गुरु—गुरुभ्यः=गुरुओं के लिये।
बालिका—बालिकाभ्यः=लड़कियों के लिये।
स्त्री—स्त्रीभ्यः=स्त्रियों के लिये।

नोट—अकारान्त शब्दों में 'भ्यः' के स्थान पर 'एभ्यः' लगता है। जैसे, बालक—बालकेभ्यः (बालक के लिये)
फल—फलेभ्यः (फलों के लिये)

व्यञ्जनान्त शब्दों से चतुर्थी विभक्ति लगाने के लिये यह नुसखा याद कर लेना चाहिये—

ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
ए	भ्याम्	भ्यः

जैसे,

भवत्+ए=भवते=आपके लिये।

भवत्+भ्याम्=भवद्भ्याम्=आप दोनों के लिये।

भवत्+भ्यः=भवद्भ्यः=आप लोगों के लिये।

नोट—तृतिया विभक्ति लगने से पहले व्यञ्जनान्त शब्दों के रूप में जो हेर फेर हो जाता है, चतुर्थी विभक्ति लगने से पहले भी वही हेरफेर हो जाता है* । जैसे—

राजन्—राज्ञ्+ए=राज्ञे=राजा के लिये।

विद्वस्—विदुष+ एवदुिषे=विद्वान के लिये।

पुमस्—पुम+भ्याम्=पुम्भ्याम्=दो पुरुषों के लिये।

युवन्—युव+भ्यः=युवभ्यः=युवाओं के लिये।

३. सर्वनाम

नीचे सर्वनामों के रूप चतुर्थी विभक्ति में दिये जाते हैं—

	ए० व०	द्विव०	ब० व०
प्र०	पु. न० तस्मै=उसके लिये (स्त्री०) तस्यै= ,,	ताभ्याम्=उन दोनों के लिये ताभ्याम्= ,,	तेभ्यः=उनके लिये ताभ्यः= ,,
म०	तुभ्यम्=तुम्हारे लिये	युवाभ्याम्=तुम दोनों के लिये	युष्मभ्यः=तुम लोगों के लिये
उ०	मह्यम्=मेरे लिये	आवाभ्याम्=हम दोनों के लिये	अस्मभ्यः=हम सबों के लिये

* (देखो तृतीया के प्रकरण में, व्यञ्जनान्त पर नोट।)

नोट—प्रथम पुरुष में जो रूप (तस्मै आदि) बतलाये गये हैं, ठीक उन्हीं की तरह इदम् (यह), किम् (क्या) यत् (जो) और एतत् (यह) के रूप भी बनते हैं। यहाँ सिर्फ इतना ध्यान रखना चाहिये कि प्रथम-पुरुष वाले रूपों में जहां 'त' है, वहाँ—

(क) 'इदम' में 'अ' हो जाता है। जैसे—अस्मै, आभ्याम्, एभ्यः, अस्यै, आदि।

(ख) 'किम्' में 'क' हो जाता है। जैसे—कस्मै, काभ्याम्, केभ्यः, कस्यै, आदि।

(ग) 'यत्' में 'य' हो जाता है। जैसे—यस्मै, याभ्याम्, येभ्यः, यस्यै आदि।

(घ) 'एतत्' में 'एत' हो जाता है। जैसे—एतस्मै, एताभ्याम्, एतेभ्यः, एतस्यै, आदि।

वाक्य-रचना

स पूजायै पुष्पाणि चिनोति=पूजा के लये फूल चुनता है।
अहं तुभ्यं दुग्धम् आनयामि=मैं तुम्हारे लिये दूध लाता हूँ।
स ब्राह्मणेभ्यः धनं ददाति=वह ब्राह्मणों के लिये धन देता है।
त्वं धनाय स्पृहयसि=तुम धन के लिये अभिलाषा करते हो।
स तस्यै बालिकायै पुस्तकं ददाति=वह उस लड़की के लिये पुस्तक देता है।
अहम् एतस्मै बालिकाय क्रीडनकं ददामि=मैं इस लड़के के लिये खिलौना देता हूँ।

भृत्यः स्वामिने जलं नयति = नौकर मालिक के लिये जल ले जाता है।
सा रोगिभ्यः पथ्यं पचति = वह रोगियों के लिये पथ्य बनाती है।
ते स्नानाय नदीं यान्ति = वे लोग स्नान के लिये नदी जाते हैं।
वयं भोजनाय पाकशालां गच्छामः = हम लोग भोजन के लिये रसोई घर जाते हैं।

गुरुः छात्राभ्यां पाठं ददाति = गुरु दोनों छात्रों के लिये पाठ देता है।
कवयः राज्ञे कवितां रचयन्ति = कवि लोग राजा के लिये कविता बनाते हैं।

राजा विद्वद्भ्यां पुरस्कारं ददाति = राजा दोनों विद्वानों के लिये पुरस्कार देता है।

अहं युवाभ्यां शिक्षां ददामि = मैं तुम दोनों के लिये शिक्षा देता हूँ।
अहं पाठशालायै शुल्कम आनयामि = मैं स्कूल के लिये फीस लाता हूँ।

अभ्यास

१. संसकृत में अनुवाद करो—

मैं उस लड़के के लिये किताब ले जाता हूँ। तुम मेरे लिये क्या लाये हो? वह किस परीक्षा के लिये पढ़ता है? हम लोग तुम्हारे लिये सब कुछ करते हैं। मुनि लोग धर्म के लिये कष्ट सहते हैं। वे लोग भूमि के लिये युद्ध करते हैं। तुम यश के लिये अभिलाषा रखते हो। वह गरीबों के लिये वस्त्र बाँटता है (वितरति)। मैं स्त्री के लिये दवा भेजता हूँ (प्रेषयामि)। मैं तुम लोगों के लिये सौगात (सन्देश) भेजता हूँ।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

ते दरिद्रेभ्यः अन्नं ददति। वयं गुरवे दक्षिणां नयामः। स स्त्रियै शाटीं (साड़ी नयति)। सा आभूषणाय स्पृहयति। ते शयनाय गृहं

गच्छन्ति। स गोभ्यां घासम् आनयति। अहं अतिथिभ्यः ताम्बूलं (पान) ददामि। स शिशुभ्यः मिष्टान्नं क्रीणाति। अहं ताभ्यः बालिकाभ्यः। पुस्तकानि प्रेषयामः। वयं धर्मरक्षायै प्राणान् दास्यामः।

३. शुद्ध करो—

अहं तेभ्यः स्त्रीभ्यः पुस्तकानि प्रेपयामि। वयं राज्ञेभ्यः कवितां रचयामः। त्वं ताभ्यां बालकाभ्यां मिष्टान्नं ददासि। स कस्मै बालिकायै क्रीडनकं क्रीणाति? सा देव्याय पुष्पाणि नयति। स विद्वानाय धनं ददाति।

४. सम्प्रदान कारक द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

सा······भिक्षां ददाति। अहं······जलं ददामि। ते······पिण्डं ददति। वयं······अर्घ्यं दद्मः। त्वम् एतस्मै······फलं नयसि। ते··· स्पृहयन्ति।

चौथा पाठ

अपादान कारक

(१) वह घर से आता है।

(२) वह पेड़ से गिर पड़ा।

इन वाक्यों में सूक्ष्मलिखित पद अपादान कारक हैं।

हिन्दी में जैसे शब्दों के बाद 'से' लगाकर अपादान कारक बनते हैं, उसी तरह संस्कृत में शब्दों के बाद पञ्चमी विभक्ति लगाकर अपादान कारक बनाते हैं।

भिन्न-भिन्न शब्दों में पञ्चमी विभक्ति कैसे लगाई जाती है, यही इस पाठ में बताया जाता है।

संज्ञा

(क) एकवचन

(१) अकारान्त शब्दों में 'आत्' लगाकर पञ्चमी विभक्ति बनाई जाती है। जैसे,

गृह—गृहात् (घर से)
वृक्ष—वृक्षात् (वृक्ष से)
स गृहात् आगच्छति=वह घर से आता है।
स वृक्षात् अपतत्=वह वृक्ष से गिर पड़ा।

नोट—'सर्व' 'पूर्व' 'पर' और 'एक' शब्दों के साथ 'आत्' के बदले 'स्मात्' लगाया जाता है। जैसे—

सः एकस्मात ग्रामात् आगच्छति=वह एक गांव से आता है।

(२) बाकी शब्दों के रूप पञ्चमी विभक्ति में वैसे ही होते हैं, जैसे षष्ठी विभक्ति में। (देखो, सम्बन्ध—प्रकरण)

स्वरान्त और व्यञ्जनान्त

वाक्यों के उदाहरण—

अहं पाठशालायाः आगच्छामि = मैं स्कूल से आता हूँ

इयं नदी गिरेः निःसरति = यह नदी पहाड़ से निकलती है।

स गुरोः साहित्यं पठति = वह गुरु से साहित्य पढ़ता है।

अहं साधोः धर्मं शृणोमि = मैं साधु से धर्म सुनता हूँ।

जनाः मृत्योः बिभ्यति = लोग मृत्यु से डरते हैं।

सा पितु लज्जते = वह बाप से लजाती है।

त्वं दातुः धनं गृह्णासि = तुम दाता से धन लेते हो।

खन्याः रत्नानि जायन्ते = खान से रत्न उत्पन्न होते हैं।

सा नद्याः जलम् आनयति = वह नदी से जल लाती है।

स स्त्रियाः परामर्शं = गृह्णाति = वह स्त्री से सलाह लेता है।

तस्य तनोः स्वेदः जायते = उसके शरीर से पसीना छूटता है।

सा श्वश्र्वाः उपदेशं शृणोति = वह सास से उपदेश सुनती है।

स मातुः लुकायते = वह माँ से छिपता है।

बालकाः धेनोः बिभेति = लड़का गाय से डरता है।

दध्नः घृतम् उत्पद्यते = दही से घी उत्पन्न होता है।

जलमुचः वारीणि पतन्ति = मेघ से जल गिरते हैं।

अहं वणिजः वस्तूनि क्रीणामि = मैं व्यापारी से चीजें खरीदता हूँ।

हिमवतः गंगा प्रभवति = हिमालय से गंगा निकलती है।

स विदुषः काव्यं शृणोति = वह विद्वान् से काव्य सुनता है।

त्वं पथः विचलसि = तुम रास्ते से हटते हो।

कविः राज्ञः द्रव्यम् आप्नोति = कवि राजा से धन लेता है।

स भवतः ऋणं गृह्णाति = वह आपसे ऋण लेता है।

(ख) द्विवचन और बहुवचन

द्विवचन और बहुवचन में पञ्चमी विभक्ति लगाना विद्यार्थियों के लिये बड़ा ही सुविधाजनक है, क्योंकि इनमें शब्दों के ठीक वही रूप होते हैं जो चतुर्थी विभक्ति में। जैसे—

		द्वि०	ब० व०
बालक	चतुर्थी—	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
	पञ्चमी—	,,	,,
मुनि	चतुर्थी—	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
	पञ्चमी—	,,	,,

नोट—इस बात को अच्छी तरह स्मरण रखना चाहिये कि तृतीया, चतुर्थी और पञ्चमी, इन तीनों के द्विवचन में शब्द के बाद 'भ्याम्' जोड़ा जाता है। जैसे, 'पादाभ्याम्' कहने से ज्ञात होता है कि 'पाद' शब्द के बाद तृतीया, चतुर्थी या पञ्चमी विभक्ति जोड़ी गई है। ऐसी अवस्था में प्रकरण वा वाक्य-विन्यास के अनुसार अर्थ लगाना चाहिये। जैसे,

तृतीया—स पादाभ्याम् गच्छति = वह पाँवों के द्वारा जाता है।

चतुर्थी—अहं पादाभ्याम् उपानहौ क्रीणाम = मैं पाँवों के लिये जूते खरीदता हूँ।

पञ्चमी—विष्णोः पादाभ्यां गङ्गा अजायत = विष्णु के पाँवों से गंगा उत्पन्न हुई।

इसी तरह 'भ्यः' पञ्चमी और चतुर्थी दोनों के बहुवचन में जोड़ा जाता है।

चतुर्थी—स मुनिभ्यः फलानि ददाति = वह मुनियों के लिये फल देता है।

पञ्चमी—स मुनिभ्यः धर्मं पृच्छति = वह मुनियों से धर्म पूछता है।

वाक्यों के उदाहरण—

ब्राह्मणः बाहुभ्यां क्षत्रियाः अजायन्त—ब्रह्मा की बाहों से क्षत्रिय उत्पन्न हुए।

ऊरुभ्याँ वैश्याः अजायन्त—जाघों से वैश्य उत्पन्न हुए।

पद्भ्यां शूद्राः अजायन्त—पावों से शूद्र उत्पन्न हुए।

जनाः चक्षुर्भ्यां पश्यन्ति—लोग आँखों से देखते हैं।

स जन्तुभ्यः बिभेति—वह जन्तुओं से डरता है।

त्वं भ्रातृभ्यः लुकायसे—तुम भाइयों से छिपते हो।

गिरिभ्यः नद्यः प्रभवन्ति—पहाड़ों से नदियाँ निकलती हैं।

स विद्वद्भ्यः शास्त्रं शृणोति—वह विद्वानों से शास्त्र सुनता है।

अहं राजभ्यः पुरस्कारं गृह्णामि—मैं राजाओं से पुरस्कार लेता हूँ।

राजा प्रजाभ्यः करं गृह्णाति—राजा प्रजाओं से कर लेता है।

मित्रं मां संकटात् त्रायते—मित्र संकट से मेरी रक्षा करता है।

२. सर्वनाम

१. सर्वनामों के पञ्चमी द्विवचन में वही रूप होते हैं जो चतुर्थी द्विवचन में।

२. 'इदम्' 'किम' 'यत्' 'तत्' 'एतत्' और 'अदस्' शब्दों के पञ्चमो बहुवचन में वही रूप होते हैं जो चतुर्थी बहुवचन में।

३. उपर्युक्त छः सर्वनामों के पञ्चमी एकवचन बनाने की यह रीति है—

(क) पहले चतुर्थी एकवचन के रूप बना जाओ।

(ख) अब इनमें जहाँ 'स्मै' है, वहाँ 'स्मात्' कर दो, और

(ग) जहाँ 'स्यै' (स्त्रीलिंग में) है, वहाँ 'स्याः' कर दो।

४. 'अस्मद्' और 'युष्मद्' शब्दों में पञ्चमी विभक्ति लगने पर ये रूप हो जाते हैं।

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
अस्मद् 1st. Person	मत् मुझसे	आवाभ्यां हम दोनों से	अस्मत् हम लोगों से
युष्मद् 2nd. Person	त्वत् तुझसे	युवाभ्यां तुम दोनों से	युष्मत् तुम लोगों से

वाक्य-रचना

अहं तस्मात् ग्रामात् आगच्छामि = मैं उस गाँव से आता हूं।

त्वं कस्मात् गुरोः पठसि = तुम किस गुरु से पढ़ते हो ?

अस्मात् कारणात् अहम् अनुपस्थितः अभवम् = इस कारण से मैं अनुपस्थित हुआ।

अमुष्मात् बालकात् प्रश्नं पृच्छ = इस लड़के से प्रश्न पूछो।

राजा सर्वेभ्यः जनेभ्यः करम् आदत्ते = राजा सभी लोगों से कर लेता है।

अहं त्वत् शिक्षां प्राप्नोमि = मैं तुमसे शिक्षा पाता हूँ।

स सर्पात् बिभेति = वह साँप से डरता है।

त्वम् अध्ययनात् विरमसि = तुम पढ़ने से हटते हो।

तरुभ्यः पत्राणि पतन्ति = पेड़ों से पत्ते गिरते हैं।

सर्वेभ्यः छात्रेभ्यः शुल्कं गृहाण = सभी विद्यार्थियों से फीस लो।

साधवः पापात् निवर्त्तन्ते = साधुलोग पाप से अलग रहते हैं।

अहं कलहात् विरमामि=मैं झगड़े से अलग रहता हूँ।

स सर्वाभ्यः विपद्भ्यः मां त्रायते=वह सभी विपत्तियों से मेरी रक्षा करता है।

अहं तेभ्यः वृक्षेभ्यः पुष्पं चिनोमि=मैं उन पेड़ों से फूल चुनता हूँ।

वयं तस्याः एव पाठशालायाः आगच्छामः=हम लोग उसी पाठशाला से आते हैं।

अहं तेभ्यः पुम्भ्यः पृच्छामि=मैं उन पुरुषों से पूछता हूँ।

लोभात् नाशः जायते=लोभ से नाश होता है।

क्रोधात् हानिः जायते=क्रोध से हानि होती है।

श्रमात् विद्या भवति=श्रम से विद्या होती है।

धर्मात् सुखं भवति=धर्म से सुख होता है।

सत्यात् एव जयः भवति=सत्य से ही जय होती है।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

उस पेड़ से फल गिरते हैं। यह बाघ से डरता है। तुम मुझसे लजाते हो। वह मालिक से छिपता है। वह मुझ से कथा सुनता है। मैं तुम लोगों से कुशल पूछता हूँ। वह पोखरे से पानी लाती है। मैं गोशाला से दूध लाता हूँ। तुम किस गाँव से आते हो? हम दोनों उस गुरु से संस्कृत पढ़ते हैं। तुम लाइब्रेरी से (पुस्तकालयात्) पुस्तक लाओ। मैं असत्य से दूर रहता हूँ। तुम महात्माओं से उपदेश लेते हो। हम लोग इसी स्कूल से आ रहे हैं। ईश्वर तुम्हें दुःख से बचावें।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

त्वं कलहात् निवर्त्तसे। वयं तस्मात् अध्यापकात् पठामः। सः चौरात् बिभेति। सा गृहात् आगच्छति। मुनयः लोभात् विरमन्ति। कस्मात् कारणात् गच्छसि ? अहं प्रयागात् आगच्छामि। स काश्याः प्रसादम् आनयति। सा ताभ्यां स्त्रीभ्यां कुशलं पृच्छति। ते आवाभ्यां परामर्शं गृह्णन्ति पुस्तकेभ्यः सारं गृहाण।

३. शुद्ध करो—

त्वं कस्मात पाठशालायाः आगच्छसि ? सा तेभ्यः बालिकाभ्यः पाठं शृणोति।

४. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति करो—

स·········विरमति। अहं·········निवर्त्ते। त्वं·········गुरोः पठसि। अहं············आगच्छामि। वयं············कथां शृणुमः ते द्रव्यं गृह्णान्ति।

पाँचवाँ पाठ

—०—

९. अधिकरण कारक

(१) मैं स्कूल में पढ़ता हूं।

(२) वह घर पर रहता है।

इन वाक्यों में सूक्ष्मलिखित पद अधिकरण कारक हैं। इनसे क्रिया का आधार ज्ञात होता है। अर्थात् यह मालूम होता है कि क्रिया कहाँ—किस स्थान व समय में—होती है। अतएव ऐसे पदों को विधेय का विस्तार समझना चाहिये।

जिस तरह हिन्दी में शब्दों के वाद 'में' और 'पर' लगा कर अधिकरण कारक वनाते हैं, उसी तरह संस्कृत में शब्दों के वाद सप्तमी विभक्ति लगाकर अधिकरण कारक वनाते हैं।

भिन्न-भिन्न शब्दों के साथ सप्तमी विभक्ति कैसे जोड़नी चाहिये, यही इस पाठ में वताया जाता है।

१. स्वरान्त शब्द

(क) एकवचन

(१) अकारान्त शब्दों में अन्तिम 'अ' के स्थान में 'ए' कर देना चाहिये। जैसे,

गृह—गृहे; (घर पर) वन—वने (वन में)
ते वने वसन्ति=वे सव वन में रहते हैं।
स गृहे तिष्ठति=वह घर पर रहता है।
अहम् आसने उपविशामि—मैं आसन पर बैठता हूँ।
वयं भारतवर्षे वसामः=हम लोग भारतवर्ष में रहते हैं।

(२) आकारान्त (स्त्रीलिङ्ग) शब्दों में 'याम्' जोड़ देना चाहिये। जैसे,

मथुरा—मथुरायाम् (मथुरा में) इत्यादि।

ते मिथिलायां वसन्ति=वे लोग मिथिला में रहते हैं।

गङ्गायां नक्राः सन्ति= गङ्गा में घड़ियाल हैं।

अहं संस्कृतभाषायां वदामि=मैं संस्कृत भाषा में बोलता हूँ।

सभायां विद्वांसः सन्ति=सभा में विद्वान् हैं।

(३) इकारान्त और उकारान्त शब्दों में अन्तिम 'इ' और 'उ' को हटा कर औ कर देना चाहिये। जैसे,

गिरि—गिरौ (पहाड़ पर) साधु—साधौ (साधु में)

गिरौ मन्दिरं वर्त्तते=पहाड़ पर मन्दिर है।

साधौ दया वर्त्तते=साधु में दया है।

मम पाणौ लेखनी वर्त्तते=मेरे हाथ में कलम है।

तरौ कपयः वर्त्तन्ते=वृक्ष पर बन्दर हैं।

स भूमौ शेते=वह भूमि पर सोता है।

अहं रात्रौ गमिष्यामि=मैं रात में जाऊँगा।

तस्य तनौ दद्रुः वर्त्तते=उसके बदन में दाद है।

नोट—नपुंसक लिंग में यह बात लागू नहीं होती। उसमें शब्द के बाद 'नि' जोड़ दिया जाता है। जैसे,

वारि—वारिणि (जल में)

मधु—मधुनि (मधु में)

वारिणि कमलानि जायन्ते=जल में कमल उत्पन्न होते हैं।

मधुनि मधुरता वर्त्तते=मधु में मिठास है।

(४) ईकारान्त और ऊकारान्त (स्त्रीलिङ्ग) शब्दों में 'आम' जोड़ देना चाहिये। जैसे,

नदी—नद्याम् (नदी में) चमू—चम्वाम् (सेना में)

नद्यः नौः वर्त्तते = नदी में नाव है।

मम अङ्गुल्यां मुद्रिका वर्त्तते = मेरी अँगुली में अँगूठी है।

चम्वां सैनिकाः सन्ति = सेना में सिपाही हैं।

वध्वां लज्जा वर्त्तते = बहू में लाज है।

(५) अन्य स्वरान्त शब्दों में, 'ऋ' के स्थान में 'अरि' 'ओ' के स्थान में 'अवि' और 'औ' के स्थान में 'आव' लगाना चाहिये।

जैसे,

पितृ—पित् + अरि = पितरि [पिता में]

गो—ग् + अवि = गवि [गाय में]

नौ—न् + आवि = नावि [नाव में]

रै—र् + आयि = रायि [धन में]

तस्य पितरि प्रेम वर्त्तते = उसका पिता में प्रेम है।

आर्य्याणां गवि भक्तिः अस्ति = आर्य्यों की गाय में भक्ति है।

नावि बहवः जनाः सन्ति = नाव में बहुत से लोग हैं।

विशेष—

(अ) 'स्त्री' 'श्री' और 'धी' शब्दों से क्रमशः स्त्रियाम्, श्रियाम, और धियाम् रूप बनते हैं। जैसे,

स्त्रियां करुणा वर्त्तते = स्त्री में करुणा है।

(आ) 'पति' और 'सखि' शब्दों से क्रमशः 'पत्यौ' और 'सख्यौ' रूप बनते हैं। जैसे,

तस्याः पत्यौ अनुरागः वर्त्तते=इस (स्त्री) का पति में अनुराग है।

(इ) 'एक' 'सर्व' 'पूर्व' 'पर' इन विशेषणों के बाद 'स्मिन्' लगाया जाता है। जैसे,

एकस्मिन् नगरे कोऽपि नापितः निवसतिस्म=एक नगर में कोई नाई रहता था।

(ई) उपर्युक्त विशेषण जब स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं, तब उनमें 'स्मिन्' के बदले 'याम' लगाया जाता है। जैसे,

एकस्यां रात्रौ चौराः आगच्छन्=एक रात में चोर आये।

पूर्वस्यां दिशि सूर्यः उदयति = पूर्व दिशा में सूर्य उदित होता है।

(ख) द्विवचन

सप्तमी द्विवचन में शब्दों के वही रूप होते हैं जो षष्ठी द्विवचन में। अतएव इस सम्बन्ध में विद्यार्थियों को कोई झंझट ही नहीं है।

वाक्यों के उदाहरण

तस्य नेत्रयोः उपनेत्रम् वर्त्तते=उसकी आँखों पर चश्मा है।

मम पाण्योः लडडुकाः सन्ति=मेरे हाथों में लड्डू है।

द्वयोः तिथ्योः सभा भविष्यति=दोनों तिथियों में सभा होगी।

तस्य जानुनोः व्यथा वर्त्तते=उसके घुटनों में दर्द है।

(ग) बहुवचन

सप्तमी बहुवचन बनाने के लिये शब्दों के बाद 'षु' जोड़ देना चाहिये। जैसे,

मुनि—मुनिषु (मुनियों में)

धेनु—धेनुषु (गायों में)

भ्रातृ—भ्रातृषु (दो भाइयों में)

वारि—वारिषु (जलों में)

नोट—(१) अकारान्त शब्दों के बाद अन्तिम 'अ' हटाकर 'एषु' जोड़ना चाहिये। जैसे,

बालक—बालकेषु (बालकों में)

फल—फलेषु (फलों में).

(२) आकारान्त शब्दों के बाद 'षु' के बदले 'सु' जोड़ना चाहिये। जैसे,

लता—लतासु (लताओं में)

बालिका—बालिकासु (बालिकाओं में)

वाक्यों के उदाहरण—

ते वनेषु भ्रमन्ति = वे लोग वनों में घूमते हैं।
स गिरिषु भ्रमति = वह पहाड़ों पर घूमता है।
तरुषु फलानि वर्त्तन्ते = पेड़ों में फल हैं।
नदीषु तरङ्गाः भवन्ति = नदियों में तरङ्गे होती हैं।
लतासु पुष्पाणि शोभन्ते = लताओं में फूल शोभते हैं।
नौषु मत्स्याः सन्ति = नावों में मछलियाँ हैं।

२. व्यञ्जनान्त शब्द

(१)—एकवचन में शब्दों के बाद 'इ' जोड़ देना चाहिये। जैसे

वाच्—वाचि (वचन में)

दिश्—दिशि (दिशा में)

नोट—(१) 'राजन्' 'पथिन्' 'युवन्' 'श्वन्' 'विद्वस्' और 'पुमस्' शब्दों से क्रमशः राज्ञि, पथि, यूनि, शुनि, विदुषि और पुंसि रूप होते हैं।

(२) सप्तमी द्विवचन में शब्दों के वही रूप होते हैं जो षष्ठी द्विवचन में। जैसे,

भवत्— { षष्ठी— भवतोः = आप दोनों का।
सप्तमी— ,, = आप दोनों में।

(३) बहुवचन में शब्दों के बाद 'सु' जोड़ देना चाहिये। जैसे,

भवत्—भवत्सु (आप लोगों में)

महत्—महत्सु (बड़ों में)

नोट—व्यञ्जनान्त शब्दों में 'सु' जोड़ने के पहले उनका रूप वही हो जाता है जो 'भ्यां, भ्यः' आदि व्यञ्जनादि विभक्तियाँ जोड़ने के पहले होता है। (देखो, फुटनोट)। जैसे,

सम्राज्—सम्राट्+सु=सम्राट्सु (सम्राटों में)
राजन्—राज +सु=राजसु (राजाओं में)
पथिन्—पथि +सु=पथिषु* (रास्तों में)
वाच्—वाक +सु वाक्षु† (वचनों में)
वणिज्—वणिक्+सु=वणिक्षु † (व्यापारियों में)
पुमस्—पुम् +सु=पुंसु (पुरुषों में)
विद्वस्—विद्वत्+सु=विद्वत्सु (विद्वानों में)
गुणिन्—गुणि +सु=गुणिषु* (गुणियों में)
दिश्—दिक् +सु=दिक्षु † (दिशाओं में)

३. सर्वनाम

(१) सप्तमी द्विवचन में सर्वनामों के वही रूप होते हैं जो षष्ठी द्विवचन में

---

* 'इ' के बाद 'स' जोड़ने से 'ष' हो जाता है।

† 'क्' के बाद 'स' जोड़ने से 'ष' हो जाता है, और 'क्' 'ष' मिलकर 'क्ष' बन जाते हैं।

(२) 'तत्' 'यत्' 'एतत्' 'अदस्' 'किम्' और 'इदम्' शब्दों के

(क) षष्ठी एकवचन में जो रूप हैं, उनमें 'स्य' को जगह 'स्मिन्' और 'स्याः' की जगह 'स्याम्' कर देने से सप्तमी एक-वचन के रूप बन जायँगे।

(ख) षष्ठी बहुवचन में जो रूप होते हैं, उनमें 'षाम्' की जगह 'षु' और 'साम्' की जगह 'सु' कर देने से सप्तमी बहुवचन के रूप बन जायँगे।

(३) 'अस्मद्' और 'युष्मद्' शब्दों के रूप इस प्रकार के होते हैं—

	ए० व०	द्वि०	ब० व०
अस्मद् 1 st. Person	मयि मुझमें	आवयोः हम दोनों में	अस्मासु हम लोगों में
युष्मद् 2 nd. person	त्वयि तुम में	युवयोः तुम दोनों में	युष्मासु तुम लोगों में

वाक्य-रचना

तस्मिन् नगरे कश्चित् विप्रः आसीत्=उस नगर में कोई विप्र था।
तस्यां रात्रौ कोलाहलः अभवत्=उस रात में कोलाहल हुआ।
अहं चतुर्दश्यां तिथौ गमिष्यामि=मैं चतुर्दशी तिथि में जाऊँगा।
आवयोः मैत्री वर्त्तते=हम दोनों में मैत्री है।

सर्वासु दिक्षु अन्धकारः जातः=सभी दिशाओं में अँधेरा होगया।
उत्तरस्यां* दिशि हिमालयः वर्त्तते=उत्तर दिशा में हिमालय है।

* 'पूर्व' 'पर' 'उत्तर' 'दक्षिण' इन शब्दों के रूप सर्वनाम की तरह चलते हैं। 'पश्चिम' शब्द के रूप पुल्लिङ्ग में 'बालक' और स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द की तरह चलते हैं। जैसे, दक्षिण में दक्षिणास्यां दिशि=किन्तु पश्चिम में="पश्चिमायां दिशि"।

अस्मिन् देशे राजा नास्ति = इस देश में राजा नहीं है।
कस्यां पाठशालायां पठसि = किस स्कूल में पढ़ते हो ?
अस्यां नद्यां मत्स्याः सन्ति = इस नदी में मछलियाँ हैं।
युष्मासु प्रीतिः नास्ति = तुम लोगों में प्रीति नहीं है।
तेषु वनेषु सिंहाः वसन्ति = उन वनों में सिंह रहते हैं।
अस्मिन् पथि दस्यवः सन्ति = इस मार्ग में डाकू हैं।
माघे मासि शैत्यं भवति = माघ महीने में जाड़ा होता है।
अस्मिन् वर्षे दुर्भिक्षं भविष्यति = इस वर्ष अकाल पड़ेगा।
आगामिनि सप्ताहे परीक्षा भविष्यति = आगामी सप्ताह में परीक्षा होगी।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

इस स्कूल में बहुत से लड़के पढ़ते हैं। इस गाँव में ब्राह्मण रहते हैं। उस कुएँ में पानी नहीं है। दाल में नमक नहीं है। तुम्हारी पेटी में आइना (दर्पणः) है। उसकी पीठ में खुजली (पामा) है। इन फूलों में सुगन्धि नहीं है। उसके दांतों में दर्द है। तुम्हारे घर में मधु है। इस बगीचे में (वाटिकायां) मनोहर फूल हैं। दोनों राजाओं में प्रीति नहीं है। आकाश में बादल घूमते हैं। उन पुस्तकों में यह विषय नहीं है। पच्छिम में सूर्य डूब रहे हैं (अस्तं गच्छति)। एक दिन वह शिकार खेलने (मृगयार्थं) गया। दरवाजे पर (द्वारि) अतिथि बैठा है।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

अस्यां रात्रौ फाल्गुने मासि, शुक्ले पक्षे, पञ्चम्यां तिथौ, अहं सत्यनारायणस्य पूजां करोमि। अस्यां रात्रौ ताराः द्योतन्ते। वयं सन्ध्यायां अभिष्यामः। मन्दिरेषु पूजकाः सन्ति। सरोवरे कमलानि शोभन्ते। अस्मिन् पथि अश्वारोहिणः (घुड़सवार) चलन्ति। ग्रामस्य सीमनि वृक्षाः वर्तन्ते।

तिलेषु तैलं वर्त्तते । पात्रे घृतं नास्ति । वत्सरे षट् ऋतवः भवन्ति । मासि त्रिंशत् दिनानि भवन्ति । सर्पस्य मस्तके मणिः भवति । समुद्रस्य तले रत्नानि सन्ति । गोविन्दस्य शिरसि पीड़ा वर्त्तते ।

३. शुद्ध करो—

दक्षिणायां दिधि महासागरः वर्त्तते । पश्चिमस्यां दिशि एकं द्वीपं वर्त्तते । पर्वतस्मिन् गुहा वर्त्तते । एके दिवसे स नगरं अगच्छत् ? लतापु पुष्पाणि सन्ति । मम जानौ व्यथा विद्यते । पथिषु कण्टकाः वर्त्तन्ते । तस्य वाक्षु मधुरता वर्त्तते ।

४. अधिकरण कारक के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

स······दिक्षु भ्रमति ।··········रात्रौ अहं ·····स्नास्यामि ।······ वृक्षेषु पक्षिणः सन्ति ।······पुस्तकयोः चित्राणि सन्ति ।······पाठशालासु बालिकाः पठन्ति । गोविन्दस्य··········भोज्यम् वर्त्तते ।

—

छठा पाठ

निमित्तार्थक क्रिया

(१) वह पढ़ने को आता है।

(२) मैं सोने को जाता हूँ।

इन वाक्यों में सूक्ष्मलिखित पद क्रिया से बने हुए हैं, किन्तु विधेय नहीं हैं। इन्हें विधेय का विस्तार कह सकते हैं।

नोट—'वह पढ़ने को आता है' इस वाक्य से दो क्रियाएँ सूचित होती हैं—(१) पढ़ना, और (२) आना। इसमें दूसरी क्रिया तो विधेय है, क्योंकि उसका उद्देश्य के साथ सीधा लगाव है। और पहली क्रिया विधेय का निमित्त अथवा कारण प्रकट करती है। इस तरह की क्रिया को हिन्दी में निमित्तार्थक क्रिया कहते हैं।

संस्कृत में निमित्तार्थक क्रिया बनाने के लिये धातु के बाद तुम्, जोड़ देते हैं। यह सामान्यतः विधेय के पहले रक्खी जाती है। जैसे, स्ना+तुम्=स्नातुम् नहाने को। अहं स्नातुं गच्छामि=मैं नहाने को जाता हूँ।

नोट—तुम् जोड़ कर बने हुए शब्द 'अव्यय' होते हैं। अर्थात् इनका रूप सर्वदा एक समान रहता है। जैसे,

सः स्नातुं गच्छति=वह नहाने को जाता है।
सा स्नातुं गच्छति=वह नहाने को जाती है।
ते स्नातुं गच्छन्ति=वे लोग नहाने को जाते हैं।
वयं स्नातुं गमिष्यामः= हम लोग नहाने जायंगे।

'तुम' प्रत्ययवाले शब्द संस्कृत में कहाँ-कहाँ प्रयुक्त हो सकते हैं, यह बतलाने के लिये नीचे कुछ नोट दिये जाते हैं। विद्यार्थियों को इन्हें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

नोट (१) अँग्रेजी में जहाँ Gerundial Infinitive निमित्तार्थक क्रिया का प्रयोग होता है, संस्कृत में वहाँ 'तुम्' का व्यवहार किया जाता है। जैसे, स द्रष्टुं याति=वह देखने जाता है—He goes to see.

(२) हिन्दी में, 'चाहना' 'सकना' और 'लगना' के योग से संयुक्त क्रियाएं बनती हैं, उनका अनुवाद करने के लिये संस्कृत में क्रमशः 'इष' (चाहना,) 'शक् (सकना) और 'आरम्भ' (शुरू करना) धातुओं के पहले 'तुम्' का व्यवहार किया जाता है। जैसे,

(क) अहं पठितुम् इच्छामि=मैं पढ़ना चाहता हूँ।

(ख) अहं पठितुम् शक्नोमि=मैं पढ़ सकता हूँ।

(ग) अहं पठितुम् आरभे=मैं पढ़ने लगता हूँ।

(३) 'समर्थ' (able) 'प्रस्तुत' (ready) और 'उत्सुक' (anxious) इन विशेषणों के पहले भी संस्कृत में 'तुम्' का व्यवहार किया जाता है। जैसे,

(क) सः पठितुं समर्थः=वह पढ़ने में समर्थ है।
(He is *able to read*)

(ख) सः पठितुं प्रस्तुतः=वह पढ़ने को तैयार है।
(He is *ready to read*)

(ग) सः पठितुम उत्सुकः=वह पढ़ने को उत्सुक है।
(He is *anxious to read*)

(४) 'समय' (Time) शब्द के पहले भी 'तुम्' का प्रयोग कर सकते हैं जैसे,

इदानीं पठितुम् समयः=अभी पढ़ने का समय है।
(It is *time to read now*)

(१) कृ—कर्त्तुम्—to do.
अहम् इदं कार्य्यं कर्त्तुम् शक्नोमि=मैं यह काम कर सकता हूँ

(२) स्मृ—स्मर्त्तुम्—to remember.
सः पाठं स्मर्त्तुम् आरभत=वह पाठ याद करने लगा।

(३) हृ—हर्त्तुम्—to take away.
गंगाजलम् पापानि हर्त्तुं समर्थम्=गंगाजल पापों को हरण करने में समर्थ है।

(४) ज्ञा—ज्ञातुम्—to know
त्वं न ज्ञातुम् शक्नोषि=तुम नहीं जान सकते हो।

(५) पा—पातुम्—to drink, (also to protect)
स जलं पातुम् अगच्छत्=वह जल पीने को गया।
राजा प्रजां पातुम् समर्थः=राजा प्रजा को पालने में समर्थ है।

(६) दा—दातुम्—to give
अहं किञ्चिदपि न दातुं शक्नोमि=मैं कुछ भी नहीं दे सकता हूँ।

(७) स्था—स्थातुम्—to stay
स तत्रैव स्थातुम् इच्छति=वह वहीं रहना चाहता है।

(८) स्ना—स्नातुम्—to bathe
गोपालः स्नातुम् अगच्छत्=गोपाल नहाने गया।

(९) जि—जेतुम्—to conquer
सः शत्रुं 'जेतुम्' समर्थः—वह शत्रु को जीतने में समर्थ है।

(१०) चि—चेतुम्—to pick up
सा फलानि चेतुम् आरभत=वह फलों को चुनने लगी।

(११) नी—नेतुम्=to carry
अहं पुस्तकं नेतुम् इच्छामि=मैं पुस्तक ले जाना चाहता हूँ

(१२) क्री—क्रेतुम् = to purchase

सः गां क्रेतुम् उत्सुकः = वह गाय खरीदने को उत्सुक है।

(१३) शी—शयितुम् = to sleep

अहं शयितुम् इच्छामि = मैं सोना चाहता हूँ।

(१४) श्रु—श्रोतुम् = to hear

सा कथां श्रोतुम् आरभत = वह कहानी सुनने लगी।

(१५) भू—भवितुम् = to be

त्वं पण्डितः भवितुम् इच्छसि = तुम पण्डित होना चाहते हो।

(१६) दृश्—द्रष्टुम् = to see

अहं कौतुकं द्रष्टुं गमिष्यामि—मैं तमाशा देखने जाऊँगा।

(१७) पठ्—पठितुम् = to read

अहं समाचारपत्रं पठितुम् इच्छामि = मैं अखबार पढ़ना चाहता हूं।

(१८) लिख—लिखना = to write

स लेखितुम् आरभत = वह चिट्ठी लिखने लगा।

(१९) गम्—गन्तुम् = to go

अहं तत्र गन्तुम् इच्छामि = मैं वहाँ जाना चाहता हूँ।

(२०) भ्रम्—भ्रमितुम्—to walk

अयं भ्रमितुं समयः वर्त्तते = यह टहलने का समय है।

(२१) प्रच्छ—प्रष्टुम् = to ask

ते मां प्रष्टुम् आरभन्त = वे लोग मुझे पूछने लगे।

(२२) त्यज्—त्यक्तुं = to leave

इमां प्रकृतिं त्यक्तुं शक्नोषि ? = इस प्रकृति को छोड़ सकते हो ?

(२३) भुज्—भोक्तुम् = to eat

अहं भोक्तुम् इच्छामि = मैं खाना चाहता हूँ।

(२४) ग्रह्—ग्रहीतुम्=to take

सा जलं ग्रहीतुम् नदीं याति=वह जल लेने को नदी जाती है।

(२५) लभ्—लब्धुम्=to get

ते यशः लब्धुम् इच्छन्ति=वे लोग यश पाना चाहते हैं।

(२६) वस्—उषितुम्=to live

त्वं तत्र उषितुम् इच्छसि=तुम वहाँ रहना चाहते हो।

(२७) वह्—वोढुम्=to bear

सः भारं वोढुं समर्थः=वह भार ढोने में समर्थ है।

(२८) सह्—सोढुम्=to endure

वयं कष्टानि सोढुं प्रस्तुताः=हम लोग कष्ट सहने को तैयार हैं।

(२९) कथ्—कथयितुम्=to say

सः कथयितुम् आरभत=वह कहने लगा।

(३०) पूज्—पूजयितुम्=to worship

सा देवीं पूजयितुं गच्छति=वह देवी को पूजने जाती हैं।

नोट—उपसर्गयुक्त धातुओं में भी इसी तरह 'तुम्' जोड़ा जा सकता है। जैसे—

(क) सः आगन्तुम् इच्छति=वह आना चाहता है।

(ख) त्वं प्रस्थातुम् उत्सुकः असि=तुम विदा होने के लिये उत्सुक हो।

(ग) अहं पुस्तकं विक्रेतुं प्रस्तुतः अस्मि=मैं पुस्तक बेचने को तैयार हूं।

(घ) इदानीं कन्दुकम् आनेतुं समयः=अब गेंद लाने का समय है।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

मैं आप को देखना चाहता हूं। वह जोर से पढ़ने लगा। वह चिट्ठी पढ़ सकती है। वे लोग खाने को गये हैं। यह सोने का समय है। मैं जाने को तैयार हूं। हम लोग यह बात जानने के लिये उत्सुक हैं। तुम क्या लेना चाहते हो। वे लोग क्या सुनने को जाते हैं। वह पुस्तक लाने को गया है। मैं धनी होना चाहता हूं। ईश्वर सब कुछ कर सकता है।

२, हिन्दी में अनुवाद करो—

वयं भोक्तुम् इच्छामः। ते शयितुम् अगच्छन्। त्वं पठितुं समर्थः असि। साधुः वक्तुम् आरभत। आवां भ्रमितुं गच्छावः। अहं त्वां प्रष्टुम् इच्छामि। त्वम् अत्र स्थातुं शक्नोसि। सः तत्रैव उषितुम् इच्छति। सा दुःखं सोढुं समर्था। ब्राह्मणाः पूजयितुं गच्छन्ति। गोपालः जलं पातुं कूपं गच्छति। ईश्वरः अस्मान् पातुं समर्थः।

३. शुद्ध करो—

अहं अत्र वसितुं इच्छामि। छात्राः लिखितुं आरभन्तः। अहं मित्रं न त्यजितुं शक्नोमि। सा गमितुं प्रस्तुता अभवत। इदानीं भोजितुं समयः। स द्रव्यं लभितुं इच्छति।

४. 'तुम्' प्रत्ययान्त शब्दों के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्त्ति करो—

अहं जलं......गच्छामि। अहं त्वां......इच्छामि। ते कथां...... उत्सुकाः सन्ति। छात्राः गृहं......प्रस्तुताः सन्ति। इदानीं...... समयः वर्त्तते। वयं रामायणं......शक्नुमः।

१

सातवाँ पाठ

पूर्वकालिक क्रिया

(१) मैं नहाकर खाता हूं।

(२) वह कथा सुन कर सोता है।

उपर्युक्त वाक्यों में सूक्ष्मलिखित पद क्रिया से बने हुए हैं, किन्तु विधेय नहीं हैं। हाँ, विधेय के विशेषण जरूर हैं।

"मैं नहा कर खाता हूं" आदि वाक्यों से दो क्रियाएँ सूचित होती हैं—(१) नहाना, और (२) खाना। इन दोनों क्रियाओं में विधेय वाली क्रिया पीछे हुई है, और सूक्ष्मलिखित पदवाली क्रिया पहले हुई है। इसलिये ऐसे पदों को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

संस्कृत में पूर्वकालिक क्रिया बनाने के लिये दो उपाय हैं—

(१) साधारण धातुओं के बाद 'त्वा' जोड़ देते हैं। जैसे,

स्ना (नहाना)—स्नात्वा = नहाकर

श्रु (सुनना)—श्रुत्वा = सुनकर

(२) उपसर्गयुक्त धातुओं के बाद 'य' जोड़ देते हैं। जैसे,

* प्र + नम्—प्रणम्य = प्रणाम कर

आ + गम्—आगम्य = आकर

नोट—'त्वा' और 'य' लगाने के पूर्व बहुत से धातुओं के रूप में कुछ हेर फेर हो जाता है। इसलिये आगे मुख्य-मुख्य धातुओं से पूर्वकालिक रूप बनाकर दिखाये जाते हैं।

---

* प्र, परा, सम आदि बाईस उपसर्ग होते हैं। विद्यार्थी 'हिन्दी व्याकरण में इनका वर्णन पढ़ ही चुके होंगे। अतएव यहाँ विशेष विवरण नहीं दिया जाता।

(क) त्वा

(१) गम्—गत्वा=जाकर

स नदीं गत्वा स्नाति=वह नदी जाकर नहाता है।

(२) दृश्—दृष्ट्वा=देख कर।

अहं त्वां दृष्ट्वा प्रसन्नः अस्मि=मैं तुमको देखकर प्रसन्न हूँ।

(३) कृ—कृत्वा=कर

कार्य्यं कृत्वा हरिं भज=काम कर ईश्वर को भजो।

(४) भू—भूत्वा=होकर

सः रुग्णः भूत्वा गृहम् अगच्छत्=वह बीमार होकर घर गया

(५) प्रच्छ—पृष्ट्वा=पूछ कर

अहं गुरुं पृष्ट्वा आगच्छामि=मैं गुरु को पूछ कर आता हूँ।

(६) ज्ञा—ज्ञात्वा=जानकर

सः इदं ज्ञात्वा दुःखी अभवत्=वह यह जानकर दुखी हुआ।

(७) स्था—स्थित्वा=रहकर

अहं तत्रैव स्थित्वा पठिष्यामि=मैं वहीं रह कर पढ़ूँगा।

(८) दा—दत्त्वा=देकर

गोपःदुग्धंदत्त्वागृहम्अगच्छत्=ग्वाला दूध देकर घर गया।

(९) पा—पीत्वा=पीकर

अहं जलं पीत्वा आगच्छामि=मैं पानी पीकर आता हूँ।

(१०) स्ना—स्नात्वा=नहाकर

स स्नात्वा पूजां करोति=वह नहा कर पूजा करता है।

(११) जि—जित्वा=जीतकर

राजादेशंजित्वापुनरःगच्छत्=राजा देश जीतकर लौटआया।

(१२) चि—चित्वा=चुनकर

अहं पुष्पाणि चित्वा आगच्छामि=मैं फूल चुनकर आता हूँ।

(१३) स्मृ—स्मृत्वा=याद कर

स: पाठं स्मृत्वा पाठशालां गच्छति=वह पाठ याद कर स्कूल जाता है।

(१४) क्री—क्रीत्वा=खरीद कर

त्वं पुस्तकानि क्रीत्वा आगच्छ=तुम पुस्तकें खरीद कर आओ।

(१५) शी—शयित्वा=सो कर

स शयित्वा पठति=वह सोकर पढ़ता है।

(१६) श्रु—श्रुत्वा=सुन कर

सा कथां श्रुत्वा अक्रन्दत्=वह कथा सुन कर रोई।

(१७) धृ—धृत्वा=पकड़ कर

ते चौरं धृत्वा अताड़यन्=उन लोगों ने चोर को पकड़ कर पीटा।

(१८) पठ—पठित्वा=पढ़ कर

अहं पुस्तकं पठित्वा आगमिष्यामि=मैं पुस्तक पढ़कर आऊँगा।

(१९) लिख—लिखित्वा=लिख कर

पत्रं लिखित्वा माम् अनुगृहाणं कुरु=पत्र लिख कर मुझे अनुगृहीत करो।

(२०) वद्—उदित्वा=बोलकर

एतत् उदित्वा स तूष्णीम् अभवत्=यह बोल कर वह चुप हो गया।

(२१) वस्—उषित्वा=रह कर

वने उषित्वा अपि स्वकर्त्तव्यं कुरु=वन में रह कर भी अपना कर्त्तव्य करो।

(२२) वच्—उक्त्वा = कह कर

एवम् उक्त्वा सः पलायितः = ऐसा कहकर वह भाग गया ।

(२३) नम्—नत्वा = झुककर (अथवा प्रणाम कर)

सः गुरुं नत्वा उपविशति = वह गुरु को प्रणाम कर बैठता है ।

(२४) लभ्—लब्ध्वा = पाकर

अहं द्रव्यं लब्ध्वा हर्षितः अभवम् = मैं रुपया पाकर हर्षित हुआ ।

(२५) भुज—भुक्त्वा = खाकर

भुक्त्वा शतं पदानि चल = खाकर सौ डेग चलो ।

(२६) हन्—हत्वा = मार कर

रामचन्द्रः रावणं हत्वा सीताम् अलभत = रामचन्द्र ने रावण को मार कर सीता को पाया ।

(२७) ग्रह्—गृहीत्वा = लेकर

स फलं गृहीत्वा आयाति = वह फल लेकर आता है ।

(२८) बन्ध्—बद्ध्वा = बांधकर

वामनः बलिं बद्ध्वा अदण्डयत् = वामन ने बलि को बाँध कर सजा दी ।

(२९) बुध—बुद्ध्वा = जानकर

अहं कुशलं बुद्ध्वा सानन्दः अभवम् = मैं कुशल जानकर आनन्दित हुआ ।

(३०) स्वप्—सुप्त्वा = सोकर

सः सुप्त्वा स्वप्नायते = वह सोकर स्वप्न देखता है ।

(३१) त्यज्—त्यक्त्वा = छोड़कर

आलस्यं त्यक्त्वा कार्य्यं कुरु=आलस छोड़कर काम करो।

(३२) ध्यै—ध्यात्वा=ध्यान कर

ईश्वरं ध्यात्वा उत्तिष्ठ=ईश्वर को ध्यान कर उठो।

(३३) चिन्त्—चिन्तयित्वा=सोच कर

इदं चिन्तयित्वा सः अवदत्=यह सोचकर वह बोला।

(३४) नी—नीत्वा=ले जाकर

पुरोहितः गां नीत्वा गृहम् अगच्छत्=पुरोहित गाय लेकर घर गया।

(३५) हस्—हसित्वा=हंस कर

त्वं हसित्वा वदसि=तुम हँस कर बोलते हो।

(ख) य

(१) आ+गम्—आगत्य (आगम्य)=आकर

अत्र आगत्य उपविश=यहाँ आकर बैठो।

(२) आ+दा—आदाय=लेकर

रजकः वस्त्रम् आदाय अगच्छत्=धोबी कपड़ा लेकर गया।

(३) प्र+नम्—प्रणम्य=प्रणाम कर

गुरुं प्रणम्य उपविश=गुरु को प्रणाम कर बैठो।

(४) वि+जि—विजित्य=जीत कर

राजा शत्रून् विजित्य आगच्छति=राजा शत्रुओं को जीत-कर आता है।

(५) वि+क्री—विक्रीय=बेच कर

सः काष्ठं विक्रीय जीवति=वह लकड़ी बेच कर जीता है।

(६) वि+चिन्त्—विचिन्त्य=सोच कर

भवान् इदं विचिन्त्य कथयतु=आप यह सोचकर कहें।

(७) आ+हन्—आहत्य=घायल कर

दस्यवः तम् आहत्य पलायिताः=डाकू लोग उसे घायल कर भाग गये।

(८) प्र+स्था—प्रस्थाय=विदा होकर।

ततः प्रस्थाय अहम् अत्र आगच्छम्=वहाँ से विदा होकर मैं यहाँ आया।

(९) प्र+आप्—प्राप्य=पाकर

आशीर्वादं प्राप्य वयम् अमोदामहि=आशीर्वाद पाकर हम लोग खुश हुए।

(१०) सम्+आप्—समाप्य=समाप्त कर

पाठं समाप्य वयं क्रीडिष्यामः=पाठ समाप्त कर हम लोग खेलेंगे।

(११) प्र+आ+रभ—प्रारभ्य=प्रारम्भ कर

इदं कार्य्यं प्रारभ्य सः अवदत्=यह काम प्रारम्भ कर वह बोला।

(१२) प्र+विश—प्रविश्य=प्रवेश कर

अध्यापकः विद्यालयं प्रविश्य छात्रान् अपश्यत्=अध्यापक ने विद्यालय में प्रवेश कर छात्रों को देखा।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

आपका कुशल जान कर मैं आनन्दित हुआ। मैंने मूर्त्ति को देख कर प्रणाम किया। वह खाकर स्कूल जायगा। यह पूछ कर तुम क्या करोगे? वहाँ जाकर तुमने क्या देखा? रुपया लेकर वह कहाँ गया। हम लोग साधु को प्रणाम कर बैठ गये। तुम इस लड़के को लेकर चले जाओ। उसने अनाज बेच कर कपड़ा लिया। वह काशी में रह कर पढ़ता है। प्रश्न का उत्तर लिख कर यहाँ आओ। वह हँसकर बोला। यह काम समाप्त कर आओ।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

हरिं ध्यात्वा शय्यां त्यज। इदमुक्त्वा सा अक्रन्दत्। पुत्रं दृष्ट्वा माता हर्षिता अभवत्। ते प्रयागं गत्वा यमुनाम् अपश्यत्। सः फलानि भुक्त्वा जीवति। कार्यं प्रारम्भ परित्यज। स अत्रैव उषित्वा कार्यं करिष्यति। साधुः इदम् उक्त्वा तपोवनम् अगच्छत्। स पुस्तकम् आदाय पाठशालाम् अगच्छत्।

३. शुद्ध करो—

स गृहं त्यजित्वा वनं अगच्छत्। अहं काशीं गमित्वा स्थास्यामि। सः धनं दात्वा अवदत्। त्वं अत्र आगत्वा निवस। स तत्र वसित्वा पठिष्यति। इदं वदित्वा सा गृहं अगच्छत्। मन्दिरं प्रविष्ट्वा मुनिः प्रतिमां अवन्दत। पुस्तकं समात्वा अहं विद्यालयं गमिष्यामि।

संस्कृत-रचना

तृतीय भाग

विविध विषय

(Miscellaneous matters)

पहला अध्याय

व्याकरण-सम्बन्धी

(Relating to Grammar)

पहला पाठ

वाच्य (Voice)

(१) मोहन[1] हाथी[2] को देखता[3] है।

(२) मोहन[1] से हाथी[2] देखा जाता[3] है।

इन वाक्यों में पहला कर्तृवाच्य है, (Active Voice) और दूसरा कर्मवाच्य (Passive Voice)।

इन दोनों का मिलान करने से ज्ञात होगा कि

(१) पहले वाक्य में, कर्त्ता ('मोहन') के साथ प्रथमा विभक्ति लगी है; दूसरे वाक्य में तृतीया विभक्ति।

(२) पहले वाक्य में, कर्म 'हाथी' के साथ द्वितीया विभक्ति लगी है, दूसरे में, प्रथमा विभक्ति।

(३) पहले वाक्य में क्रिया का एक रूप है; दूसरे वाक्य में दूसरा ही रूप।

संस्कृत में भी वाक्यों के सम्बन्ध में यही नियम जानना चाहिये। कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के लिये —

(१) कर्ता में प्रथमा विभक्ति हटाकर तृतीया विभक्ति लगा देनी चाहिये।

(२) कर्म में द्वितीया विभक्ति हटाकर प्रथमा विभक्ति लगा देनी चाहिये।

(३) धातु के बाद 'य' जोड़कर आत्मनेपद का रूप बना देना चाहिये।

उदाहरण—

"रामः[१] पुस्तकं[२] पठति[३] (.........कर्तृवाच्य)

यहाँ, राम + तृतीया विभक्ति = रामेण[१]

पुस्तक + प्रथमा " = पुस्तकम्[२]

पठ् + य + ते = पठ्यते

अतः रामेण[१] पुस्तकं[२] पठ्यते[३] (.........कर्मवाच्य)

(राम से पुस्तक पढ़ी जाती है)

(क) कर्ता

शब्दों के साथ तृतिया विभक्ति कैसे लगाई जाती है, यह पहले ही बताया जा चुका है (देखो 'करण' प्रकरण)। अतएव कर्मवाच्य के लिये 'कर्त्ता' बनाना छात्रों के लिये कठिन नहीं होगा।

सर्वनामों के साथ तृतिया विभक्ति लगाना नहीं सिखलाया गया है। अतएव वह यहाँ दे दिया जाता है।

	ए. व.	द्विव.	ब. व.
1st Person अस्मद्	मया मेरे द्वारा	आवाभ्याम् हम दोनों के द्वारा	अस्माभिः हम लोगों के द्वारा
2nd. Person युष्मद्	त्वया तुम्हारे द्वारा	युवाभ्याम् तुम दोनों के द्वारा	युष्माभिः तुम लोगों के द्वारा
3rd. Person तत्	पु. न. तेन | स्त्री. तया उसके द्वारा	पु. न. ताभ्यां | स्त्री ताभ्यां उन दोनों के द्वारा	पु. न. तैः | स्त्री. ताभिः उन लोगों के द्वारा

'यत्' 'किम्' 'इदम्' और एतत् शब्दों के रूप भी उसी तरह बनते हैं, जिस तरह तत् शब्द के।

नोट—विभक्ति लगाने से पूर्व 'यत्' के स्थान में य, 'किम्' के स्थान में क, और 'एतत्' के स्थान में 'एत' हो जाता है।

'इदम्' और 'अदस्' शब्दों के रूप कुछ विभिन्न होते हैं, अतएव नीचे दिये जाते हैं।

		ए. व.	द्विव.	ब. व.
इदम्	पु. न.	अनेन इसके द्वारा	आभ्याम् इन दोनों के द्वारा	एभिः इनके द्वारा
	स्त्री.	अनया इसके द्वारा	आभ्याम् इन दोनों के द्वारा	आभिः इनके द्वारा
अदस्	पु. न.	अमुना उसके द्वारा	अमूभ्याम् उन दोनों के द्वारा	अमीभिः उनके द्वारा
	स्त्री.	अमुया उसके द्वारा	अमूभ्याम् उन दोनों के द्वारा	अमूभिः उनके द्वारा

क्रिया

कर्मवाच्य की क्रिया सर्वदा आत्मनेपद होती है। लट् (वर्त्तमान), लोट् (विधि) और लङ् (भूत) लकारों में, धातु के बाद 'य' जोड़कर विभक्ति लगानी चाहिये। जैसे,

गम् (जाना)—गम्यते ।	भू (होना)—भूयते ।
पठ् (पढ़ना)—पठ्यते ।	सेव् (सेवना)—सेव्यते ।
लिख् (लिखना)—लिख्यते ।	लभ् (पाना)—लभ्यते ।
हस् (हँसना)—हस्यते ।	ज्ञा (जानना)—ज्ञायते ।
रुद् (रोना)—रुद्यते ।	हन् (मारना)—हन्यते ।
भुज् (खाना)—भुज्यते ।	खन् (खोदना)—खन्यते ।
दृश् (देखना)—दृश्यते ।	कथ् (कहना)—कथ्यते ।
नी (लेजाना)—नीयते ।	पूज् (पूजना)—पूज्यते ।

किन्तु बहुत से धातुओं के रूप 'य' लगाने से पहले कुछ बदल जाते हैं। इन्हें अच्छी तरह स्मरण रखना चाहिये।

स्था (ठहरना)—स्थीयते ।	ग्रह्—(लेना)—गृह्यते ।
दा (देना)—दीयते ।	प्रच्छ्—(पूछना)—पृच्छ्यते ।
पा (पीना)—पीयते ।	वद्—(बोलना) —उद्यते ।
धा (धारणकरना)—धीयते ।	वच्—(बोलना) —उच्यते ।
जि (जीतना)—जीयते ।	वस—(रहना) —उष्यते ।
चि (चुनना)—चीयते ।	वह्—(बहना) —उह्यते ।
शी (सोना)—शय्यते ।	वप्—(बोना) —उप्यते ।
कृ (करना)—क्रियते ।	मन्थ्—(मथना)—मथ्यते ।
हृ + (लेना) —ह्रियते ।	व्यध—(वेधना) —विध्यते ।
स्मृ + (यादकरना)-स्मर्यते ।	अस्—(होना) —भूयते ।
श्रु + (सुनना) —श्रूयते ।	जन्—(उत्पन्नहोना)—जायते ।

मृ+ (मरना)—म्रियते।	दिव्—(खेलना)—दीव्यते।
गै+ (गाना)—गीयते।	शंस (प्रशंसा करना)--शस्यते।
ब्रू+ (बोलना)—उच्यते।	शास् (शासन करना)-शिष्यते।

ऊपर जो रूप दिये गये हैं वे लट् लकार के प्रथमा एक वचन में हैं। इसी तरह और और विभक्तियां जोड़कर जो रूप चाहें वना सकते हैं। जैसे,

धातु	—लोट् (विधि)	—लङ् (भूत)
पठ् (पढ़ना)	पठ्यताम् (पढ़ा जाय)	अपठ्यत (पढ़ा गया)
कथ (कहना)	कथ्यताम् (कहा जाय)	अकथ्यत (कहा गया)
दा (देना)	दीयताम् (दिया जाय)	अदीयत (दिया गया)
श्रु (सुनना)	श्रूयताम् (सुना जाय)	अश्रूयत (सुना गया)

नोट—लृट लकार (भविष्यत्काल) में धातु के बाद 'य' नहीं लगता। साधारण भविष्यत् काल का जो रूप बतलाया गया है, उसी में आत्मनेपद की विभक्ति जोड़ दी जाती है। जैसे,

धातु—	लृट् (भविष्यत् काल)
कृ (करना)	करिष्यते (किया जायगा)
दृश् (देखना)	द्रक्ष्यते (देखा जायगा)
पठ् (पढ़ना)	पठिष्यते (पढ़ा जायगा)
श्रु (सुनना)	श्रोष्यते (सुना जायगा)

द्रष्टव्य—'गम्' (जाना) से 'गंस्यते' रूप होता है।

कर्तृवाच्य में क्रिया के वचन (Number) और पुरुष (Person) कर्ता के अनुसार होते हैं। किन्तु कर्मवाच्य में यह वात नहीं है। उसमें—

(१) जो कर्म का 'वचन' होता है, वही क्रिया का भी होता है।
(२) जो कर्म का 'पुरुष' होता है वही क्रिया का भी होता है।

जैसे,

(क) वचन

ए. व.–मुझसे पुस्तक पढ़ी जाती है=मया पुस्तकं पठ्यते।
द्विव.–मुझसे दो पुस्तकें पढ़ी जाती हैं=मया पुस्तके पठ्येते।
ब॰ व॰—मुझसे पुस्तकें पढ़ी जाती हैं=मया पुस्तकानि पठ्यन्ते।

(ख) पुरुष

प्र. पु.–वह लड़कों से देखा जाता है=स बालकैः दृश्यते।
म. पु.–तुम लड़कों से देखे जाते हो=त्वं बालकैः दृश्यसे।
उ. पु.–मैं लड़कों से देखा जाता हूँ=अहं बालकैः दृश्ये।

"मुझसे लिखा जाता है। उससे हँसा जाता है।

इन वाक्यों में क्रिया कर्मवाच्य की है, किन्तु कर्म नहीं है। ऐसे वाक्यों को भाववाच्य कहते हैं। इसमें क्रिया सदा प्रथम पुरुष एक-वचनान्त रहती है। संस्कृत में भी यही बात समझनी चाहिये। जैसे,

मया लिख्यते=मुझ से लिखा जाता है।
भवद्भिः श्रूयताम्=आप लोगों से सुना जाय।
त्वया अशय्यत=तुम से सोया गया।
मया गंस्यते=मुझसे जाया जायगा।

वाक्य रचना

(क) कर्त्तृवाच्य से कर्मवाच्य।

अहं चन्द्रं पश्यामि=मया चन्द्रः दृश्यते।
त्वं सत्यं वदसि=त्वया सत्यम् उद्यते।
स मां स्मरति=तेन अहं स्मर्य्ये।
अहं युष्मान् सेवे=मया यूयं सेव्यध्वे।

यूयम् इदं श्रृणुत = युष्माभिः इदं श्रूयताम् ।
ते छात्रौ अपश्यन् = तैः छात्रौ अपृश्येताम् ।
स अस्मान् प्रदयति = तेन वयं प्रदयामहे ।

(ख) कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य ।

तेन ओदनः पच्यते = स ओदनं पचति ।
मया सत्यम् उच्यते = अहं सत्यं ब्रवीमि ।
त्वया किं पृच्छ्यते = त्वं किं पृच्छसि ।
मया त्वम् अदृश्यथाः = अहं त्वां अपश्यम् ।
पुस्तकं दीयताम् = पुस्तकं देहि ।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

मुझ से बैठा जाता है । इन लड़कों से पुस्तकें पढ़ी जायँगी । तुम से भात खाया जाता है । दूध पिया जाय । अब आप लोगों से उठा जाय । मेरी बात सुनी जाय । उससे सोया जायगा । देवताओं के द्वारा राक्षस लोग मारे गये । हम लोगों के द्वारा ये बातें जानी जायँगी । तुम लोगों के द्वारा पाठ याद किया जाता है ।

२. वाच्य परिवर्त्तन करो—

ते बालका. फलानि खादन्ति । सा अस्मान् पश्यति । त्वं तान् छात्रान् पृच्छसि । अमूः बालिकाः त्वां पश्यन्ति त्वां किं जानासि । अहं द्रव्यं दास्यामि । योगिनः ईश्वरं सेवन्ते । स धर्मं करोति । इमे जनाः पाटलिपुत्रम् अगच्छन् । अहं काशीं यास्यामि ।

३. शुद्ध करो—

मया तत्र गमिष्यते । अमीभिः स्त्रीभिः गायते । वयं त्वया दृश्यते । छात्रैः पुस्तकं पठ्यन्ते । मम वाक्यानि श्रूयताम् । भवता वयं अदृश्यन्त ।

त्वया धर्मं क्रियते । ऋषिभिः ईश्वरं पश्यते । भवद्भिः किं वद्यन्ते । तेन आवां स्मृयेते । इमेन बालकेन कुत्र वस्यते ।

४. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

मया वने……। त्वया बीजं……। अस्माभिः प्रश्नः……। युष्माभिः अहं……। गोविन्देन गीतानि……। छात्रः गुरुः……। मया परीक्षा ……। अस्माभिः ते……। त्वया तौ……।

दूसरा पाठ

प्रत्ययान्त समापिका क्रिया

(१) मेरे द्वारा पुस्तक लिखी गई।

(२) सैनिक लोग मारे गये।

इन वाक्यों में सूक्ष्मलिखित क्रिया-पदों का संस्कृत में अनुवाद करने के लिये प्रायः छात्रगण कर्मवाच्य का प्रयोग करेंगे। जैसे,

(१) मया पुस्तकम् अलिख्यत।

(२) सैनिकाः अहन्यन्त।

किन्तु यहाँ एक ऐसी तरकीब बताई जाती है, जिसके द्वारा इस प्रकार के क्रिया-पदों का अनुवाद बहुत सुगमतापूर्वक हो सकता है।

संस्कृत में Past Participle कैसे बनाये जाते हैं, यह पहले ही बताया जा चुका है।* इनके सहारे आसानी से भूतकालिक क्रियाओं का अनुवाद किया जा सकता है। जैसे,

(१) मया पुस्तकं लिखितम्।

(२) सैनिकाः हताः।

ऊपर के वाक्यों पर ध्यान देने से विदित होगा कि—

(१) 'पुस्तकम्' एकवचन और नपुंसकलिंग है, अतएव Participle भी एक वचन और नपुंसकलिंग हुआ।

(२) 'सैनिकाः' बहुवचन और पुल्लिङ्ग है, अतएव Participle भी बहुवचन और पुल्लिङ्ग हुआ।

निष्कर्ष—कर्म का जो लिंग और वचन रहता है, Participle का भी वही लिंग और वचन हो जाता है।

---

*देखो, Attributes of Subject, 'त' प्रत्यय।

उदाहरण—

(क) वचन

ए. व.—मया पुस्तकं पठितम् = मुझसे पुस्तक पढ़ी गई।

द्वि.—मया पुस्तके पठिते = मुझसे दो पुस्तकें पढ़ी गईं।

ब. व.—मया पुस्तकानि पठितानि = मुझसे पुस्तकें पढ़ी गईं।

(ख) लिङ्ग

पुं०—मया ओदनः भुक्तः = मुझसे भात खाया गया।

स्त्री०—मया सिता भुक्ता = मुझसे चीनी खाई गई।

न०—मया फलंभुक्तम् = मुझसे फल खाया गया।

नोट—इस तरह के संस्कृत वाक्यों का हिन्दी अनुवाद करने के लिये यह कोई आवश्यक नहीं है कि कर्मवाच्य का ही प्रयोग किया जाय। यहाँ सिर्फ दोनों भाषाओं में सादृश्य दिखलाने के लिये एक ही वाच्य का प्रयोग किया गया है। छात्रगण चाहें तो "मया बालकः दृष्टः—मैंने लड़के को देखा" इस तरह का अनुवाद बेखटके कर सकते हैं।

☞ यह स्मरण रहे कि 'त' प्रत्ययान्त Participle कर्मवाच्य की क्रिया का अर्थ देते हैं।

अतएव—

मैंने देखा = अहं 'दृष्टः' नहीं, किन्तु 'दृष्टवान्'।

मैंने खाया = अहं 'भुक्तः' नहीं, किन्तु 'भुक्तवान्'।

ऐसी गलतियाँ छात्रों को कभी नहीं करनी चाहिये।

'अहं दृष्टः' का अर्थ होगा 'मैं देखा गया।'

'अहं भुक्तः' " " " 'मैं खाया गया।'

"मैंने देखा । मैंने कहा।"

इन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करने के लिये भी एक सुगम रीति है। इसे जान लेना छात्रों के लिये बहुत ही उपयोगी होगा।

'त' प्रत्ययान्त *participle* में 'वत्' जोड़ कर शब्द बना लो। इसे विधेय की तरह प्रयुक्त करो। भूतकाल की क्रिया का अर्थ देगा ।

नोट—वाक्य में कर्त्ता का जो लिङ्ग वचन होगा, वही 'तवत्' प्रत्ययान्त विधेय का भी होगा। ऐसे शब्दों के रूप भिन्न-भिन्न लिङ्गों और वचनों में 'विद्यावत्' शब्द की तरह बनेंगे। (देखो, उद्देश्य प्रकरण, व्यञ्जनान्त शब्द)

उदाहरण—

(क) वचन

ए० व०—अहं दृष्टवान्=मैंने देखा।
द्विव०—आवां दृष्टवन्तौ=हम दोनों ने देखा।
ब० व०—वयं दृष्टवन्तः=हम लोगों ने देखा ।

(ख) लिंग

पुं०—स गतवान्=वह गया।
स्त्री०—सा गतवती=वह गई।
न०—शकटं गतवत्=गाड़ी गई।

इन विधेयों पर कर्म के लिंग वचन का प्रभाव नहीं पड़ता।

जैसे, (क)

बालकः पुस्तकं पठितवान्=लड़के ने पुस्तकें पढ़ी।
बालकः पुस्तके पठितवान्=लड़के ने दो पुस्तक पढ़ीं।
बालकः पुस्तकानि पठितवान्=लड़के ने पुस्तकें पढ़ीं।

(ख)

स ग्राम गतवान्=वह गाँव गया।
स वाटिकां गतवता=वह फुलवाड़ी गया।
स वनं गतवान्=वह जंगल गया।

नोट—ऊपर यह बतलाया जा चुका है कि 'त' प्रत्यान्त Participle कर्मवाच्य (*Passive Voice*) के अर्थ में आते हैं। किन्तु कुछ धातुओं में 'त' लगने से वही अर्थ निकल सकता है जो 'तवत' लगने से। जैसे—

गम्—स गतः (गतवान्)=वह गया।
चल्—सा चलिता (चलितवती)=वह चली।
स्था—स तत्र स्थितः (स्थितवान्)=वह वहाँ ठहरा।
स्वप्—बालकः सुप्तः (सुप्तवान्)=लड़का सो गया।
पत्—पत्राणि पतितानि (पतितवन्ति)=पत्ते गिर पड़े।
रुह्—ते वृक्षम् आरूढ़ा (आरूढ़वन्तः)=वे लोग पेड़ पर चढ़े।
मृत—स मृतः (मृतवान्)=वह मर गया।

'त' प्रत्ययान्त शब्दों से भाववाच्य की क्रिया भी बन सकती है। ऐसी दशा में 'त' प्रत्ययान्त शब्द सर्वदा नपुंसक एकवचनान्त होता है। जैसे,

मया स्नातम्=मुझसे नहाया गया।
तेन न भुक्तम्=उससे खाया नहीं गया।

वाक्यों के उदाहरण—

रामेण रावणः हतः=राम ने रावण को मारा (अथवा राम से रावण मारा गया)

त्वया सत्यं प्रोक्तम्=तुमने सत्य कहा।
मया कुशलं ज्ञातम्=मैंने कुशल जाना।

अस्माभिः वृत्तान्तः श्रुतः=हम लोगों ने वृत्तान्त सुना।
सा समाचारं पृष्टवती=उस (स्त्री) ने समाचार पूछा।
ब्रह्मणा जगत् सृष्टम्=ब्रह्मा ने जगत् की सृष्टि की।
ताः काशीं गताः=वे लोग काशी गई ।
स घोटकात् पतितः=वह घोड़े से गिर पड़ा।
तैः विहसितम्=वे लोग मुसकराये।

× × ×

मुझे गाँव जाना चाहिये। तुम्हें पुस्तक पढ़नी चाहिये।

इस तरह के वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करने के लिये 'तव्य'* 'अनीय' और 'य' प्रत्ययों से काम लिया जाता है। इन प्रत्ययों का परिचय छात्रगण पहले ही पा चुके हैं। अतएव यहाँ केवल इनका 'विधेय' की तरह प्रयोग करना सिखलाया जाता है। वाक्य में विधेय की तरह प्रयुक्त होने पर 'त' प्रत्ययान्त Participle की तरह 'तव्य' 'अनीय' और 'य' प्रत्ययान्त शब्दों के साथ भी—

(१) कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(२) कर्म में प्रथमा विभक्ति लगती है।

(३) विधेय का लिंग और वचन कर्म के अनुसार होता है।

(४) कर्म न रहने पर नपुंसक एकवचन की विभक्ति जोड़कर भाववाच्य की क्रिया बन सकती है।

उदाहरण— (क) लि०।

मया ग्रामः गन्तव्यः=मुझे गाँव जाना चाहिये।

मया पाठशाला गन्तव्या=मुझे पाठशाला जाना चाहिये।

मया गृहं गन्तव्यम्=मुझे घर जाना चाहिये।

---

* देखो, Attributes of Subject, तव्य, अनीय और य।

(ख) वचन

मया फलं भोक्तव्यम्=मुझे फल खाना चाहिये।
मया फले भोक्तव्ये=मुझे दो फल खाना चाहिये।
मया फलानि भोक्तव्यानि=मुझे फलों को खाना चाहिये।

वाक्यों के उदाहरण—

तुम्हें पाठ याद करना चाहिये=त्वया पाठः स्मर्त्तव्यः (स्मरणीयः वा स्मार्य्यः)।

सभी को सत्य बोलना चाहिये =सर्वैः सत्यं वाच्यम् (वक्तव्यं वा वचनीयम्)।

उन लोगों को भात खाना चाहिये=तैः ओदनः भोक्तव्यः (भोज्यः वा भोजनीयः)।

तुम्हें हँसना चाहिये=त्वया हसितव्यम् (हास्यं, वा हसनीयम्)।

हम लोगों को धर्म करना चाहिये=अस्माभिः धर्मः कर्त्तव्यः (कार्य्यः वा करणीयः)।

तुम्हें उन लड़कों को देखना चाहिये=त्वया ते बालकाः द्रष्टव्याः (दृश्याः, वा दर्शनीयाः)।

गोपाल को दो चिट्ठियाँ लिखनी चाहिये=गोपालेन द्वे पत्रे लिखितव्ये (लेख्ये, वा लेखनीये)।

हम लोगों को जीतना चाहिये = अस्माभिः जेतव्यम् (जेयम्, वा जयनीयम्)।

अभ्यास

१. इन वाक्यों में 'त' के बदले तवत् और 'तवत्' के बदले 'त' प्रत्यय का व्यवहार करो—

मया बालकाः दृष्टाः । ताः बालिकाः गृहं गताः । सा मां दृष्टवती । अहं कथितवान् । मया पृष्टम् । तेन उक्तम् । स पुस्तकानि नीतवान् । तैः जलं पीतम् । वयं प्रयागं दृष्टवन्तः । ताभ्यां फलानि भुक्तानि । केन इदं कार्य्यं कृतम् ? कृष्णेन कंसः हतः । सा अस्मान् स्मृतवती । छात्रैः उत्तरं दत्तम् ।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

मया पुस्तकानि पठितव्यानि । त्वया ईश्वरः पूजितव्यः । तेन इदं कार्य्यम् । युष्माभिः गन्तव्यम् । त्वया गुरुः सेवनीयः । तैः मुद्रा दातव्या । अस्माभिः मृगौ द्रष्टव्यौ । छात्रैः उत्तराणि दातव्यानि ।

ऊपर के सूक्ष्मलिखित शब्दों के बदले में उनके पर्य्याय-वाचक शब्द रखो ।

३. इन वाक्यों में क्या अन्तर है ?

(क) अहं स्मृतः
(ख) अहं स्मृतवान्

(क) सा दृष्टा
(ख) सा दृष्टवती

४. शुद्ध करो—

अहं पुस्तकं पठितम् । मया चन्द्रः दृष्टवान् । मया इदं कथितः । सा त्वं दृष्टा । त्वं बालकः दृष्टवान् । अहं ग्रामं गतम् । मित्रं गृहं गतवान् । बालकैः पठितव्यः । युष्माभिः पाठशाला गन्तव्यम् ।

५. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

छात्रेण ग्रन्थः............ । शत्रुणा देशः.............. । गजेन वारीणि......... । ब्राह्मणैः वेदाः............ । बालकेन मिष्टान्नानि.............. । तेन अहं............ । अस्माभिः पूजा......... । सर्वैः उपकारः........... ।

तीसरा पाठ

विभक्तियों के विशेष प्रयोग

१. प्रथमा विभक्ति

(१) सम्बोधन में शब्दों के बाद प्रथमा विभक्ति लगती है। जैसे,
भो बालकाः != हे लड़को !
हे बालिकाः = हे लड़कियो !

नोट—एकवचन में सम्बोधन के रूप में कर्त्ता के रूप से कुछ विभिन्नता होती है।

(क) अकारान्त शब्दों के सम्बोधन में विसर्ग नहीं लगता। जैसे, हे राम !

(ख) आकारान्त शब्दों के सम्बोधन में 'आ' कार का 'ए' कार हो जाता है। जैसे, हे बालिके !

(ग) इकारान्त और उकारान्त शब्दों के सम्बन्ध में 'इ' का 'ए' और 'उ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे, हे मुने ! हे गुरो !

(घ) ईकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के सम्बोधन में दीर्घ स्वर के बदले ह्रस्व स्वर हो जाता है। जैसे, हे स्त्रि ! हे वधु !

(ङ) ऋकारान्त शब्दों के 'ऋ' के बदले 'अः' हो जाता है। जैसे, हे पितः ! हे मातः ! हे दातः !

(च) व्यञ्जनान्त शब्दों के एकवचन कर्त्ता और सम्बोधन प्रायः एक से होते हैं। जैसे, हे सम्राट् !

(छ) 'अन्' भागान्त और 'इन्' भागान्त शब्दों के रूप सम्बोधन में प्रायः अविकल रहते हैं। जैसे, हे राजन् ! हे गुणिन् !

(ज) जिन शब्दों के कर्त्ता 'आन्' भागान्त हों, उनके सम्बोधन प्रायः 'अन्' भागान्त होते हैं। हे विद्वन् ! हे बलवन् ! श्रीमन् !

२. द्वितीया विभक्ति

(१) क्रिया विशेषण में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे,
अहं शीघ्रं गच्छामि=मैं जल्द जाता हूँ।
त्वं मधुरं भाषसे=तुम मीठा बोलते हो।

(२) 'धिक्' (धिक्कार) शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति लगती है। जैसे, पापिनं धिक्=पापी को धिक्कार है।

(३) 'प्रति' निकषा' (पास) 'अनु' (पीछे) 'विना' और 'यावत्' (तक) इन शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति लगती है। जैसे,

दीनं प्रति दया कार्य्या=दीन के प्रति दया करनी चाहिये।
पाठशालां निकषा तड़ागः वर्त्तते=स्कूल के पास पोखरा है
त्वाम् अनु वयं चलिष्यामः=तुम्हारे पीछे हमलोग चलेंगे।
श्रमं विना विद्या न भवति=श्रम के बिना विद्या नहीं होती।
मम गृहं यावत् चलतु भवान्=मेरे घर तक आप चलें।

(४) 'अभितः' (चारों ओर) 'परितः' (चारों ओर) 'सर्वतः' (सब ओर) और 'उभयतः' (दोनों ओर) इन शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति लगती है। जैसे,

गृहम् अभितः वनम् आसीत्=घर के चारों ओर जंगल था।
उद्यानं परितः भित्तिः अस्ति=फुलवारी के चारों ओर दीवाल है।
क्रीड़ां सर्वतः दर्शकाः आसन्=खेल के सब ओर दर्शक थे।
नदीम् उभयतः वृक्षाः सन्ति=नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं।

३. तृतीया विभक्ति

(१) 'सह' 'सार्द्धम्' (साथ) शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति लगती है। जैसे,

स पुत्रेण सह गच्छति = वह पुत्र के साथ जाता है।

ते मया सह कलहं कुर्वन्ति = वे मेरे साथ झगड़ा करते हैं।

(२) 'हीन' 'शून्य' और 'रहित' शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति लगती है। जैसे,

स धर्मेण हीनः अस्ति = वह धर्म से हीन है।

त्वं गर्वेण शून्यः असि = तुम गर्व से शून्य हो।

ते विद्यया रहिताः सन्ति = वे लोग विद्या से रहित हैं।

(३) प्रयोजन का अर्थ निकलने पर 'किम्' 'अलम्' 'प्रयोजनम्' और 'अर्थः' इन शब्दों के योग तृतीया विभक्ति लगती है। जैसे,

किम् अधिकेन ? अधिक (कहने) से क्या ?

अलं विवादेन = बहस से क्या काम ?

धनेन किं प्रयोजनम् = धन से क्या प्रयोजन है ?

कोऽर्थः मूर्खेण मित्रेण = मूर्ख मित्र से क्या प्रयोजन ?

४. चतुर्थी विभक्ति

(१) दा (देना) धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति लगती है। जैसे,

'स दरिद्रेभ्यः अन्नं ददाति = वह गरीबों को अन्न देता है।

नोट—धोबी को कपड़ा देने के अर्थ में षष्ठी विभक्ति लगती है। जैसे, स रजकस्य वस्त्रं ददाति = वह धोबी को कपड़ा देता है।

(२) 'नमः' शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति लगती है। जैसे, गणेशाय नमः = गणेश को नमस्कार।

विष्णवे नमः = विष्णु को प्रणाम।

५. पञ्चमी विभक्ति

(१) 'अन्य', 'भिन्न' और 'पृथक्' शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति लगती है । जैसे,

ईश्वरात् अन्यः कः त्रातुं समर्थः—ईश्वर के सिवा और कौन रक्षा कर सकता है ?

(२) इदम् अस्मात् भिन्नम्—यह इससे भिन्न है ।

अहं तेभ्यः पृथक् अस्मि—मैं उन लोगों से अलग हूं ।

(२) 'वहिः' 'इदम्' 'प्रभृति' 'प्राक' और 'अनन्तरम्' आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति लगती है । जैसे,

अहं कक्षायाः वहि गच्छामि—मैं क्लास से वाहर जाता हूँ ।

जन्मनः प्रभृति स कदापि असत्यं न उक्तवान्—जन्म से लेकर वह कभी झूठ नहीं बोला ।

वहोः कालात् अनन्तरं त्वं दृष्टः—वहुत दिनों के वाद तुम दीख पड़े ।

गृहात् दूरम् एकः पन्थाः वर्त्तते—घर से दूर एक सड़क है ।

भोजनात् प्राक् हस्तौ प्रक्षालनीयौ—भोजन से पहले दोनों हाथ धो लेना चाहिये ।

(३) कारण वोधक शब्द के साथ तृतीया और पञ्चमी दोनों विभक्तियाँ लग सकता हैं । जैसे,

स हर्षेण (हर्षात्) गायति—वह खुशी से गाता है ।

स क्रोधेन (क्रोधात्) कम्पते—वह क्रोध से काँपता है ।

(४) जहाँ 'अपेक्षा' (Comparative degree) का अर्थ सूचित हो, वहाँ पञ्चमी विभक्ति लगती है । जैसे,

धनात् विद्या गरीयसी—धन से विद्या श्रेष्ठ है ।

रामः श्यामात् तीव्रतरः—राम श्याम से तेज है ।

(५) 'स्थान' और 'समय' (time & place) परिमाण (quantity) और दिशा का निर्देश सूचित होने हर पंचमी विभक्ति लगती है। जैसे,

परीक्षाया: दशमे दिने—परीक्षा से दसवें दिन।

अस्मात् स्थानात् त्रयः कोशाः—इस स्थान से तीन कोस।

ग्रामात् पूर्वः—गाँव से पूरब। गृहात् उत्तरः=घर से उत्तर।

६. षष्ठी विभक्ति

(१) 'उपरि' (ऊपर) 'अधः' (नीचे) 'पुरः' (आगे) और 'अन्तः' (भीतर) इन शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति लगती है। जैसे,

प्रासादस्य उपरि जनाः वर्त्तन्ते—कोठे के ऊपर लोग हैं।

वृक्षस्य अधः धेनवः चरन्ति—वृक्ष के नीचे गायें चरती हैं।

गृहस्य पुरः आपणः वर्त्तते—घर के सामने दूकान है।

मन्दिरस्य अन्तः दीपः ज्वलति—मन्दिर के भीतर दीपक जलता है।

(२) 'समः', 'तुल्य' 'समान' 'सदृश' शब्दों के योग में षष्ठी (या तृतीया) विभक्ति लगती है।

सत्यस्य (सत्येन) समः धर्मः नास्ति—सत्य के समान धर्म नहीं है।

क्रोधस्य (क्रोधेन) तुल्यं पापं नास्ति—क्रोध के बराबर पाप नहीं है।

तव (त्वया) समानः कोऽपि नास्ति—तुम्हारे समान कोई नहीं है।

स मम (मया) सदृशः वर्त्तते—वह मेरे सदृश है।

७. सप्तमी विभक्ति

(१) 'कुशल' 'निपुण' शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे,

स कलायां कुशलः—वह कला में कुशल है।

ते साहित्ये निपुणाः—वे लोग साहित्य में निपुण हैं।

(२) जहाँ 'निर्धारण' (Supe lative degree) का अर्थ सूचित हो वहाँ सप्तमी विभक्ति लगती है। जैसे,

कविषु कालिदासः श्रेष्ठः—कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है।

पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः—पहाड़ों में हिमालय सबसे ऊँचा है।

(३) अंग्रेजी में जहाँ Nominative absolute का व्यवहार होता है वहाँ संस्कृत में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग करते हैं। जैसे,

सूर्य उगने पर निद्रा त्याग करते हो—सूर्ये उदिते सति, त्वं निद्रां त्यजसि।

परीक्षा समाप्त हो जाने पर हम लोग घर जाँयगे—परीक्षायां समाप्तायां, वयं गृहं गमिष्यामः।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो—

हे भगवन्! हमलोगों पर दया करो। धन के बिना कोई काम नहीं हो सकता। तुम सभी लड़कों से अलग रहते हो। मैं तुम्हें यह पुस्तक दूँगा। वह हम लोगों के साथ टहलने गया। कर्ण के समान कोई दानी नहीं हुआ। सूर्यास्त हो जाने पर वह घर गया। घर से दूर एक पोखरा है। उसका घर यहाँ से नज़दीक है। सब लड़कों में यही तेज है। तुम मुझसे दुबले हो। झगड़ा करने से (कलहेन) क्या प्रयोजन? बहुत दिनों पर तुम्हारा पत्र मिला। पिता जी को मेरा प्रणाम। वह भय से काँपने लगी। काशी यहाँ से दूर है। मेरा घर यहाँ से पाँच कोस है। दुःख के बिना सुख नहीं होता।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—

सा मन्दं भाषते। त्वं व्यवहारे कुशलः असि। गुरवे नमः। रामेण सह सीता वनं गता। सा छलेन रहिता वर्त्तते। किं बहुना? सा दुःखेन रोदिति। अहं तस्मात् योग्यतरः अस्मि। ग्रामात् दूरम् एकः सरोवरः वर्त्तते। वृक्षस्योपरि काकाः वदन्ति। मयि गच्छति ते सर्वे उत्थिताः।

३. शुद्ध करो—

रोगिणे प्रति सेवा कार्य्या। अहं रजकाय वस्त्रं ददामि। हे पिता! मम प्रति दयां कुरु। हे भगवान! त्वया अन्यः कः त्रातु शक्नोति? भो बालकः त्वं मम अनु आगच्छ। ते शीघ्रेण गच्छन्ति। अध्यापकाः गते सति छात्राः क्रीड़ितुम आरभन्त।

—

दूसरा अध्याय

रचना-सम्बन्धी

(Relating to paragraphs etc.)

पहला पाठ

वार्त्तालाप (Dialogue)

(क) मित्र के साथ

राम—कौन है ? हरि ? कब आये, भाई ?

रामः—कोऽयम् ? हरिः ? कदागतोऽसि, भ्रातः।

हरि—आज ही आ रहा हूँ। कुशल है ?

हरिः—अद्यैव आगच्छामि। कुशलम् वर्त्तते ?

राम—सभी अच्छे हैं। बहुत दिनों के बाद दर्शन हुए।

रामः—सर्वे कुशलिनः सन्ति। बहोः कालात् अनन्तरं तव दर्शनं जातम्।

हरि—हां, होली में चार दिनों की छुट्टी थी। किन्तु किसी कारण से घर नहीं आ सका।

हरिः—आम्। होलिकायां चतुर्णां दिनानां अवकाशः आसीत्। किन्तु केनचित् हेतुना गृहमागन्तुं नाशक्नवम्।

राम—गर्मी की तातील कितने दिनों की है ?

रामः—कतीनां दिनानां ग्रीष्मवकाशः वर्त्तते।

हरि—डेढ़ महीने की। वैशाख अमावस्या से लेकर जेठ की पूर्णिमा तक तातील है।

हरिः—सार्द्धैकमासस्य। वैशाखस्य अमायाः प्रभृति ज्येष्ठस्य पूर्णिमां यावत् अवकाशः वर्त्तते।

राम—आजकल किस क्लास में पढ़ते हो ?

रामः—अधुनां कस्यां कक्षायां पठसि ?

हरि—मैट्रिक्युलेशन के दसवें क्लास में।

हरिः—प्रवेशिकायाः दशम्यां कक्षायाम्।

राम—अध्यापक लोग कैसे हैं ?

रामः—अध्यापकः कीदृशः सन्ति ?

हरिः—बहुत सुयोग्य है।

हरिः—अतिसुयोग्याः वर्त्तन्ते।

राम—हेडमास्टर कौन है ?

रामः—प्रथमाध्यापकः कोऽस्ति ?

हरि—एक बंगाली सज्जन हैं। अँगरेजी में खूब निपुण हैं।

हरिः—अस्त्येकः वङ्गदेशीयः सज्जनः। आङ्गलभाषायाम् अतीव निपुणो वर्त्तते।

राम—वहाँ तुम्हारा डेरा कहाँ है ?

रामः—तत्र तव निवासस्थानं कुत्र विद्यते ?

हरि—होस्टल में रहता हूँ।

हरिः—छात्रावासे निवसामि।

राम—वहाँ कितने विद्यार्थी रहते हैं।

रामः—तत्र कति विद्यार्थिनः निवसन्ति ?

हरि—लगभग सौ विद्यार्थी।

हरिः—प्रायः शतं विद्यार्थिनः।

राम—भोजन का प्रबन्ध कहाँ है ?

रामः—भोजनस्य प्रबन्धः क्व वर्त्तते ?

हरि—वहीं हमलोगों ने मेस कायम कर दिया है और एक ब्राह्मण को रसोइया रखा है।

हरिः—तत्रैव अस्माभिः महानसं स्थापितम्, एकः ब्राह्मणः सूदत्वेन नियुक्तश्च।

राम—महीने में कितना खर्च पड़ता है?

रामः—कियान् मासिको व्ययः भवति?

हरि—फीस लगाकर बीस रुपये।

हरिः—शुल्केन समेतानि विंशतिः रौप्यकानि।

राम—अच्छा, छुट्टी तो यहीं बिताओगे?

रामः—अस्तु, अवकाशं तु अत्रैव यापयिष्यसि?

हरि—इसका निश्चय नहीं है। किन्तु जबतक मेरे बाबूजी घर पर हैं तबतक यहीं रहूँगा।

हरिः—अस्य निश्चयो नास्ति। किन्तु यावत् मम पिता गृहे वर्त्तते तावत् अत्रैव स्थास्यामि।

(ख) अतिथि के साथ

आपका क्या नाम है?

किं नाम भवतः?

लोग मुझे 'रामेश्वर' कहते हैं।

जनाः मां 'रामेश्वर' इति कथयन्ति।

आप कहाँ रहते हैं?

कुत्र उष्यते भवताः।

जनकपुर से तीन कोस पर देवपुर नामका गाँव है। वहीं मेरा घर है।

जनकपुरात् त्रिषु क्रोशेषु देवपुरनामा ग्रामः। तत्रैव मम गृहं वर्त्तते।

आप कहाँ जायँगे? घर से किस कारण विदा हुए हैं?

भवान कुत्र गमिष्यति? केन हेतुना गृहात् प्रस्थितः?

मैं नौकरी की तलाश में पटना जा रहा हूँ। चलते २ आप के गाँव पहुँचा। रात भर यहीं टिक सकता हूँ ?

अहं जीविकायाः अन्वेषणे पाटलिपुत्रं गच्छामि। मार्गक्रमेण भवतः ग्रामे उपस्थितः। अपिरात्रिपर्यन्तम् अत्रैव स्थातुं शक्नोमि ?

अहो भाग्य ? अतिथि सर्वदा सत्कार करने योग्य होते हैं। मालूम पड़ता है आप ब्राह्मण हैं।

अहो भाग्यम् ? अतिथयः सर्वदा सत्कार्य्याः। 'भवान् ब्राह्मणः' इति अनुमीयते मया ।

हाँ, मैं मैथिली ब्राह्मण हूँ ।

आम् अहं मैथिलो ब्राह्मणः ।

प्रणाम करता हूँ। यहाँ बैठा जाय ।

प्रणमामि भवन्तम्। उपविश्यतामत्र।

आशीर्वाद। क्या मैं आप का परिचय जान सकता हूँ ?

आशिषः सन्तु। अपि ज्ञातुं शक्नोमि भवतः परिचयम् ?

मेरा नाम यदुवीर है। मैं क्षत्रिय हूँ। इसी गाँव में रहता हूँ। इस घर को अपना ही समझिये। मेरे लायक जो सेवा हो, उसकी आज्ञा मिले ।

यदुवीर इति मम नाम वर्त्तते । अहं क्षत्रियोऽस्मि । अस्मिन्नेव ग्रामे निवसामि। इदं स्वकीयम् एव गृहं बुध्यताम्। ममानुरूपा सेवा अनुज्ञेया।

आप के ऐसे सौजन्य से मैं मुग्ध हूँ। आप के लड़के भी हैं।

मुग्धोऽस्मि भवतः ईदृशेन सौजन्येन। अपि सन्ततयः भवतः

आप लोगों के आशीर्वाद से दो लड़के हैं। गोविन्द ! यहाँ आओ। पानी लाओ। दरवाजे पर अतिथि हैं ।

भवताम् आशीर्वादैः द्वौ पुत्रौस्तः। भो गोविन्द ! अत्रागच्छ जलमानय। द्वारि अतिथिः वर्त्तते।

क्षमा कीजिये। अधिक कष्ट करने की जरूरत नहीं। मैं थका हुआ हूँ। केवल सोना चाहता हूँ।

क्षम्यताम्। नाधिकं कष्टं करणीयम्। अहं श्रान्तोऽस्मि केवलं शयितुमिच्छामि।

नहीं, नहीं! भला यह भी हो सकता है! अभी भोजन करने का समय है। थोड़ा-सा अन्न जल ग्रहण कर मेरी अभिलाषा पूर्ण करें।

नहि, नहि, इदमपि कदाचित् भवतुमर्हति? इयं भोक्तुं वेला वर्त्तते। किञ्चित् अन्नजलं स्वीकृत्य ममाभिलाषां पूरयतु भवान्।

अच्छा, तो थोड़ा सा दूध ही पीलूँगा।

भवतु तर्हि किञ्चित् दुग्धमेव पास्यामि।

आप संकोच क्यों करते हैं? मैं तुरन्त ही सब प्रवन्ध किये देता हूँ। यहीं रसोई वना ली जाय।

भवता संकोचः किं क्रियते? अहं सत्यवरम् एव सर्वं प्रबन्धं करोमि। अत्रैव पाकः क्रियताम्।

रसोई में तो वहुत झंझट है। रात भी अधिक बीत गई है। करीव नौ वजते होंगे।

पाके तु महत् असौकर्य्यं वर्त्तते। रात्रिरपि अधिका सञ्जाता प्रायशः नववादनसमयः।

तव दही चिउड़ा ही भोजन कर लिया जाय।

तर्हि दधिचिपिटान्नमेव भोक्तव्यम्।

हाँ यह मेरे मन की बात है।

वाढम्। इदं मम मनोनुकूलं वर्त्तते।

तव तक पाँव धोया जाय। मैं सभी चीजें ले आता हूँ।

तावत् पादौ प्रक्षाल्येताम्। अहं सर्वाणि वस्तूनि आनयामि।

दूसरा पाठ

पत्र लेखन—(Letter-writing)

(क) पिता को

(हिन्दी)

पूज्य पिता जी के चरणकमलों में मेरा सविनय प्रणाम। मैं सकुशल हूँ। बहुत दिनों से आपका कुशल ज्ञात नहीं हुआ, इसलिये मन में चिंता होती है। आगामी सप्ताह में मेरी परीक्षा होगी, तब मैं घर आऊँगा। गोविन्द और वासुदेव यहीं रहेंगे।

आने से पहले मुझे इस महीने की फीस देनी है; अतएव दस रुपये की जरूरत है।

कृपाकर अपना और परिवार का कुशल शीघ्र सूचित करें।

विनीत—

जगदीश

(संस्कृत)

स्वस्ति श्रीपूज्यपितुः चरणकमलयोः मम सविनयाः प्रणामाः। अहं सकुशलोऽस्मि। चिरेण भवतः कुशलं न ज्ञातम् अतः चिन्तितं मम मनः।

आगामिनि सप्ताहे मम परीक्षा भविष्यति। तदा अहं गृहम् आगमिष्यामि। गोविन्दः वासुदेवश्च अत्रैव स्थास्यतः।

आगमनात् प्राक् मया अस्य मासस्य शुल्कं प्रदेयम्। अतएव दशरौप्यकानाम् आवश्यकता विद्यते।

कृपया स्वकीयं पारिवारिकञ्च कुशलं शीघ्रं सूचितव्यम्।

विनीतः—

जगदीशः।

(ख) पुत्र को

(हिन्दी)

आशीर्वाद ।

तुम्हारा पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुआ। मैं ज्वर से पीड़ित था, इसलिये चिट्ठी लिखने में देर हो गई। अब कुशल है।

तुम्हारी फीस के लिये दस रुपये भेज रहा हूँ। आशा है, तुम परीक्षा में सन्तोषप्रद उत्तर देकर सफलता प्राप्त करोगे।

अधिक क्या लिखूं ? परिवार के लोग अच्छी तरह हैं और तुम्हारी राह देख रहे हैं। परीक्षा समाप्त हो जाने पर तुरत घर चले आना। इति।

तुम्हारा शुभचिन्तक—

विश्वनाथ

(संस्कृत)

स्वस्ति शुभाशीर्वादाः सन्तु ।

तव पत्रं हस्तगतम्। वृत्तं ज्ञातम्। अहं ज्वरेण पीडितः आसम्, अतः पत्रलेखने विलम्बो जातः। इदानीं कुशलं वर्त्तते।

तव शुल्कार्थं दश रौप्यकानि प्रेषयामि। आशासे त्वं परीक्षायां सन्तोषप्रदानि उत्तराणि दत्त्वा सफलतां प्राप्स्यसि।

किं बहुना। परिवारस्य जनाः कुशलिनः सन्ति त्वां प्रतीक्षन्ते च। परीक्षायां समाप्तायां सत्वरं गृहमागच्छ। इति, शुभम्।

त्वदीयः शुभचिन्तकः

विश्वनाथः।

(ग) मित्र को

(हिन्दी)

प्रिय गोपाल,

स्कूल से चले जाने के बाद तुमने एक भी चिट्ठी नहीं लिखी। इसका क्या कारण है ? मैं अभी घर पर ही हूँ। परसों घर के लोगों के साथ बनारस जाने का इरादा है। वहाँ हमलोग एक हफ्ता तक रहेंगे। यदि तुम भी साथ चलते तो बड़ा आनन्द होता।

तुम्हारे माता-पिता तो अच्छी तरह हैं ? अपने स्वास्थ्य का हाल लिखना। घर पर रोज कसरत करते हो कि नहीं ? पत्र का उत्तर शीघ्र देना। इति।

तुम्हारा—

चन्द्रशेखर

(संस्कृत)

प्रिय गोपाल,

पाठशालायाः गमनस्यानन्तरं त्वमेकमपि पत्रं न दत्तवान्। अस्य को हेतुवर्त्तते। साम्प्रतमहं गृहमेव अधितिष्ठामि। परश्वः पारिवारिकैः जनैः सह काशीं गन्तुम् इच्छामि। तत्र वयं सप्ताहमेकं स्थास्यामः। यदि त्वमपि अस्माभिः सार्द्ध चलेः तर्हि महानानन्दो जायेत।

तव पितरौ तु कुशलिनौ वर्त्तेते ? स्वकीय स्वास्थ्य-समाचारः सूचितव्यः। गृहे प्रतिदिनं व्यायामं करोषि न वा ? पत्रोत्तरं शीघ्रं दातव्यम्। इति।

तवैव

चन्द्रशेखरः

(घ) अध्यापक को

(हिन्दी)

पूज्यवर गुरुजी के चरणकमलों में मेरा प्रणाम पहुँचे। आपकी दया से यहाँ कुशल है। आपने जिन-जिन पुस्तकों का निर्देश किया था, उन्हें मैं पढ़ गया हूँ। किन्तु संस्कृत की रचना मुझे बहुत कठिन मालूम होती है। वाक्य-रचना में जगह-जगह भूल हो जाती है। आप कृपाकर ऐसी कोई पुस्तक बतावें जो मुझे इस विषय में सहायता दे सके। व्याकरण के टेढ़े-मेढ़े नियमों को याद रखना बहुत कठिन जान पड़ता है। विशेष क्या लिखूँ। इति।

आपका आज्ञाकारी—

सत्यदेव

(संस्कृत)

स्वस्ति श्रीगुरुचरणसरोजेषु मम प्रणतयो लसन्तु। भवदनुकम्पयात्र कुशलं वर्त्तते। भवता यानि यानि पुस्तकानि निर्दिष्टानि, तानि अहम् अधीतवान्। किन्तु संस्कृत-रचना नितान्तं कठिनेति मयानुभूयते। वाक्यरचनायां स्थाने स्थाने अशुद्धिर्जायते। भवान् कृपया किञ्चिदेतादृशं पुस्तकं निर्दिशतु यदस्मिन्न् विषये मम सहायकं भवेत्। व्याकरणस्य दुर्बोधनियमानां स्मरणम् अत्यन्तं कठिनं ज्ञायते। किमधिकं विज्ञेषु ? इति।

वशंवदः

सत्यदेवः

(ङ) पुस्तक विक्रेता को

(हिन्दी)

महाशय,

कृपा करके अपने यहाँ की छपी हुई निम्नलिखित पुस्तकें अतिशीघ्र वी० पी० द्वारा भेज दें—

१. संस्कृत रचना चन्द्रोदय

२. प्रवेशिका संस्कृत रचना

३. संस्कृत व्याकरण चन्द्रिका

मुझे इन पुस्तकों की सख्त जरूरत है, इसलिये भेजने में देर नहीं करेंगे।

आपका

दामोदर शर्मा

रामेश्वरलता पाठशाला,

दरभंगा।

(संस्कृत)

महाशय,

कृपया स्वयन्त्रालये प्रकाशितानि निम्नलिखितानि पुस्तकानि शुल्कप्राप्येण रूपेण अतिशीघ्रं प्रेषितव्यानि—

१. संस्कृत-रचनाचन्द्रोदयः

२. प्रवेशिका संस्कृतरचना

३. संस्कृत व्याकरणचन्द्रिका

एतेषां पुस्तकानां महती आवश्यकता वर्त्तते, अतः प्रेषणे विलम्बो न कार्य्यः।

भवदीयः

दामोदरशर्मा

रामेश्वरलता पाठशाला

दरभंगा।

तीसरा पाठ

अनुच्छेद (Paragraphs)

१ वर्णनात्मक

(क)

हिन्दी

अभी सूर्यास्त हुआ है। हवा ठण्डी है। नीले आकाश में बादल नहीं है। मुलायम घास पर लेटी हुई गायें दीख रही हैं। पक्षी उड़कर अपने घोसलों को जा रहे हैं। अहा! तपोवन की भूमि रम्य है। कहीं मुनि लोग ईश्वर की उपासना कर रहे हैं। कहीं ऋषिकुमार वेद गाते हुए आ रहे हैं। देखो, दो विद्यार्थी समिधा (यज्ञ की लकड़ी) चुनकर लौटे आ रहे हैं। नदी में हरिण पानी पी रहे हैं। आश्चर्य! उसी घाट पर एक बाघ भी बैठा है। तपोवन के प्रभाव से दुष्टजीवों की भी हिंसा वृत्ति शान्त हो गई है।

अब अन्धकार हो रहा है। थोड़ी ही देर में चन्द्रमा और तारे

संस्कृत

इदानीमेव सूर्योऽस्तं गतः। शीतलो हि वायुः। नीले नभसि मेघो न विद्यते। कोमलतृणेषु शयानाधेनवः दृश्यन्ते। पक्षिणः उड्डीय स्वकीयान् नीडान् गच्छन्ति। अहो! रम्येयं तपोवनस्य भूमिः। क्वचित् मुनयः ईश्वरम् उपासते। क्वचित्ऋषि-कुमाराः वेदं गायन्तः आगच्छन्ति। पश्य, द्वौ विद्यार्थिनौ समिधं चित्वा प्रत्यागच्छतः। नद्यां हरिणाः जलं पिबन्ति। आश्चर्य्यम्। तस्मिन्नेव तटे एकःव्याघ्रोऽपि उपविष्टः! तपोवनस्य प्रभावात् दुष्टानामपि जीवानां हिंस्रावृत्तिः शान्ता जाता। इदानीम् अन्धकारः जायते। सत्वरमेव चन्द्रस्तराश्च उदे-

उदित होंगे और चारों ओर चाँदनी फैल जायगी।

आओ, तबतक हमलोग इस शिला पर बैठते हैं। घण्टी की ध्वनि सुन पड़ती है। शायद पूजा हो रही है। हम लोग किसी कुटी में रहकर रात बितावेंगे।

ष्यन्ति चतुर्दिशि च चन्द्रिका व्याप्ता भविष्यति।

आगम्यताम्। तावत् वयम् अस्याम् शिलायामुपविशामः। घण्टायाः ध्वनिः श्रूयते। प्रायः पूजा भवति। वयं कस्याञ्चित् कुट्याम् उषित्वा रात्रिं यापयिष्यामः।

(ख)

हिन्दी

हमलोगों का देश हिन्दुस्तान सचमुच ही मनोहर है। उत्तर दिशा में हिमालय पहाड़ है जिसकी चोटियाँ संसार में सबसे ऊँची हैं। पूरब में बंगाल की खाड़ी है। दक्षिण दिशा में महासागर है। पश्चिम में अरब समुद्र लहराता है।

यही देश एक समय सभी देशों का गुरु था। यहीं सभी विद्याओं का जन्म हुआ।

इस देश में बहुत से पवित्र तीर्थ स्थान हैं। गंगा आदि बहुत-सी निर्मल नदियाँ विराजमान हैं। अनेक स्वादिष्ट फल और अनाज उत्पन्न होते हैं। भूमि बड़ी उप-

संस्कृतः

मनोहरः खलु अस्माकं देशः 'भारतवर्षम्' उत्तरस्यां दिशि हिमालयः पर्वतः वर्त्तते, यस्य शृङ्गाणि संसारे सर्वेभ्यः उच्चतमानि सन्ति। पूर्वस्यां दिशि वङ्गोपसागरः विद्यते। दक्षिणस्यां दिशि महासागरः वर्त्तते। पश्चिमायां दिशि अरवसमुद्रः तरङ्गायते। अयमेव देशः एकदा सर्वेषां देशानां गुरुरासीत्। अत्रैव सर्वासां विद्यानां जन्म अभवत्। अस्मिन् देशे बहूनि पवित्राणि तीर्थस्थानानि वर्त्तन्ते। गङ्गादयः बह्वयः निर्मलाः नद्यः विराजन्ते। अनेकानि स्वादूनि फलानि शस्यानि च जायन्ते।

जाऊ हैं। वसन्त आदि छः ऋतुएँ होती हैं।

भारतवासी सज्जन और सात्त्विक होते हैं। ईश्वर में उनकी प्रबल भक्ति होती है। वे शरीर को नाशवान् और आत्मा को अमर समझते हैं : अतएव प्राणों का उत्सर्ग करके भी वे अपने धर्म की रक्षा करते हैं।

भूमिः अत्यु वरा वर्त्तते।वसन्तादयः षट् ऋतवः भवन्ति।

भारतवासिनः सज्जनाः सात्त्विकाश्च भवन्ति। तेषाम् ईश्वरे प्रबला भक्तिर्वर्त्तते। ते शरीरं नश्वरम् आत्मानञ्च अमरं मन्यन्ते। अतः प्राणानपि उत्सृज्य ते स्वकीयं धर्मं रक्षन्ति।

---

२. कथात्मक

(क)

हिन्दी

प्राचीन समय में मिथिला में जनक नामके राजा रहते थे। उनके सीता नाम की एक लड़की थी। वह अत्यन्त सुन्दरी और सुशीला थी। जनक ने यह प्रतिज्ञा की कि जो कोई मेरे धनुष को तोड़ देगा, उसी को सीता प्रदान करूँगा।

यह प्रतिज्ञा सुन कर बहुत-से राजा स्वयंवर सभा में आये। किन्तु किसी से भी धनुष नहीं टूटा।

संस्कृत

पुरा मिथिलायां जनकनामा राजा प्रतिवसतिस्म। तस्य सीतानाम्नी एका कन्या आसीत्। सा अतीव सुन्दरी सुशीला च आसीत्। जनकः इमां प्रतिज्ञां कृतवान् यत् 'यः कोऽपि ममः धनुः भङ्क्ष्यति, तस्मै एव सीतां प्रदास्यामि' इति।

इमां प्रतिज्ञां श्रुत्वा बहवः राजानः स्वयंवरसभायामागताः। किन्तु केनचिदपि धनुर्न भग्नम्।

अन्त में विश्वामित्र के साथ दशरथ के पुत्र रामचन्द्र सभा में उपस्थित हुये। गुरु की आज्ञा से उन्होंने धनुष तोड़ डाला। सभी दर्शक "वाह! वाह!" करने लगे।

सीता को व्याह कर रामचन्द्र अपनी नगरी अयोध्या में आये। संसार में जितनी पतिव्रता स्त्रियाँ हुई हैं इनमें सीता का स्थान सब से ऊँचा है। आज भी भारत के इतिहास में उनका नाम चिरस्मरणीय हो रहा है।

अन्तेच विश्वामित्रेण सह दशरथस्य पुत्रःरामचन्द्रःसभायाम् उपस्थितः। गुरोराज्ञया स धनुः बभञ्ज। सर्वे दर्शकाः 'साधु साधु', इति उक्तवन्तः।

सीतां परिणीय रामचन्द्रः स्वकीयां नगरीम् अयोध्याम् आगतवान्। संसारे यावन्त्यः पतिव्रताः स्त्रियः अभवन् तासां मध्ये सीतायाः पदम् उच्चतमं विद्यते। अद्यापि भारतस्य इतिहासे तस्याः नाम चिरस्मरणीयं वर्त्तते।

(ख)

हिन्दी

किसी नगर में एक सौदागर रहता था। उसके तीन लड़के थे। वे आपस में हमेशा झगड़ते रहते थे यह देखकर सौदागर का मन दुखी रहा करता था।

जब सौदागर बहुत बूढ़ा हो गया और उसके मरने का समय आया, तब उसने अपने तीनों

संस्कृत

कस्मिंश्चिन्नगरे एको वणिक् प्रतिवसतिस्म। तस्य त्रयः पुत्राः आसन्। ते सदा परस्परं विवदमानाः आसन्। एतत् दृष्ट्वा वणिजो मनसि चिन्ता वर्त्ततेस्म।

यदा वणिक् अतिवृद्धो जातः तस्य मृत्योः समयश्चायातः तदा स स्वकीयान्

लड़कों को बुलाया और कहा— "एक मोटी रस्सी ले आओ।" ऐसा होने पर उसने प्रत्येक लड़के से पूछा—"तुम इस रस्सी को तोड़ सकते हो ?"

सभी लड़कों ने बारी-बारी से रस्सी तोड़ने का प्रयत्न किया, किन्तु सभी चेष्टाएँ निष्फल हुईं।

तब सौदागर ने कहा— "अच्छा, अब इस रस्सी के तृणों को अलग अ... कर तोड़ो।"

लड़कों ने तुरत ही ऐसा कर दिया। तब उस सौदागर ने कहा "देखो, तृण सबसे छोटी चीज है, किन्तु सम्मिलित हो जाने पर वही एकदम दृढ़ बन जाता है। इसी तरह तुम लोग अलग अलग रहने पर शक्तिहीन रहोगे, परन्तु एक साथ मिल जाने पर बलवान् हो जाओगे।

त्रीन् पुत्रान् आहूय तान् आज्ञापयत्—"एकां स्थूलां रज्जुमानयत।"

एवं भूते सति सः एकैकं पुत्रमपृच्छत् "इमां रज्जुं भञ्जयितुं शक्नुथ ?"

सर्वे पुत्राः यथाक्रमं रज्जुं भङ्क्तुमयतन्त, किन्तु सर्वाः चेष्टाः निष्फलताः जाताः।

तदा वणिक् अकथयत्— "भवतु, इदानीमेतस्याःरज्ज्वाः तृणानि पृथक् पृथक् कृत्वा भञ्जयत।"

पुत्राः त्वरितदेव एवं कृतवन्तः। तदा स वणिक् अवदत्—'पश्यत। तृणं क्षुद्रतमं वस्तु, किन्तु सम्मिलिते सति तदेव दृढ़ं भवति। इत्थमेव यूयं पृथक् पृथक् भूत्वा शक्तिहीनाः वर्त्तिष्यध्वे, किन्तु एकत्र मिलित्वा बलवन्तः भविष्यथ।

———